सम्पादन परामर्श
डॉ. प्रभा पंत-09411196868
सम्पादक
आशा शैली -9456717150, 8958110859 7055336168,
सह सम्पादक/समन्वयक
चन्द्रभूषण तिवारी -9415593108/8707467102
सह सम्पादक/शोध प्रबंधक
डॉ. विजय पुरी-09816181836
सह-सम्पादक
विनय सागर जायसवाल -7520298865
मुख्य प्रबंधक
मंजु पाण्डे 'उदिता'-7017023365
बालोद्यान
पवन चौहान-09805402242
विधि-परामर्श
प्रदीप लोहनी-09012417688
प्रचार सचिव
डॉ. विपिन लता 9897732259
पुष्पा जोशी 'प्राकाम्या' 8267902090
धर्मेंद्र कुमार -8383863238

सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्ययवहार का पता-
-साहित्य सदन, इन्दिरानगर-2
पो.-लालकुआँ, जिला-नैनीताल
(उत्तराखण्ड) पिन-262402
मो.-09456717150, 7078394060, 7055336168,
Email-asha.shaili@gmail.com

मूल्य-एक प्रति 25/-,
वार्षिक 100/-,
आजीवन 1000/-,
संरक्षक सदस्य 5100/-

संरक्षक सदस्यः-

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र-09412992244, शिव बाबू मिश्र -09412750094, अर्श अमृतसरी-09716317725, डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव- 0921244436 9, प्रकाश चन्द्र लोशाली -9456114762, राजकुमार जैन 'राजन' 09828219919, केशव कुमार पटेल-9919352975, डॉ. विमला व्यास-9452780735, डॉ. शीला त्रिपाठी-9453257279, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव-9451023854, अरविंद कुमार यादव -9125628814, श्रीमती ममता पाण्डेय-9453770833, मौजी लाल पटेल-9936380977, ए.के. पवार-9810059715, डॉ. ए.जे. अब्राहम-9497815730, डॉ. श्रीमती उषा मिश्रा-9450610608, श्री चंदन प्रताप सिंह-7317559999, श्री सर्वेश सिंह शौनक-7007164024, श्री रूप चन्द शर्मा-9935353480, डॉ. मदन मोहन ओबेराय

परामर्शः-

डॉ. श्यामसिंह 'शशि'-09818202120,
डॉ. धनंजय सिंह-09810685549
डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक' -07417619828

विशेष सहयोगी

पंकज बत्रा (लालकुआँ) -9897142223, निर्मला सिंह बरेली, -9412821608 सत्यपाल सिंह 'सजग' (लालकुआँ) -09412329561, राधेश्याम यादव -80066722221, दर्शन 'बेज़ार' (आगरा) -9760190692, डॉ. राकेश चक्र (मुरादाबाद) -9456201857, सूरत भारती, (हि.प्र.) -09418272934 कृष्णचन्द्र महादेविया, (मगडी हि.प्र.) -09857083213 , डॉ. वेदप्रकाश प्रजापति 'अंकुर' (हल्द्वानी) -9412943042, स्नेहलता शर्मा (लखनऊ)-9450639976 सुषमा भण्डारी, (दिल्ली)-09810152263, निरुपमा अग्रवाल (बरेली) -9412463533

1.शैल-सूत्र में प्रकाशित रचनाओं के प्रति सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
2.लेखक अपने विचार प्रेषण के लिए स्वतन्त्र है।
3. शैल-सूत्र परिवार के सभी सदस्यों के पद अवैतनिक हैं।
4.प्रत्येक कानूनी विवाद का निपटारा पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय का विधि क्षेत्र होगा। शुल्क, खाता सं 024110100000073, कोड सं. IFSC; AUCB 0000025 अल्मोड़ा अर्बन बैंक, शाखा लालकुआँ अथवा भारतीय स्टेट बैंक शाखा तरुवाला, पाँवटा साहब (हि.प्र.) कोड सं. IFSC; SBIN 0000703 खाता सं 30116574461 में जमा करायें।

स्वामी, प्रकाशक, तथा मुद्रक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल) ने एच.जे. इंटरप्राइजेज़, खानचन्द मार्केट, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित कराया। सम्पादक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल-262402)

क्षेत्रीय सहयोगी

हिमाचल प्रदेश-

1. **Dr. L.C. Sharma, IIRD Complex, Bye-pass Road, shanan, Sanjauli, Shimla-6 (H. P.) mo. 09418014761** iirdsml@gmail.com

2. श्री कृष्ण चन्द्र महादेविया
गाँव महादेव, तह. सुन्दर नगर,
मण्डी (हि.प्र.) 175018

3. डॉ. विजय पुरी,
ग्राम पदरा, डा. हंगलोह, त. पालमपुर,
जि. कांगड़ा (हि. प्र.)

4-श्रीमती शिवा धरावेश,
20/7, दुर्गा कालोनी तरुवाला, पाँवटा साहिब,
जि. सिरमोर -173025 (हि.प्र.) 08894892999

5. रमेश कालिया,
ग्राम साथना, तह. फतहपुर, जिला कांगड़ा (हि.प्र.)
पिन176025, मो.8894670051

6. चन्द्रभूषण तिवारी
ग्राम टी.टी.अब्दलपुर, डाकघर हरिसेन गंज,
(मऊआईमा) प्रयागराज-212507
मो. 9415593108, 8707467102
cbtiwari04091966@gmail.com

7. दिनेश पाठक 'शशि'
28, सारंग विहार, रिफ़ाइनरी नगर, मथुरा
9412727361, ईमेल- drdinesh57@gmail.com

8. अंजना छलोत्रे 'सवि',
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन,
द्वितीय तल, भोपाल-39 (म.प्र.)
मो. 08461912125
anjana.savi@gmail.com

9. श्रीमती पूर्णिमा ढिल्लन
फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया,
गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222
मो. 7767943298

10. केरल
Dr. A. J. Abraham,
ANCHANIYIL A.K.G. Unichira road,
Changampuzha nagar, post- Kochi-33',
Kerala. 9497815730

11- Dr. Sumangala Mummigati
'Chinmay' 4th Cross, Shreepad Nagar,
Near Rani Chennamma Nagar,
Dharwad, Karnatak. 7619164139

विधा	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय	**डॉ. प्रभा पंत**	**04**
वैचारिकी	**चन्द्रभूषण तिवारी**	**06**
पकड़ सको तो पकड़ो मेरे लगे हवा के पर	**डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'**	**07**
बाल साहित्य की लेखन परम्परा	**पवन चौहान**	**11**
बाल कल्याण....... -डॉ. राष्ट्रबंधु (साक्षात्कार)	**आशीष शुक्ला**	**13**
बादल जी -डा प्रत्यूष गुलेरी/ **सच्चे बच्चे -डॉ. संगीता गांधी , रेनकोट-कल्याणी झा**		**17**
बाल साहित्य और बच्चे	**राजकुमार जैन राजन**	**18**
कठिन सवाल	**लोकेष्णा मिश्रा**	**19**
बच्चों में डर की समस्या	**चन्द्रप्रभा सूद**	**20**
पीछे वाली सीट-	**विद्या शर्मा**	**21**
राजस्थान में बाल साहित्य के बढ़ते कदम	**गोविंद भारद्वाज**	**22**
बाल गीत :मेरे साथ कई लफ़ड़े हैं -सौरभ पाण्डेय, झूम-झूमकर मच्छर आते -डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'		**23**
शहतूत का पेड़	**अनिता तोमर 'अनुपमा'**	**24**
निराली दीवाली -अंजू खरबंदा, **पूँजी -**	**-कुसुम पारीक**	**26**
वो मुझसे बोलेगी ?	**डा.कुसुम जोशी**	**27**
सच्ची दोस्ती	**मृणाल आशुतोष**	**28**
नया इतिहास बनायेंगे	**गिरिजा शंकर त्रिवेदी**	**29**
घर में जंगल सजाऊँगा	**नवीन कुमार जैन-नवीन कुमार जैन**	**29**
मोबाइल अति प्यारा	**डॉ. राकेश चक्र**	**30**
उल्टा-पुल्टा	**डॉ. वन्दना गुप्ता**	**30**
बंटू और पेड़	**दिव्या राकेश शर्मा**	**31**
बच्चा और सूरजमुखी का पौधा	**नमिता**	**32**
सुलह	**अर्विना**	**34**
कोलकाता से अण्डमान तक (धारावाहिक बाल उपन्यास)	**आशा शैली**	**35**
जादू	**तनु श्रीवास्तव**	**38**
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवनी साहित्य में	डॉ. रंजना देवी	39
ग़ज़लें के. पी. अनमोल, मो. यूनुस मलिक नखवी, डॉ. सीमा विजयवर्गीय,		44
मोनिका शर्मा सारथी, अंजना छलोत्रे 'सवि', कीर्ति 'रतन'।		45
तुम सदानीरा बनीं	डॉ. साधना मिश्रा	46
दर्पण	**सरिता पन्थी**	**46**
पति-पत्नी और वे	**सुभाष चंदर**	**47**
सम्यक विकास के आयाम उजागर करती पुस्तक.....	**सुरेंद्र शर्मा**	**49**
रोचक, ज्ञानप्रद जानकारियों.............	**सविता चड्ढा**	**50**
गीत गायें-ज्ञान पायें	**डॉ. चक्रधर नलिन**	**52**
पूज्य पिता जी	**सत्यपाल सिंह 'सजग'**	**52**

बाल्यकाल में व्यक्ति को कल्पना के पंख लगाकर उन्मुक्त गगन में उड़ने देना चाहिये, ताकि वह अपनी कल्पना को साकार करने के लिए सतत प्रयत्नशील बना रहे।

बालवृन्द, बालसाहित्य और हम

मानवीय गुणों की सर्जना करके, व्यक्ति और समाज को गढ़ने तथा उसे दिशा प्रदान करने में रचनाकार की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। नि:संदेह आज भी अनेक रचनाकार अपनी लेखनी का उपयोग पूर्ववत् ही करने में संलग्न हैं, किन्तु अनेक रचनाकार ऐसे भी हैं, जिनमें चारणयुगीन और मध्ययुगीन रचनाकारों की छवि प्रतिबिम्बित होती प्रतीत होती है। दुर्भाग्यवश वर्तमान में अधिकांश बालसाहित्यकारों की स्थिति भी तत्कालीन रचयिताओं की-सी होती जा रही है। ऐसे आत्ममुग्ध लोग बालसाहित्य के महत्त्व को समझे बिना तथा बालमन की गहनता में प्रवेश किये बिना ही सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में सम्मिलत होने के लिए, पुस्तकें प्रकाशित कराने में संलग्न हैं। यदि हम मुँहदेखी प्रशंसा और पीठ-पीछे निंदा करने की प्रवृति त्यागकर, परस्पर विचार-विमर्श करते हुए एक-दूसरे को दायित्त्वबोध करा सकें तो निश्चित ही सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देगा।

बाल्यकालीन परिवेश का बालमन पर गहन प्रभाव पड़ता है। बाल्यकाल में व्यक्ति अपने परिवारजनों अथवा अपने परिवेश से संबद्ध लोगों को जैसा करते और कहते हुए देखता-सुनता है, स्वभावत: अनजाने ही उसका अनुकरण करने लगता है। विश्व में ऐसे अगणित महान् एवं निंदनीय व्यक्तियों के उदाहरण विद्यमान हैं, जिनका बाल्यकालीन परिवेश एवं परिस्थितियाँ उनके व्यक्तित्त्व निर्माण में सहायक बनीं, अथवा उनके जीवन को दिशा प्रदान करने में परिवारजनों, शिक्षकों, मित्रों, आदि ने सकारात्मक/नकारात्मक भूमिका निभाई।

यदि हम स्वयं, अपने जीवन का अध्ययन करें तो अपने गुण-अवगुण, कार्यकौशलादि के निर्माणकारकों को स्पष्टत: देख और समझ पाएँगे, अर्थात् आत्म-साक्षात्कार द्वारा व्यक्तित्त्व-निर्माण की प्रक्रिया को सहज ही समझा जा सकता है। उदाहरणार्थ, इस अंक में प्रकाशित डॉ. कृष्ण चन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबन्धु' जी का साक्षात्कार पढ़कर भी उनके बाल्यकालीन परिवेश के माध्यम से बाल-व्यक्तित्त्व निर्माण की इस प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

एक संपादक का दायित्त्व जहाँ एक ओर चिंतकों और मनीषियों की ऊर्जा से समाज को ऊर्जावान बनाना तथा समाज को दिशाहीन होने से बचाने के लिए, समाज को समाज के गौरवशाली अतीत एवं भूतकालीन भूलों से परिचित कराना होता है, वहीं दूसरी ओर पाठकों को मनोरंजक, उपयोगी एवं महत्वपूर्ण विषयसामग्री उपलब्ध कराना भी होता है। एक संपादक का कर्त्तव्य है कि वह किसी रचना में भाषा एवं व्याकरण संबंधी अथवा विषयवस्तु आदि संबंधी दोष देखकर, उसे अनदेखा न करें अर्थात् यदि उसे सुधार करने की आवश्यकता अनुभव हो तो वह अपनी आलोचना की चिंता एवं भयमुक्त होकर, नि:संकोच अपने अधिकार का सदुपयोग करे।

मित्रों! स्वयं के प्रति आपके स्नेहसिक्त विश्वास को अनुभव करके, मैं भी अपने इस अधिकार का उपयोग करती रही हूँ और इस अंक में भी किया है। यद्यपि इसके लिए मुझे कुछ मित्रों की रचना में कतिपय संशोधन एवं काट-छाँट भी करनी पड़ी, किन्तु मैंने किसी भी रचनाकार की मूल संवेदना को नष्ट-भ्रष्ट करने की अनाधिकार चेष्टा कदापि

नहीं की है। मुझे विश्वास है, यह वर्ष हमारे परस्पर स्नेह एवं विश्वास को और भी अधिक प्रगाढ़ता प्रदान करेगा तथा हम एक-दूसरे की उन्नति में सहयोगी एवं सहायक बनेंगे।

शैलसूत्र का प्रयास रहता है कि हम अपने पाठकों को हिंदी साहित्य की पारम्परिक विधाओं, कहानी और कविता के साथ ही स्मारक साहित्य की विविध विधाओं से भी परिचित कराते रहें। स्मारक साहित्य की विशेषता है, इसमें जहाँ एक ओर स्थान, घटना, तत्कालीन समाज, मानवमनोविज्ञान तथा व्यक्ति विशेष की वास्तविक छवि उभरकर आती है, वहीं दूसरी ओर यह पाठक को अनेक अज्ञात पक्षों से भी परिचित कराता है। हमें विश्वास है इस अंक में सम्मिलित संस्मरण और साक्षात्कार आपका स्वस्थ्य मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन करने के साथ ही आपको काल्पनिकलोक से यथार्थजगत पर लेखनी चलाने के लिए भी प्रेरित करेंगे।

प्रस्तुत अंक में प्रतिष्ठत बाल-काव्यकार आदरणीय कृष्ण 'शलभ' की स्मृतियों एवं उनकी रचनाओं के साथ ही बालसाहित्य की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित तथा बालसाहित्य की अलख जगाने के लिए, आजीवन यात्राएँ करने वाले श्रद्धेय डॉ.'राष्ट्रबंधु' जी का साक्षात्कार भी प्रस्तुत किया जा रहा है। इस आशा के साथ कि आप अपने नगर/प्रांत के लोकप्रिय बालसाहित्यकार अथवा अपने परिचित/अपने प्रिय बालसाहित्यकार का साक्षात्कार लें, उन पर संस्मरण लिखें अथवा लिखने के लिए औरों को प्रेरित करें और लिखकर मुझे भेजें, ताकि मैं आपके अनुभव-अनुभूति, सोच-दृष्टिकोण तथा मनोभावों को भी अपनी पुस्तक में सम्मिलित कर सकूँ। मेरा मुख्य उद्देश्य बालसाहित्य के लिए समर्पित बालसाहित्कारों को चिह्नित करके, उन्हें वह सम्मान प्रदान करना/कराना है, जिसके वह अधिकारी हैं। विस्तृत जानकारी के लिए आप मुझसे 9411196868 पर संपर्क कर सकते हैं।

अंतत: मैं विगतवर्ष की मधुरिम स्मृतियों को हृदय में संजोकर तथा 2020 का स्वागत करते हुए, शैलसूत्र की यात्रा को गतिमान एवं चिरस्मरणीय बनाने वाले, अपने साहित्यसेवी मित्रों एवं सभी पाठकों को मैं एक बार पुन: साधुवाद देते हुए नमन करती हूँ। मुझे पूर्ववत् ही विश्वास है कि इस वर्ष भी हम 2 जमा 2 बराबर 4 नहीं, बल्कि 22 बनकर, व्यक्ति, समाज और राष्ट्रविकास के साथ-साथ मानवमूल्यों को विकसित करने में भी सहयोगी बनेंगे। ''मानवता करती आवाहन/आत्मचिन्तन, मनन-मंथन करें/क्षुधा-तृषा, व्यथा-पीड़ा मिटाकर/चीत्कार-आर्त्तनाद हरें/धरती के कण-कण में हम/चलो, मिलजुलकर आह्लाद भरें/जाति-धर्म का भेद मिटाकर/आओ! निश्चयकर नव-निर्माण करें।''

आपकी मित्र

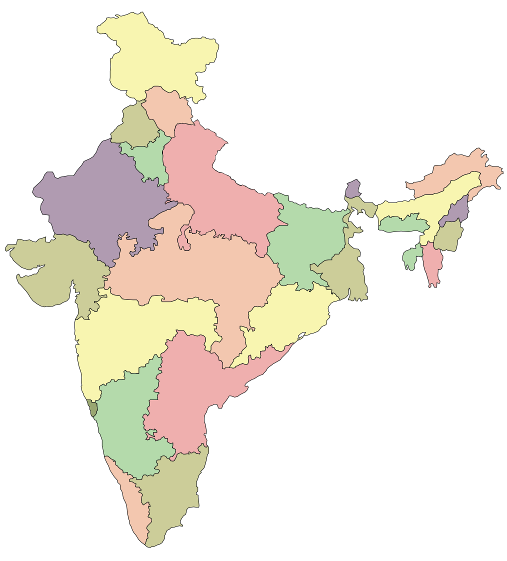

डॉ. प्रभा पन्त
प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग
एम.बी.रा.स्ना.महाविद्यालय, हल्द्वानी
Dr.prabhapant@gmail.com

सावधानः मोबाइल टैक्नॉलॉजी :दोधारी तलवार

पिछले दिनों एक खबर आई कि मेरे मित्र के 14 वर्षीय इकलौते और होनहार पुत्र ने पहले तो छत पर चलते हुए सैल्फी ली, फिर छत पर से छलांग लगा दी। बच्चे की मौके पर ही मृत्यु हो गई और खानदान का दीपक बुझ गया। दुःख यह जानकर और अधिक बढ़ गया कि बच्चे ने ऑन-लाइन ब्लू-व्हेल गेम के वशीभूत ऐसा किया था। यह गेम पिछले दिनों किशोरों में बहुत लोकप्रिय रहा है और इस के बारे में आज सारा विश्व जानता है। ऐसी कई कम्पनियाँ हैं जो ऑन-लाइन गेम बनाती रहती हैं और आज के बच्चे इनमें उलझे रहते हैं।

अभिभावक यह समझते हैं कि मोबाइल बच्चों को बहलाने का आसान तरीका है। बजाय दादा-दादी के सुपुर्द करने के बच्चे के हाथ में मोबाइल पकड़ा दिया जाता है और बहुत जल्दी उन्हें मोबाइल की लत लग जाती है। बच्चे मोबाइल में इतने डूब जाते हैं कि उन्हें आस-पास की सुध ही नहीं रहती। इससे बच्चे की आँखों पर तो बुरा असर पड़ता ही है, साथ ही उसके स्नायु तंत्र पर भी प्रभाव पड़ता है। इससे बहें अपने बच्चों को हर हाल में बचाना है।

पिछले वर्ष सामने आए एक मामले में बच्चे की मोबाइल की लत के कारण उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। घर से बाहर न निकलने के कारण उसका वज़न 10 किलो बढ़ गया और बच्चा बेहद आक्रामक हो गया था। डॉक्टर ने उसे मोबाइल से कत्तई दूर रखने के निर्देश दिये। बच्चे को सामान्य होने में तीन महीने लग गए। ऐसे बहुत से मामले आज सामने आ रहे हैं, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इंटरनेट की प्रसिद्ध कम्पनी 'टेन सेंट' ने किंग ऑफ ग्लोरी जैसे कार्यक्रम के लिए समय निधारित कर दिया है। इसे बारह वर्ष से कम आयु के बच्चे मात्र एक घंटा और बड़ी आयु के बच्चे दो घंटे खेल पाते हैं। मोबाइल और इंटरनेट ने बच्चों का बचपन और भारतीय संस्कार सब कुछ छीन लिया है। बच्चे तो बच्चे, बड़े भी आज मोबाइल के इस कदर अभ्यस्त हो गए हैं कि सारी दुनिया बस एक कमरे के किसी कोने में सिमट कर रह गई है। आज टैक्नॉलॉजी की ताकत इतनी बढ़ गई है कि हम इसके अलावा कुछ सोच ही नहीं सकते। मोबाइल यदि वरदान है तो श्राप भी है, यानि हमारे सामने एक दोधारी तलवार है। जिससे हम अपनी रक्षा भी करते हैं और हमारे लिए घातक भी है।

आज के समय में हमारा काम बिना लैपटॉप और मोबाइल के नहीं चल सकता। व्यस्क और समझदार स्त्री-पुरुष जहाँ इन साधनों का उपयोग एक सीमा के भीतर करते हैं, वहीं छोटे बच्चे इसके अनियन्त्रित उपयोग के घातक परिणामों के प्रति सचेत नहीं रह सकते। परन्तु बच्चों को इसके दुष्परिणाम से बचाने के लिए हमारा दायित्व और भी बढ़ जाता है। हमें हर हाल में सतर्क और जागरूक रहना होगा जिससे हमारे बच्चे मोबाइल और नेटवर्क टैक्नॉलॉजी को सही दिशा में प्रयोग करके दुष्परिणामों से बच सकें।

चन्द्र भूषण तिवारी

''यदि बच्चों को कुछ देना चाहते हो तो उन्हें सकारात्मक परिवेश दो, ताकि उनकी सोच सकारात्मक दिशा में विकसित हो सके।''

पकड़ सको तो पकड़ो मेरे लगे हवा के पर –डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

दिखा अँगूठा, बोला मुन्ना टिली लिली झर।
पकड़ सको तो पकड़ो, मेरे लगे हवा के पर।

कृष्ण शलभ जी की यह बेजोड़ कविता आज मुझे चिढ़ाती सी लग रही है। हवा के पंख लगाकर वे उड़ गए। हमारी पकड़ से बाहर बहुत दूर चले गए। बहुत ही दूर..., जहाँ से वे क्या, कोई भी नहीं लौटता।

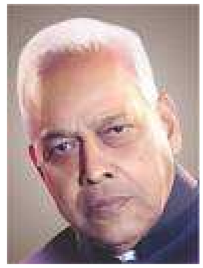

अभी ज्यादा दिन तो नहीं हुए। कल ही की बात लगती है। हम लोग साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की ओर से बाल साहित्य कार्यशाला (21-22 जून, 2017) में भाग लेने राजसमन्द गए थे। दिल्ली से सभी के टिकिट एक साथ थे। वे सहारनपुर से मेरे लिए खाना लेकर आए थे। वापसी का टिकिट भी साथ था लेकिन गुर्जर आंदोलन के चलते हमारी ट्रेन कैंसिल हो गयी। एक ही कार से हम लोग स्टेशन की ओर जा रहे थे। आदतन मैंने ट्रेन चेक की तो पता चला कि कैंसिल। उनसे सटकर ही तो बैठा था। साथ में उनकी पत्नी हेम जी भी थीं। बाल साहित्य के ऐसे बहुत कम आयोजन मुझे याद आते हैं, जिनमें वे अकेले गए हों। यह जोड़ी अटूट थी जो टूट गई। हम लोग उनके बिछोह को दिल से महसूस रहे हैं तो पत्नी के कलेजे पर क्या बीत रही होगी, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है।

जब उनसे बीच राह में विदा ली थी तो सपने में भी न सोचा था कि यह हमारी अंतिम भेंट है। यों राजसमन्द में उनके साथ घूमते फिरते जाने कब उनके मुख से निकल गया था कि जिंदगी का क्या भरोसा।

मैंने बेहिचक कहा था नहीं, अभी तो आप को 1000 शिशुगीतों का काम पूरा करना है और उनके चेहरे पर चमक आ गयी थी। बड़ी तन्मयता से वे इस काम में लगे थे। ठीक वैसे ही, जैसे बचपन एक समंदर ग्रन्थ का भागीरथी प्रयत्न उन्होंने किया था। भगीरथ जी पूर्वजों के उद्धार हेतु गंगा उतारकर लाए थे और शलभ जी तो जैसे बाल साहित्य के उद्धार हेतु सागर ही उतार लाए। सच, उनके इस बड़े काम के बाद छाती चौड़ी हो गयी थी। हम गर्व से इस ग्रन्थ का उल्लेख किया करते थे।

जो कहते थे कि बाल साहित्य में गम्भीर काम देखने को नहीं मिलता, उन्हें निस्संकोच परामर्श देते थे कि बचपन एक समंदर देखिए, सब पता चल जाएगा। लोग हास्यास्पद डिग्रियों के बल पर खुद को डॉक्टर लिखने में बड़ा गर्व महसूस करते हैं। इस ग्रन्थ में शलभ जी की भूमिका देखकर लगता है कि डॉक्टरेट की उपाधि के असली हकदार तो ये लोग हैं। ...तो ऐसी ही तन्मयता से ओतप्रोत वे लगे थे। हजार शिशुगीतों का संकलन करने के लिए वे कितना दौड़े, कितना भागे। शायद ही इसका सहज अनुमान किया जा सके। कितनी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ उन्होंने एकत्र कीं। एक बार डॉ. आर. पी. सारस्वत की पुस्तक विमोचन के लिए मैं सहारनपुर गया था। गया क्या था, उन्होंने ही बुला लिया था। बिलकुल आदेश के स्वर में वे मेरे घर पर पत्नी से भी कह गए थे कि समीक्षा तुम्हें भी आना है। फिर हम सब साथ साथ शाकुम्भरी देवी के दर्शन को चलेंगे और फिर ऐसा ही हुआ। पत्नी और बेटी सृष्टि के साथ मैं गया। एक दिन पूरा उनके घर बिताया। बच्चे तो उनके परिवार के साथ मस्त हो गए और मैं बेड पर बैठा उनके साथ इसी पाण्डुलिपि पर चर्चा करता रहा। मैं उनका श्रम देख चकित था। कहीं न कहीं शर्म भी महसूस कर रहा था। हजार शिशुगीतों की तैयार हो रही पाण्डुलिपि का अधिकांश उन्होंने स्वयं तैयार किया था। छोटे-छोटे मोती जैसे अक्षर चिढ़ा रहे थे। इसे कहते हैं काम।

मैं तो प्रतिदिन की अपनी यात्राओं की थकन में कुछ नहीं कर पाता। कितनी बार उन्होंने मुझे कहा कि शिशुगीत भेजो। अपने भी और जिन्हें तुम श्रेष्ठ समझते हो वे भी। कितने आग्रहों के बाद मैं उन्हें कुछ भेज पाया था और वे कि सैकड़ों रचनाओं को खोजकर खुद हाथ से लिखने का मशक्कत भरा काम कितनी सहजता से निबटाने में लगे थे।

मैंने कहा ''दादा, ये काम आप ही कर सकते थे। कुछ साहित्यकार हैं जिनके पास सामर्थ्य है लेकिन समय नहीं। कुछ हैं जिनके पास समय है लेकिन सामर्थ्य नहीं। आप ऐसे बिरले हैं कि समय और सामर्थ्य दोनों के ही स्वामी हो।''

वे हँस भर दिए थे।

तो यह बड़ा काम उन्होंने कर दिखाया। उन्होंने फोन

पर बताया था कि इसकी पांडुलिपि प्रकाश मनु जी की परामर्श के लिए भेज रहा हूँ। वे देख लें और समय दें तो फरीदाबाद जाऊँ। दुर्भाग्य कि ऐसा हो न सका। उनके निधन की सूचना मनु जी को दी तो वे कुछ पल के लिए निशब्द रह गए थे।

नियति को यही स्वीकार था। पर जाने क्यों आज भी मन उनका जाना स्वीकार नहीं कर रहा। बार बार लगता है कि अभी उनका रहना बहुत जरूरी था। ऐसे लोग हैं ही कितने? जिनके दिलों में बाल साहित्य धड़कन बन धड़कता है।

वे अकेले नहीं गए, बहुतेरे सपने साथ चले गए।

मेरा उनसे पुराना नाता था। 1995 में पहली बार मिले थे। उनके मुख से टिली लिली झर गीत क्या सुना, उनका दीवाना हो गया था। इस कदर कि एक आलेख में ही मैंने लिखा था कि यदि हिंदी के दस अलमस्ती में गाए जानेवाले बालगीतों का चयन मुझे करना हो तो उनमें से एक शलभ जी का गीत टिली लिली झर होगा। यह गीत नन्दन में छपा था।

इसकी भी गजब कहानी है। तत्कालीन सम्पादक जयप्रकाश भारती ने इसे औपबंधिक स्वीकृति दी थी। लिखा था कि मुखड़ा बहुत सुंदर है लेकिन आगे के बंद और तराशिए। फिर तीन बार की कोशिश में यह मुकम्मल गीत बना। बार बार सोचता हूँ कि ऐसे सम्पादक और कवि भला कितने हैं जो एक सम्पूर्ण रचना को तैयार करने के लिए इतना यत्न करें।

तो जिस तरह आँख बंद कर वे इसे गाते थे और अनूठे अंदाज में कहते कि वो देखो वो चिड़ी चिड़े के ले गयी कान कतर। तो कभी न गानेवाले मुझ जैसे बेसुरे के कंठ से भी सुर फूट पड़ते थे।

कभी ऐसा हुआ नहीं कि वे मिले हों और कविता पाठ के वक्त मैंने उनसे इस गजब गीत की फरमाइश न की हो। वे शाहजहांपुर आए थे, प्रभा बाल साहित्य सम्मान समारोह की अध्यक्षता के लिए संयोजक अजय गुप्त ने उन्हें बुलाया था। सबने खूब उन्हें सुना था। कन्नड़ मूल के जिलाधिकारी विजय किरन आनंद भी देर तक बैठे रहे थे। जब उन्होंने कहा कि अंतिम रचना पढ़ रहा हूँ तो मैं तपाक से खड़ा हो गया, न दादा। टिली लिली के बिना तो काव्य पाठ पूरा न होगा। राजसमन्द में आखिरी बार उनके मुख से यह गीत सुना। अंतिम बार यह गीत सुन रहा हूँ, मैंने न सोचा था।

खुटार में 1996 में मैंने बाल साहित्य प्रसार संस्थान की ओर से बाल साहित्यकार सम्मेलन किया था। वे आए तो अतिथि के रूप में थे लेकिन भूमिका संयोजक की निभाई। डायस से लेकर माइक तक सब कुछ व्यवस्थित कराया। वे एक कुशल आयोजक थे। जिन्होंने समन्वय, सहारनपुर के आयोजन देखे हों, वे मेरी बात से सहज सहमत होंगे।

इलाहाबाद, इंदौर, दिल्ली, कोलकाता, मसूरी, भीलवाड़ा : न जाने कितनी यात्राएँ मैंने उनके साथ कीं। बाल साहित्य के विमर्श में मेरी उनसे खूब छनती थी। भीमताल में हिंदी बाल कहानी पर मेरा व्याख्यान था। बाद में बोले, एक बात कहूँ नागेश? तुम बख्शते किसी को भी नहीं और इससे पहले कि मैं कुछ कहता, खिलखिलाकर हँस पड़े थे।

फोन पर जब भी उनसे बात होती थी तो लम्बी बात होती थी। कई बार जब उनका फोन न लगता तो साधिकार भाव से मैं उनकी पत्नी को फोन मिला देता। वे कबहुँक अंब अवसर पाइ, मेरी सुधि ध्याइबो, कछु करुण कथा चलाइ की तर्ज पर मेरी बात करा ही देती थीं।

शलभ जी से अक्सर मैं एक चुटकी लेता था और वे मुस्कुरा उठते थे। मैं पूछता कि बताओ दादा, आपके ऊपर जुलम किसने किया?

शुरू में तो दो चार बार उन्होंने सहसा चौंक कर पूछा कि कैसा जुलम? मगर बाद में यह प्रसंग हम लोगों के आनन्द लेने का हेतु बन गया।

बात कोलकाता की है। शायद 2002 की। मनीषिका के बाल साहित्यकार सम्मेलन के बाद हम लोग गंगासागर से लौटे थे। वापसी की ट्रेन एक ही थी। हावड़ा पहुँचे तो कोच देखने के लिए अपने-अपने टिकट निकाले। मगर उनका टिकट तो गुम।

प्लेटफार्म पर बैग खोला फिर अटैची। सारा सामान बिखेर दिया। मगर टिकट की समस्या विकट। बेचारे बार-बार माथा पकड़ते। पत्नी पर झुंझलाते-'हेम, आज तुमने बड़ा जुलम किया।'

मैंने कहा, ''दादा। अब ट्रेन का टाइम हो रहा है। सारा सामान समेटिए।''

''क्या होगा नागेश?''

मैंने कहा, ''दादा अब जो होगा। ट्रेन में होगा। फ़िलहाल टेंशन छोड़िए।''

अचानक मैंने उनकी डायरी खंगाली और वाह! टिकट

महाशय तो वहीं छुपे बैठे थे। दोनों को जो सुख मिला, उसकी व्याख्या कठिन है।

शलभ जी बड़े कद के बालकवि थे। बाल कवि क्या, बालगीतकार थे। बाल कविता और बालगीत में अंतर है। वे बखूबी समझते थे। उनके बालगीत बाल साहित्य की अनमोल थाती है। पिछले दिनों उनका एक बहुत ही प्यारा बाल गीत बाल वाटिका में छपा था, -खिड़की खुली मकान की। खिड़की खुलने के बाद के अलबेले दृश्यों को एक बच्चे के नटखट अंदाज से देखते हुए उनकी यह रचना स्वयं में अद्‌भुत और अपूर्व है जो घिसे पिटे विषयों पर लिखने वाले छपास के रोगियों के लिए एक आमंत्रण जैसी है। लिखो, लिखो ऐसे बहुतेरे विषय आपके इर्द गिर्द बिखरे पड़े हैं। लिखो, इन पर लिखो।

शलभ जी का सृजन ही उनका सबसे बड़ा पुरस्कार सम्मान था। यों शलभ जी को बहुतेरे पुरस्कार सम्मान मिले। स्तुत्य समर्पण के लिए बाल वाटिका ने भी शलभ जी का सारस्वत सम्मान किया था। वे इस सम्मान से अभिभूत थे। उन्होंने प्रशस्तिपत्र की प्रशंसा की तो डॉ. भैरूंलाल गर्ग ने विनम्रतापूर्वक बता दिया कि इसे तो डॉ. नागेश ने लिखा है।

वे मुझे भी धन्यवाद कहने से न चूके, यह उनका बड़प्पन था। आज उस प्रशस्ति पत्र का सहज स्मरण स्वाभाविक है-

बाल साहित्य सृजन और संपादन के क्षेत्र में प्रण-प्राण से सर्मिपत कृष्ण शलभ हिन्दी के सर्वाधिक सक्रिय बाल साहित्यकारों में से हैं। उन्होंने बाल साहित्य की अलख जगाई है और एक तरह से हिन्दी बाल साहित्य का परचम राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्सरित किया है। बाल साहित्य के प्रति उनके मन में चिंतन भी है और चिंता भी। यही कारण है कि अनवरत सृजनरत रहते हुए उन्होंने जहाँ स्वयं बाल कविता के क्षेत्र में उच्च कोटि का प्रचुर लेखन किया, वहीं इसकी सर्जना की दिशा में भी निरंतर परिवेश का निर्माण करने की दिशा में तन्मयतापूर्वक सजग रहे हैं। 'ओ मेरी मछली, टिली लिली झर, सूरज को चिट्ठी, 51 बाल कविताएँ आदि कृतियाँ बाल साहित्य के क्षेत्र में उनके अनवरत सृजन को रेखांकित करती हैं।

बाल साहित्य में शोध कार्य के प्रति उनके मन में सहज अनुराग है वे स्वभाव से ही खोजी और शोधी प्रवृत्ति के रहे हैं। यही कारण है कि उनके द्वारा बचपन एक समंदर जैसे मानक और भारतीय भाषाओं में इस प्रकार के एक मात्र ग्रन्थ का संपादन प्रकाशन संभव हो सका। इस वृहदाकार ग्रन्थ से बाल साहित्य के प्रति समाज में विमर्श और सम्मान को प्रोत्साहन मिला है और इसने बाल साहित्य में शोध और समालोचना को भी आधार भूमि प्रदान की है।

बचपन एक समंदर जैसा चमत्कारी कार्य करने वाले शलभ जी की रचनाओं में भी समंदर जैसी गहराई है और फिर उनकी रचना यदि समंदर पर हो तो कहने ही क्या, बाल सुलभ जिज्ञासाएँ देखते ही बनती हैं। मोती की खेती की मौलिक कल्पना और किसी चिड़ियाघर या सर्कस के तम्बू का आभास तो वास्तव मे कृष्ण शलभ की ही तूलिका से सम्भव था-

शलभ जी के अनूठे सृजन में कथाओं जैसा आनन्द भी है- मेढक बोला- 'टर्रम-टूँ, जरा इधर तो आना तू, खाज लगी मेरे सिर में, जरा देखना कितनी जूँ!' कहा मेढकी ने इतरा- 'चश्मा जाने कहाँ धरा, बिन चश्मे के क्या देखूँ , कहाँ कहाँ है कितनी जूँ!

बहुत सी उनकी रचनाएँ बतकही शैली में है। भोला संवाद और चुटीली जिज्ञासाएँ।

सूरज पर उनके बालगीत की श्रेष्ठता का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि इसे एक छद्म कविराज ने चुराकर अपने नाम से एक प्रतिष्ठित पत्रिका में छपवा लिया था। बाद में पता चला कि वे कविराज भी बड़ी उच्च श्रेणी के थे। चौर्य कला में पारंगत। इससे पूर्व वे बालस्वरूप राही, जगदीश चंद्र शर्मा और सुरेंद्र विक्रम जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों की बाल कविताएँ अपने नाम से प्रकाशित करा चुके थे। शलभ जी ने उन कविराज को ऐसा नोटिस दिया कि फिर किसी अन्य कवि को उन्होंने वैसा सौभाग्य न दिया।

कृष्ण शलभ जी ने बहुत पहले चिड़िया पर एक संकलन सम्पादित किया था। यह एक छोटी सी पुस्तक थी। पर थी गागर में सागर सी। चिड़िया पर बहुत ही सुंदर कविताएँ उसमें थीं।

शलभ जी का भी एक बाल गीत चिड़िया पर है, जो मुझे विशेष प्रिय है। इसलिए भी कि चिड़िया से बातें करते करते वे उसे सलाह भी देते हैं और कविता के मर्म तक जा पहुँचते हैं और कविता का अंत तो जैसे बड़ों से भी सवाल करता प्रतीत होता है। टेक्नलॉजी के इस युग में भले ही हम अंतरिक्ष के कोनों को खंगालने में जुटे हैं। हर

हाथ में मोबाइल और टेब हो और हर आँख में आकाश को छूने की ललक लेकिन अपनी धरती से भी जुड़े रहने की दमक और उसकी सोंधी गन्ध की महक तो उनकी रचनाओं में गाहे बगाहे आ ही जाती है, जिसमें सन्देश और सवाल दोनों ही अपनी चिरपरिचित शैली में अभिव्यक्त होते हैं, ऐसी न जाने कितनी रचनाएँ हैं जो याद आती है। जो याद आएँगी और याद आते रहेंगे शलभ जी।

शलभ जी अक्सर घर बदलते थे। उनका पता बदल जाता था। ...इस बार तो उन्होंने दुनिया ही बदल दी। उनका नया पता किसी को नहीं पता। काश ! ऐसी कोई चिड़िया होती जो उनका पता खोज लाती।

काश! ऐसा कोई वाहक होता जो उन तक सन्देश पहुँचाता। शब्दों के जादूगर शलभ जी, आपके अचानक चले जाने से बहुत दुःखी हैं सब। आपसे नाराज भी हैं।

31 अक्टूबर 2017 को आप तो घर को लौट रहे थे। आ ही गए थे घर तक। घर के मोड़ तक। कोई अबुद्धि आपको बाइक से टक्कर मार गया। उसे नहीं पता कि क्या छिन गया। जिन्हें पता है, वे बहुत बेबस और बेकल हैं।

भीगे नयनों में बस...आपका मुस्कुराता हुआ चेहरा तैर रहा है, जो कुछ बोलता नहीं। ....फिर कानों में ये आवाज कहाँ से गूँज रही है ....पकड़ सको तो पकड़ो मेरे लगे हवा के पर।

सुभाष नगर
शाहजहाँपुर 242001
चलभाष 09451645033

कृष्ण शलभ की कुछ बाल कविताएँ

1. सूरज जी,
तुम इतनी जल्दी क्यों आ जाते हो!
लगता तुमको नींद न आती
और न को काम तुम्हें,
ज़रा नहीं भाता क्या मेरा,
बिस्तर पर आराम तुम्हें।
खुद तो जल्दी उठते ही हो,
मुझे उठाते हो!
कब सोते हो, कब उठते हो,
कहाँ नहाते-धोते हो,
तुम तैयार बताओ हमको,
कैसे झटपट होते हो।
लाते नहीं टिफिन,
क्या खाना खाकर आते हो?

2. बोल समंदर
सच्ची-सच्ची,
तेरे अंदर क्या,
जैसा पानी बाहर,
वैसा ही है अंदर क्या?
रहती जो मछलियाँ बता तो
कैसा उनका घर है?
उन्हें रात में आते-जाते,
लगे नहीं क्या डर है?
तुम सूरज को बुलवाते हो,
भेज कलंदर क्या?
बाबा जो कहते क्या सच है,
तुझमें होते मोती,
मोती वाली खेती तुझमें,
बोलो कैसे होती!
मुझको भी कुछ मोती देगा,
बोल समंदर क्या?
जो मोती देगा गुड़िया का,
हार बनाऊँगी मैं,
डाल गले में उसके, झटपट
ब्याह रचाऊँगी मैं!
दे जवाब ऐसे चुप क्यों है,
ऐसा भी डर क्या?
इस पानी के नीचे बोलो,
लगा हुआ क्या मेला,
चिड़ियाघर या सर्कस
वाला, कोई तंबू फैला-
जिसमें रह-रह नाच दिखाते,
भालू-बंदर क्या?

3. जहाँ कहूँ मैं बोल बता दे,
क्या जाएगी, ओ री चिड़िया।
उड़ करके क्या चन्दा के घर हो आएगी,
ओ री चिड़िया।
चन्दा मामा के घर जाना,
वहाँ पूछ कर इतना आना।
आ करके सच-सच बतलाना,
कब होगा धरती पर आना।
कब जाएगी, बोल लौट कर,
कब आएगी, ओ री चिड़िया।
उड़ करके क्या चन्दा के घर,
हो आएगी, ओ री चिड़िया।
पास देख सूरज के जाना,
जा कर कुछ थोड़ा सुस्ताना,
दुबकी रहती धूप रात-भर,
कहाँ? पूछना, मत घबराना।
सूरज से किरणों का बटुआ,
कब लाएगी, ओ री चिड़िया।
उड़ करके क्या चन्दा के घर हो आएगी,
ओ री चिड़िया।
चुन-चुन-चुन-चुन गाते गाना। पास बादलों के हो आना,
हाँ, इतना पानी ले आना। उग जाए खेतों में दाना। उगा
न दाना, बोल बता फिर क्या खाएगी,
ओ री चिड़िया?
उड़ करके क्या चन्दा के घर हो आएगी, ओ री चिड़िया

बाल साहित्य की लेखन परंपरा में हिमाचल का योगदान-पवन चौहान

छोटे बच्चों को ध्यान में रखकर रचे गए साहित्य को 'बाल साहित्य' का दर्जा दिया जाता है। अच्छा बाल साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में अपनी अहम भूमिका अदा करता है। यह जहाँ बच्चों का मनोरंजन करता है वहीं उन्हें शिक्षा, संस्कार और मानव मूल्यों का ज्ञान भी कराता है। हम यह कहें तो गलत न होगा कि बाल साहित्य बच्चों के विकास की नींव है। भारत में कई भाषाओं का समावेश है। हर भाषा में बाल साहित्य की रचना हुई है जो बाल साहित्य को समृद्ध करती रही हैं। यहाँ यह बात भी उल्लेखनीय है कि बच्चों के लिए लिखी गई कहानी, कविता, बालगीत, नाटक आदि को सिर्फ बच्चे ही पसंद नहीं करते अपितु बड़े लोग भी इसका भरपूर आनंद उठाते हैं। इसका सीधा-सा प्रमाण बच्चों के लिए चलाए जा रहे कार्टून कार्यक्रमों को देखकर भी लगाया जा सकता है। इन्हे सिर्फ बच्चे ही नहीं बल्कि उनके बड़े भी साथ बैठकर बड़े चाव से देखते हैं। यह बाल साहित्य के प्रति बड़े लोगों के आकर्षण के रूप में लिया जा सकता है। वैसे भी जिस व्यक्ति में बाल सुलभ चंचलता नहीं है उसे पत्थर के समान ही माना गया है।

आज का बाल साहित्य कई विविधताओं से भरा पड़ा है। आज के बाल साहित्य में जहाँ पशु-पक्षियों, राजा-रानी आदि अन्य विषयों की कहानियाँ सम्मिलित हैं वहीं इसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वर्तमान समय के यथार्थ को प्रस्तुत करती कहानियाँ बखूबी लिखी जा रही हैं। यह बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है। बाल साहित्य बच्चों के लिए तीन उद्देश्य लेकर आता है जो मनोरंजन और नैतिक शिक्षा के साथ-साथ उनके विकास की विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ उपलब्ध करवाता है। वैज्ञानिकों की माने तो बच्चों के मस्तिष्क का बहुत-सा विकास छोटी उम्र में ही हो जाता है। यदि इस उम्र में बच्चों को सही, संपूर्ण और सकारात्मक शिक्षा उपलब्ध करवाई जाए तो हमें भविष्य में निश्चय ही इसके सुखद परिणाम मिलते हैं जो एक बेहतर समाज के निर्माण में मदद करते हैं।

हिमाचल प्रदेश की बात करें तो हिमाचल में बाल साहित्य उस दौर से रचा जा रहा है जब किसी अन्य प्रदेश में इसे रचा जाने लगा था। यह कहना गलत न होगा कि पण्डित संतराम वत्स्य और डॉ. मस्त राम कपूर ऐसे बाल साहित्यकार हुए जिन्होंने हिमाचल में बाल साहित्य की नींव रखी। पंण्डित संतराम वत्स्य ने जहाँ पशु-पक्षी, परी कथाओं, लोक कथाओं, नीति कथाओं, धर्म कथाओं तथा पौराणिक कथाओं को अपने बाल लेखन का हिस्सा बनाया वहीं डॉ. मस्त राम कपूर ने बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल नाटक तथा बाल कविताओं के माध्यम से बालमन को पकड़ने का प्रयास किया। यह सिलसिला फिर यहाँ रुका नहीं बल्कि आगे बढ़ता रहा। इस कड़ी में और भी नाम जुड़ते चले गए जिसमें राम प्रसाद शर्मा 'प्रसाद', महर्षि गिरिधर योगेश्वर, डॉ. राम मूर्ति वासुदेव 'प्रशांत', डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित', डॉ. सुशील कुमार 'फुल्ल', सैन्नी अशेष, डॉ. पीयूष गुलेरी, डॉ. प्रत्यूष गुलेरी, कृष्णा अवस्थी, सुदर्शन डोगरा, संसार चंद प्रभाकर, शशिकांत शास्त्री, संतोष शैलजा, किशोरी लाल वैद्य, हेमकांत कात्यायन, डॉ. मनोहर लाल, रतन चंद रत्नेश, प्रेम सागर कालिया, केशवचंद्र, मोती लाल घई, आशा शैली, प्रेमलता वात्सयायन, हरिकृष्ण मुरारी, यशवीर धर्माणी, सुदर्शन वशिष्ठ, शेर सिंह, प्रभात कुमार, श्रीनिवास जोशी, अमरदेव अंगिरस, डॉ. आशु फुल्ल, ओम प्रकाश सारस्वत, गुरमीत बेदी, खुशीराम गौतम, डॉ. कमल के. प्यासा, डॉ. प्रेमलाल आर्य, गिरीश हरनोट, प्रकाश चंद, शम्मी शर्मा, मामराज शर्मा आदि साहित्यकारों का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इन बाल साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से बाल साहित्य में नए आयाम जोड़े और बाल साहित्य को समृद्ध किया है। इन साहित्यकारों ने मुख्यतः बाल कविता, बाल गीत, बाल कहानी आदि पर प्रमुखता से अपनी कलम चलाई। इस

दौरान कुछ बाल एकांकी, बाल उपन्यास तथा बाल पहेलियों की रचना भी हुई। उपन्यास में डॉ. मस्तराम कपूर, डॉ. सुशील कुमार फुल्ल, संतोष शैलजा का नाम प्रमुखता से शामिल किया जा सकता है। डॉ. सुशील कुमार फुल्ल के नाम पाँच उपन्यास हैं जो काफी चर्चित रहे हैं। इस बात का अनुमान यहीं से लगाया जा सकता है कि वे आज भी पाठकों की मांग पर रीप्रिंट हो रहे हैं। बाल एकांकी में पण्डित संतराम वत्स्य, सुशील कुमार 'फुल्ल', रामकृष्ण कौशल, संतराम शर्मा, श्राीनिवास जोशी, राजकुमार शर्मा, नरेन्द्र अरुण, ओमप्रकाश सारस्वत, कृष्ण चंद्र महादेविया, हेमकांत कात्यायन, रामप्रसाद शर्मा, शशिकांत शास्त्री, त्रिलोक मेहरा आदि का कार्य प्रमुख रहा है। कुछ ऐसे भी साहित्यकार हमारे बीच में हैं जिन्होंने बाल एकांकियों को रचकर उन्हें छोटे-छोटे बच्चों से अभिनीत भी करवाया है। इनमें कृष्ण चंद्र महादेविया, श्रीनिवास जोशी आदि को लिया जा सकता है।

हिमाचल बाल साहित्य में सैन्नी अशेष जी ने जिस गति और मात्रा में बाल कहानियों को रचा और हिमाचल के बाल साहित्य की बात हिमाचल के बाहर तक पहुँचाई, वह उल्लेखनीय है। उन्होंने 2500 से ज्यादा बाल कहानियों को रचा जिनका अनुवाद विभिन्न भाषाओं में खूब मात्रा में हुआ। बेशक, कुछ वर्षों तक हिमाचल में बाल साहित्य लेखन रुका भी रहा जब ज्यादातर साहित्यकार प्रौढ़ लेखन की ओर मुड़ गए। लेकिन इस खाई को अपनी कविता, कहानी, गीत से पाटने का प्रयास हमारे कुछ लेखक समय-समय पर करते भी रहे। यह बहुत ही सुखद बात है कि पिछले कुछ बर्षों में हिमाचल के बहुत से लेखक बाल साहित्य की तरफ मुड़े हैं। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाशीलता से बहुत ही उत्तम और रुचिकर बाल रचनाओं को पाठकों के समक्ष रखा है। वर्तमान में बाल साहित्य लेखन में सक्रिय रचनाकारों में डॉ. नलिनी विभा 'नाजली', डॉ. प्रत्यूष गुलेरी, रतनचंद रत्नेश, कृष्ण चंद्र महादेविया, पवन चौहान, कंचन शर्मा, अनंत आलोक, राजीव त्रिगर्ती, आर. के. वशिष्ठ, अशोक दर्द, आशा शैली, अदिति गुलेरी, कृष्णा ठाकुर, प्रतिभा शर्मा, आशु फुल्ल आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इस दौरान कुछ बाल उपन्यासों की रचना भी हुई जिसमें लेखिका आशा शैली और डॉ. गंगा राम राजी के नाम को जोड़ा जाता है। अदिति गुलेरी ने अपनी पीएच.डी. बाल साहित्य में की है। उनका विषय है, 'हिमाचल में बाल साहित्य सर्वेक्षण एवं विश्लेषण'। यह हिमाचल के बाल साहित्य पर किया गया पहला शोध कार्य है। इन सब बातों को सामने रखकर हम कह सकते हैं कि हिमाचल में बाल साहित्य पहले भी रचा जाता रहा है और आज भी इसकी रचनाशीलता अपनी प्रगति पर है। बात सिर्फ इतनी भर है कि इन साहित्यकारों को मीडिया में वह स्थान नहीं मिला जिसके वह हकदार थे। इस वजह से हिमाचल के बाल साहित्य पर किसी ने गौर नहीं किया। यह हिमाचल के बाल साहित्य के लिए सबसे दुखद पहलू रहा है। हिमाचल बाल साहित्य को ग्रहण लगने का एक कारण यह भी रहा कि इस प्रदेश में कोई ऐसी स्थाई बाल साहित्य पत्रिका आज तक नहीं निकल पाई जो हिमाचल का प्रतिनिधित्व कर पाए। बेशक, हिमाचल अकादमी इस विचार की ओर बराबर अग्रसर है। उम्मीद की जा सकती है कि हिमाचल से जल्द ही किसी बाल पत्रिका का आगाज होगा।

हिमाचल में बाल साहित्य की भूमि बहुत उर्वरा है। बस, सोचना यह है कि लेखन की इस ऊर्जा को बाल साहित्य की ओर कैसे मोड़ा जाए।

-गाँव व डा.- महादेव, तहसील- सुन्दर नगर,
जिला- मण्डी (हि. प्र.)-175018
फोन- 094185 82242, 098054 02242
chauhanpawan78@gmail.com

> ''बालसाहित्य के माध्यम से बच्चों में नैतिकता, वीरता, मानवता के विचार तथा भाव, सहजता से आरोपित किये जा सकते हैं। अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने माना है, बौद्धिक विकास वंशक्रम की अपेक्षा वातावरण पर अधिक निर्भर करता है। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाटसन ने वातावरण को विकास में सहायक मानते हुए कहा, ''तुम मुझे नवजात शिशु दो, मैं उसे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, चोर, सैनिक जो चाहे बना सकता हूँ।''

साक्षात्कार

बाल कल्याण का मेरुदंड है बाल साहित्य -डॉ. राष्ट्रबंधु

बाल साहित्य के पितामह कहे जाने वाले डॉ. राष्ट्रबंधु की चर्चा किए बिना बाल साहित्य अंक अधूरा कहा जा सकता है। बाल साहित्य के लिए आजीवन समर्पित बालकों की तरह सरल और सहज व्यक्तित्व का नाम ही डॉ. राष्ट्रबंधु है। आप ने भारतीय बाल साहित्य कल्याण संस्थान की स्थापना करके नवोदित बाल साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया और समय-समय पर अपने सद्परामर्श से उन्हें आगे भी बढ़ाया। बाल साहित्य के संवर्धन के लिए वे अन्तिम समय तक दूर-दूर की यात्राएँ करते रहे। ऐसी ही एक साहित्यिक यात्रा से लौटते हुए आप ने अपनी सांसारिक यात्रा समाप्त कर दी। इन्हीं डॉ. राष्ट्रबंधु के आशीष शुक्ला द्वारा लिए गए एक साक्षात्कार को आज हम अपने पाठकों से साझा कर रहे हैं। -सम्पादक

प्रश्नः-मानव जीवन की बुनियाद, बचपन को संवारने हेतु आपने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। हमें अपने बचपन के बारे में बताइए।

उत्तरः-आशीष जी! मेरा जन्म 2 अक्टूबर 1933 को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में हुआ। सहारनपुर बहुत पुराना जिला भी रहा है। हरिद्वार जो आज बहुत मशहूर है, सहारनपुर के मुकाबले और भी ज्यादा मशहूर है लेकिन हरिद्वार उस समय एक तहसील था सहारनपुर की। सन् 1940 तक मैं सहारनपुर में रहा। मेरे शैशव के सात वर्ष सहारनपुर में बीते। अपने माता-पिता का अकेला बेटा होने के कारण मुझे उनका बहुत प्यार मिला। वे मेरा बहुत ख्याल रखते थे। मेरे घुमाने के लिए एक गाड़ी तैयार की गई थी।

जिससे मेरे पिता जी मझे घुमाने ले जाते थे और उसमें मेरे खाने-पीने की चीजें भी रखते थे। वे जानते थे कि मैं अकेला नहीं खाता हूँ इसलिए काफी सामान रखा जाता था जिसे मैं अपने हम उम्र साथियों के साथ मिल बाँटकर खाता था और खुश होता था। 1940 में मैं कानपुर आ गया। यह मकान (109 / 309 रामकृष्ण नगर) पिताजी ने इसका निर्माण कराया।

प्रश्नः-आपके लेखन का प्रारम्भ कैसे हुआ तथा आपकी पहली रचना कौन सी थी?

उत्तरः--मेरे बाबा जी भजन गाते थे । उनके भजनों की धुनें मुझे बहुत अच्छी लगती थीं। मेरे मामाजी श्री बृजकिशोर मिश्र के नाम से लिखते थे। धनुष यज्ञ के आयोजनों में वह संवाद भी लिखा करते थे। उनके बच्चे भी अच्छे अभिनेता थे। घर के सांस्कृतिक, साहित्यिक वातावरण का प्रभाव मुझ पर पड़ा और मेरे मन में भी लिखने की इच्छा हुई। इस समय दैनिक प्रताप निकला करता था कानपुर से। उसमें एक साप्ताहिक परिशिष्ट अवश्य होता था साहित्य का, जिसमें एक स्तम्भ बच्चों का भी होता था। उसके सम्पादक थे रामदुलारे त्रिवेदी जी। उसमें मेरी पहली कविता प्रकाशित हुई थी, 'बाबा क्यों तम्बाखू खाते।'

तब तो मैं मटक-मटककर, झूम-झूम कर यह कविता गाता और अपने बाबा जी को सुनाता था यह बताने के लिए कि तुम क्यों तम्बाखू खाते हो लेकिन अब बड़ा विचित्र संयोग है कि (हँसते हुए) अब मैं बाबा हो गया हूँ और मेरे पौत्र यह कविता गाकर मुझे सुनाते हैं।

प्रताप में छपने के बाद पटना के एक अखबार ने प्रताप से लेकर उस रचना को प्रकाशित किया। वह अंक उन्होंने सम्पादक जी को भेजा। इससे प्रभावित होकर त्रिवेदी जी ने मुझ से और कविताएँ माँगी छापने के लिए। मैं उत्साहित होकर कविताएँ लिखने लगा।

प्रश्नः-आपके समय में बाल साहित्य की क्या स्थिति थी, आपके बाल साहित्य को प्रेरणा तथा प्रोत्साहन कैसे मिला?

उत्तरः - हमारे जमाने में बाल साहित्य के प्रसिद्ध लेखक थे सोहन लाल द्विवेदी और द्वारिका प्रसाद महेश्वरी। उनकी कविताएँ खूब प्रकाशित हुआ करती थीं। पाठ्य पुस्तकों में भी पढ़ाई जाती थीं। इन दोनों कवियों की बाल कविताएँ बाल साहित्य जगत पर छा गई थीं। उस समय भी प्रकाशन विभाग से प्रकाशित बाल भारती अच्छी बाल पत्रिका

थी। बाल भारती की सम्पादक सावित्री देवी वर्मा और बालसखा के सम्पादक लल्ली प्रसाद पाण्डेय ने बाल साहित्य पर मौलिक चिन्तन किया। लल्ली प्रसाद जी को तो मैं बाल साहित्य का निर्माता मानता हूँ। बाल साहित्य में लल्ली प्रसाद जी का योगदान बहुत अधिक तथा महत्वपूर्ण है। जिसका अधिक प्रचार नहीं हुआ। लल्ली प्रसाद जी ने अनेक बाल साहित्यकार तैयार किए। इसी प्रकार सावित्री देवी जी भी नए विषय देकर लेखकों से लिखवाया करती थीं। वे अखबारों की कटिंग भेजकर सम्बन्धित विषय पर रचनाएँ लिखवाती थीं। जब चीन से युद्ध छिड़ा तो सावित्री देवी जी ने भारतीय सैनिकों के प्रेरक प्रसंग तथा संस्मरण लेखकों को भेजकर कहानियाँ लिखवाईं। उन लेखकों में मैं भी शामिल था।

सावित्री देवी जी का इस प्रकार नए लेखकों को प्रेरित करना मैं महत्वपूर्ण मानता हूँ। लल्ली प्रसाद जी तथा सावित्री देवी जी ने मुझे अद्वितीय प्रोत्साहन दिया। इसी प्रकार श्री सोहन लाल द्विवेदी तथा श्री द्वारिका प्रसाद महेश्वरी का बाल कवि सम्मेलन स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान है। बच्चों को एकत्र करके कविताएँ सुनाना। विद्यालयों में जाकर कविता पाठ करना जैसे महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने किए। लेकिन इनके कार्य को जिस प्रकार से आगे बढ़ाया जाना चाहिए था, ऐसा नहीं किया गया यद्यपि सर्वश्री चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' उनकी बेटी ऊषा यादव, पुत्र धीरेन्द्र यादव, भालचन्द्र सेठिया, राधेश्ययाम सक्सेना और हमारे शहर के अनेक कवियों ने बाल साहित्य को प्रेरणा दी, प्रोत्साहन दिया। जगह-जगह बाल कवि सम्मेलन कराए। लेकिन सबसे ज्यादा ध्यान अगर किसी ने बाल साहित्य पर दिया तो वे आचार्य श्री कृष्ण विनायक फड़के। फड़के साहब मारवाड़ी इण्टर कालेज, कानपुर में प्रधानाचार्य थे। एकला चलो रे। ऐसी प्रवृत्ति थी उनकी। कहीं आयोजन हो न हो, अपने घर में वह सुबह-शाम नहीं बैठते थे। आस-पास के बच्चों को इकट्ठा करके प्रेरणादायक गीत गवाते थे। कहानियाँ सुनाते थे, महान पुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाते थे। एक रजिस्टर उन्होंने बनाया था। वे बच्चों से बच्चों की मनपसन्द कविताएँ उसमें नोट कराते थे। द्वारिका प्रसाद जी का प्रसिद्ध गीत है, '' हम सब सुमन एक उपवन के।'' उत्तर प्रदेश सरकार ने इस कविता को सम्मान दिया और इसे उर्दू भाषा में रूपान्तरित भी किया, ''हम सब फूल एक गुलशन के'' उर्दू तर्जुमा किया गया। सूचना विभाग ने इसके बैनर और होर्डिंग्स लगवाए। लेकिन जो सम्मान अपनी हैसियत में आचार्य कृष्ण विनायक फड़के ने इस गीत को दिया वह अपूर्व है। उन्होंने कहा था कि यह गीत मुझे बहुत प्रिय है कि जब मैं न रहूँ तो यह न कहना कि 'राम नाम सत्य है।' बस यही गीत गाते हुए बच्चे और सभी लोग निकलें, ''हम सब सुमन एक उपवन के।''

मैं समझता हूँ किसी गीत को इससे ज्यादा सम्मान, इससे ज्यादा प्यार और बाल साहित्य व बच्चों द्वारा अपनाए जाने की सच्ची कोशिश इस गीत को मिली, वह पूर्ण थी। आचार्य कृष्ण विनायक फड़के जब नहीं रहे तो उनके कहे अनुसार बच्चों ने यह गीत गाया। उनकी शवयात्रा में लोग यही गीत गाते हुए चल रहे थे, ''हम सब सुमन एक उपवन के।''

प्रश्न:-बच्चों को कैसे जोड़ा जाए बाल साहित्य से?

उत्तर:-बाल साहित्य के बिना बाल कल्याण संभव नहीं है। जैसे हमारे शरीर में यदि मेरुदण्ड कार्य न करे तो व्यक्ति सीधा बैठ भी नहीं सकता। बहुत अफसोस की बात है कि बाल कल्याण के नाम पर अनेक संस्थाएँ बनी हैं सरकारी भी, गैर सरकारी भी। लेकिन ये संस्थाएँ बाल साहित्य को अलग-थलग कर रही हैं। मैं यह मानता हूँ कि जब तक बाल कल्याण करने वाले लोग बाल साहित्य को सही स्थान नहीं देंगे, जब तक बाल साहित्य का प्रशिक्षण या उसका पठन-पाठन नहीं होगा, बच्चों को बाल साहित्य के बारे में बताया नहीं जाएगा तब तक बाल कल्याण सम्भव नहीं है। आकाशवाणी टेलीविजन केन्द्रों में जो बच्चों के कार्यक्रमों के निष्पादक, कार्यक्रम अधिशासी आदि बिना बाल साहित्य को जाने कार्यक्रम तैयार करते हैं और सुविधा के लिए केवल स्थानीय लोगों को समय देते हैं जो कि औपचारिकता है, इससे बाल साहित्य का उद्धार नहीं होगा। इसका परिणाम घातक होगा। उन्हें श्रेष्ठ बाल साहित्यकारों के साहित्य का ठीक तरह से अध्ययन करना होगा, जब तक ऐसा नहीं होता बच्चों के अच्छे कार्यक्रम सम्भव नहीं हैं। इसी प्रकार बाल पत्रिकाओं के सम्पादक बाल साहित्य की बिना जानकारी के कार्य करते

हैं तो वह अप्रभावी ही रहता है। न तो वे बाल मनोविज्ञान का अध्यय न करते हैं और न बच्चों की आवश्यकताओं का। ऐसे में न तो ठीक तरह से बाल साहित्य प्रस्तुत हो सकेगा और न ही सम्पादित। इसीलिए बाल पत्रिकाओं का प्रचलन धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। आजकल कविताओं में छन्द नहीं है, गेयता नहीं है। इस पर परिवार को भी ध्यान देना चाहिए। पुराने जमाने में जो जागरण गीत थे, लोरियाँ थीं, खेलगीत थे, ऋतु गीत थे, अब नहीं गाए जाते। अब कौन गाता है,

छल कबड्डी आल-ताल
मेरी मूँछें लाल- लाल
साँस देती है साथ जब तक
करना है जीवन में कमाल।

कविताएँ वही जिन्दा रहती हैं जो लोक धुनों से प्रेरित होती हैं। क्योंकि बालक उसे सुनता आया है अपनी माँ से, दादी से, चाची से, मामी से।

बृज व अवधी की लोक धुनों पर मेरी कुछ कविताएँ हैं। जैसे रसिया बहुत प्रचलित है । मैंने एक कविता सुनी थी, 'कान्हा गागरिया ना फोड़े, मोरे घर सास लड़ेगी रे।' मुझे यह धुन बड़ी अच्छी लगी। मैंने इसी धुन पर लिखा,

भारत माँ का प्यारा मन्दिर
इसका नव निर्माण करो ।

इसी प्रकार एक लोक धुन है जिसे गोंड जाति के लोग गाकर नृत्य करते हैं, रे लो .... रे लो .... रे लो

देश तुम्हारा जीवन है
भाग्य तुम्हारा यौवन है
रखो मौत को दाँव पर
परेशानियाँ - झेलो
रे लो .... रे लो .... रे लो ....

प्रश्नः -बाल साहित्य द्वारा बाल चरित्र निर्माण किस प्रकार सहजता से हो सकता है ?

उत्तरः-हमारे जमाने में विद्यालयों में विद्या नवीन पत्रिकाएँ होती थी जो बच्चों के लिये बड़ी उपयोगी होती थीं। उनके द्वारा बच्चे कला, सम्पादन, लेखन इत्यादि सीखते थे। अब तो बच्चों के लिये मौका ही नहीं है सीखने का, मौका ही नहीं अभिव्यक्ति का। जब आप बच्चों को मौका ही नहीं देंगे तो उनसे कोई उम्मीद भी न रखिये। इस ओर प्रिन्ट मीडिया को ध्यान देना चाहिये। अखबारों में बच्चों का अपना कोई स्तम्भ हो जो सप्ताह में दो दिन हो। जिसमें बच्चों को अभिव्यक्ति का मौका मिल सके। इसी प्रकार रेडियो, टेलीविजन को चाहिये कि बच्चों के कार्यक्रम सोच-समझ कर प्रारम्भ करें। आज टेलीविजन आदि में बच्चों के लिये कार्यक्रम न के बराबर हैं लिहाजा बच्चे, बड़ों के कार्यक्रम देख रहे हैं जो बाल-चरित्र निर्माण की दृष्टि से ठीक नहीं हैं। इसी प्रकार रेडियो में भी बच्चों के कार्यक्रमों का अभाव है, बाल गीतों का अभाव है। फरमाइशी गीतों के कार्यक्रम में हमारे संचार माध्यमों में बज रहे अश्लील फिल्मी गीतों की फरमाइश बच्चा भी करता है। ऐसे गीत सुनाकर उन्हें प्रोत्साहित किया जा रहा है जो अपराध और बालापराध को बढ़ावा दे रहे हैं। हमारे संचार माध्यमों को चाहिये कि वे बच्चों के कार्यक्रम जल्द से जल्द शुरू करें। बाल कवि सम्मेलन, बाल प्रश्नावली, विज्ञान विषयक साहित्यिक कार्यक्रम आदि। मेरा मानना है कि अच्छा बाल साहित्य भी है और अच्छा बाल साहित्य लिखने वाले भी, जिनसे परामर्श लेकर बच्चों के मुताबिक कार्यक्रम शुरू किये जा सकते हैं। बड़ी विडम्बना है कि जिन्होंने बाल साहित्य पर पीएचडी. की उन्हें ऐसा कोई कार्य नहीं सौंपा जाता है जो बाल साहित्य से जुड़ा हो। बाल साहित्य के अलावा जो विषय है उसमें उन्हें नौकरी करनी पड़ती है। उन्हें वे विषय पढ़ाने व पढ़ने पड़ते हैं जो बाल साहित्य से दूर हैं ।

प्रश्नः-वर्तमान में लिखा जा रहा बाल साहित्य बालमन से कितना दूर है कितना पास? कितना पहुँच पा रहा है वह बच्चों तक?

उत्तरः -इस समय जो बाल साहित्य लिखा जा रहा है वह बच्चों के बारे में बेकार है वह नाम मात्र का है। उसमें बच्चों की समस्याएँ नहीं हैं। जिन समस्याओं में आज का बच्चा जी रहा है, जिस परिवेश में वह रह रहा है, जिन समस्याओं से वह जूझ रहा है, वे सारी बातें हमें आज के बाल साहित्य में नहीं मिलतीं। अब या तो हम बहुत पुरानी कहानियाँ बच्चों को पढ़ने को दे रहे हैं जिनसे उनका नैतिक तथा चारित्रिक लगाव हो सकता है लेकिन ऐसी कहानी नहीं मिलती कि बच्चों को लगे कि मेरी समस्याएँ इसमें व्यक्त हैं। दूसरी बात भाषा की है। जिस भाषा में बच्चे

बोलते हैं उस भाषा में अगर कोई कहानी लिखी जाती है तो वह बाल साहित्य की भाषा नहीं है, उससे बाल साहित्य का बड़ा नुकसान होता है। एक ही वाक्य में बहुत से अंग्रेजी के वाक्य होते हैं, जब तक हमें अंग्रेजी के उन शब्दों का ज्ञान न हो तब तक हम उस हिन्दी को भी नहीं समझ सकते जो हमारे लिए लिखी गई है। बच्चों की रचनाओं के न तो अनुकूल विषय हैं, न समस्याएँ हैं, न भाषागत प्रायोगिक अर्थ है जिससे हम बाल साहित्य को लाभकारी कह सकें। कुछ लोग ध्यान दे रहे हैं लेकिन ज्यादातर पत्रिकाएँ बच्चों के नाम पर समस्या ही बनी हुई हैं। बच्चे जिन पत्रिकाओं, पुस्तकों को पढ़ना चाहते हैं, खरीद नहीं पाते। वे इतनी ज्यादा महंगी होती हैं कि उनकी क्रय शक्ति के बाहर होती हैं। बाल साहित्य, प्रकाशन और सम्पादन की दृष्टि से बच्चों का न होकर बड़ों का हो रहा है। राजनैतिक खेल खेला जा रहा है। साहित्य को इतना व्यवसायिक बना दिया गया है कि हमने नैतिकता को तो दूर कर दिया है। चरित्र का निर्माण जो बाल साहित्य करता था अब वह नहीं कर पाता। यदि हम बाल साहित्य का उद्धार करना चाहते हैं तो यह काम प्रिन्ट मीडिया के माध्यम से बहुत ही आसान है। आजकल चार-पाँच रुपये में एक अखबार रोज निकलता है यदि एक में भी सप्ताह में बच्चों के लिए छापा जाए तो महीने भर में चार-पाँच गुना ज्यादा बाल साहित्य की सामग्री बच्चों को मिल सकेगी वह सिर्फ बीस रुपये में। इतने कम रुपये में कोई प्रकाशक ऐसी किताब नहीं दे पाएगा। व्यक्ति और अभिव्यक्ति में जो गहरा सम्बन्ध है उसे ध्यान में रखकर मीडिया को बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर भी देने चाहिए। रेडियो, टेलीविजन, फिल्म इत्यादि में परोसी जा रही अश्लीलता तथा अश्लील गानों का चलन बन्द होना चाहिए। बाल साहित्य के स्वस्थ कार्यक्रम बनाए जाएँ, कविता, कहानी पर चर्चा हो और बच्चों की समस्याओं को लेकर हमारे संचार माध्यम कार्य करें तो देश का, नैतिकता का तथा चरित्र का उन्नयन हो सकेगा।

प्रश्न:-उन बाल साहित्यकारों के बारे में बताएँ वर्तमान में जो अच्छा लिख रहे हैं और आपको जिनकी रचनाएँ पसन्द हैं?

उत्तर:-बाल मनोविज्ञान बाल स्वभाव का अध्ययन है। इसके बिना बाल साहित्य नहीं लिखा जा सकता। बाल मनोविज्ञान की रचनाओं द्वारा बच्चों में यह धारणा सरलता से विकसित की जा सकती है कि बुराई का परिणाम हितकारी नहीं होता। अनेक बाल साहित्यकार इस पर ध्यान दे रहे हैं । डॉ. देवसरे, प्रकाश मनु, हरिकृष्ण तैलंग ने बाल मनोविज्ञान की बहुत अच्छी कहानियाँ लिखी हैं, जो कि बच्चों में बहुत लोकप्रिय हुई है। राजीव सक्सेना विज्ञान विषयों पर आधारित कहानियाँ लिख रहे हैं, जिनमें उन्होंने आधुनिकतम प्रयोग जो विज्ञान जगत में हो रहे हैं उनका विश्लेषण किया है। ये केवल वैज्ञानिक कहानियाँ ही नहीं हैं इनमें मनोविज्ञान भी है। बच्चों की आवश्यकताएँ और खिलन्दड़ापन भी है। इसी प्रकार आशीष शुक्ला की कहानियों तथा कविताओं में बच्चों की समस्याओं का समाधान बेहतर ढंग से मिलता है। राजस्थान के गोविन्द शर्मा, गोविन्द भारद्वाज, मनोहर वर्मा, इनकी कहानियों को भूलकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। इसी क्रम में सीताराम गुप्त, कल्पना जैन, सत्य नारायण 'सत्य' की रचनाएँ भी अत्यन्त श्रेष्ठ हैं। रमेश तैलंग ने बहुत अच्छा लिखा है। इनकी कहानियाँ बड़ी दमदार हैं। पटना के रास बिहारी तथा उड़ीसा के मधुसूदन साहा भी बहुत अच्छा लिख रहे हैं। डॉ. विमला भण्डारी तथा संजीव जायसवाल 'संजय' की कहानियाँ भी उत्कृष्ट हैं, हमें इनका अध्यय न करना चाहिए।

प्रश्नः -आजकल आप क्या लिख रहे हैं?

उत्तर:-पिछले कुछ समय से मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। चलने-फिरने में असमर्थता महसूस करता हूँ इसीलिये यात्राएँ भी कम हो गई हैं। मैं अपनी आत्मकथा पूर्ण करना चाहता हूँ । पिछले दिनों 'तपती रेत पर' शीर्षक से मेरी आत्मकथा प्रकाशित हुई थी लेकिन वह अधूरी है। मैं अपनी पुरानी कविताओं-कहानियों में निजी सम्पादन चाहता हूँ ताकि वे और श्रेष्ठ बन सकें। इसके अलावा लिखने से भी ज्यादा मैं यह जरूरी मानता हूँ कि जगह-जगह जाकर मैं यह कहना चाहता हूँ कि बाल कल्याण का मेरुदण्ड है बाल साहित्य। बाल साहित्य के प्रचार और प्रसार में ही मैं अपना शेष समय बिताना चाहता हूँ।

प्रश्नः -बाल साहित्य लेखकों की नई पौध को आपका क्या सन्देश है?

उत्तर:-किसी को यदि आप तैरना सिखाना चाहते हैं तो आपको नदी के तट पर जाना होगा, रेगिस्तान में यह कार्य सम्भव नहीं है। जो श्रेष्ठ बाल साहित्य लिखना चाहते हैं उन्हें बच्चों की संगति करनी चाहिए। श्रेष्ठ बाल साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। वर्तमान समय में बच्चों की समस्याएँ क्या हैं इसे खोजकर बाल साहित्य में उन समस्याओं का समाधान खोजना चाहिए। बच्चों को नई से नई लेकिन उचित जानकारी बाल साहित्य के माध्यम से दें, जो बच्चों के लिए लाभदायक हो। बच्चों को ऐसा साहित्य दें जो उन्हें आधुनिकता के साथ अपनी महान भारतीय संस्कृति से जोड़े भी रखे।

आशीष शुक्ला
127/615, ब्लॉक-W,
केशव नगर, कानपुर-208014
9935197721

बादल जी –डा प्रत्यूष गुलेरी

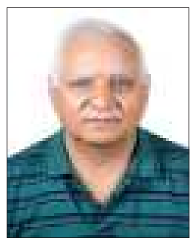

गड़ गड़ बादल गड़क रहे हैं
बरस रहा है पानी
कभी चमकती बिजली चम-चम
पीला और असमानी
अम्बर ने भी आँख झपकते
काली छतरी तानी
बादल बना सिपाही देखो
करता है मनमानी
कहीं नहीं है बूंद टपकता
कहीं बड़ा है दानी
कभी थके ना बरस बरस कर
याद कराए नानी
इतना पानी लाते कैसे
होती है हैरानी
बादल जी सच-सच बतलाना
तुम मितवा तुम जानी।

कीर्ति कुसुम,सरस्वती नगर
पोस्ट दाड़ी-176057
धर्मशाला हिमाचल प्रदेश।
09418121253

सच्चे बच्चे –डॉ. संगीता गांधी

बच्चों की दुनिया है न्यारी
खिलती ज्यों फूलों की क्यारी

मधुर मधुर इनकी मुस्कान
दूर करे सब कष्ट थकान

पाप, घृणा से मुक्त रहें
सच्चे, मीठे बोल कहें

कोई पूछे जो ये सवाल
किनसे है ये जग खुशहाल?

तो एक ही उत्तर मन को भाये
बच्चे जग में खुशियाँ लाये।

76, फर्स्ट फ्लोर, लेन 4,
शिव नगर, नई दिल्ली 58.
फ़ोन 9213835906.
मेल --rozybeta@gmail-com

रेनकोट –कल्याणी झा

झम-झम-झम-झम
झम-झमाझम
टप-टप-टप-टप
टिप-टपाटप।
कितना प्यारा आया मौसम
आओ नाचे-गाएँ हम सब।
पहन रेनकोट स्कूल चलें हम
हाथ थामें मम्मी के संग।
मम्मी आयी छाता के संग
पीछे गोलू, लटकू, शबनम।
पक्षी चहके डाल - डाल पर
नदियाँ भी अपने उफान पर।
हरियाली छायी है धरा पर
आओ पेड़ लगाए हम सब।।

बी-304, ईश्वरी
इन्क्लेव, विद्यापति नगर, कनक रोड,
राँची, झारखंड-834008
8210704245

बाल साहित्य और बच्चे –राजकुमार जैन राजन

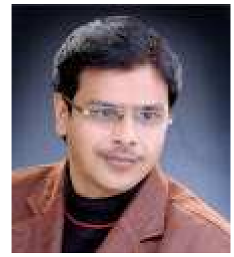

यदि हम चाहते हैं कि देश का भविष्य उज्ज्वल हो तो हमें बालकों के व्यक्तित्व विकास की ओर ध्यान देना होगा क्योंकि आज के बच्चे ही कल देश के कर्णधार होंगे। बच्चों का जिज्ञासु मन कल्पना की उड़ान भरता है। उसके शांत मन में उथल-पुथल भी जारी रहती है। मन में उठते स्वभाविक सवालों अथवा जिज्ञासाओं को अभिभावक या अध्यापक अक्सर टाल जातें हैं। परिणामतः बच्चे के व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है और माता-पिता उस बालक के प्रथम शिक्षक बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण का बीजारोपण परिवार से ही होता है। शिक्षित और संस्कारवान अभिभावक व शिक्षक बालकों में काफी हद तक संस्कार सृजन का प्रयास करते हैं। उनकी जिज्ञासाओं को शांत करते हैं। उन्हें संयमित और धैर्यवान बनने की प्रेरणा देते हैं। यह अभिभावक, शिक्षक तथा उनकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि वे बच्चे को किस सीमा तक विकसित कर पाते हैं।

आज गाँव से लेकर शहरों तक मोबाइल, टी. वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट ने बच्चों और बड़ों को अपने जाल में ऐसा जकड़ लिया है कि वे इसी में अपनी खुशियाँ ढूंढने में लगे हैं। इस कारण बच्चे तो जब देखो तब मोबाइल, टी. वी. या कम्प्यूटर स्क्रीन से चिपके ही नज़र आते हैं। नतीजतन उन्हें प्रतिदिन कई क्रूरता और हिंसा भरे दृश्य देखने को मिल रहे हैं। निरन्तर इस तरह के दृश्यों को देखते हुए बच्चे संवेदनशून्य हो रहे हैं। वे हिंसक, आक्रामक, एकाकी और चिड़चिड़े हो रहे हैं। बच्चों ने बाहर मैदानों में खेलना छोड़ दिया है। रिश्तों का सम्मान करना उनके मन से समाप्त होता जा रहा है।

बच्चों के दिलों में उतरती हिंसा, बढ़ते अवसाद और खोते जा रहे मानवीय मूल्यों को नियंत्रित करने वाले नैतिक और मानवीय दायित्वों का न कोई अर्थ रह गया है न कोई संदर्भ। पैसा कमाकर सारी सुख-सुविधाएँ जुटा लेने की एक अंधी दौड़ जारी है। अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है। बच्चे घर मे रहते हुए भी अकेले हैं। स्नेह और मार्गदर्शन के अभाव में उनमें नकारात्मक भाव खूब विकसित हो रहे हैं। ऐसे माहौल के हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि बच्चों का विचार तंत्र समुचित तरीके से विकसित हो। उनमें सोचने, समझने, अच्छे संस्कार पाने के लिए सद्साहित्य को पढ़ने के लिए ललक पैदा हो।

आज चैनलों पर, पत्र-पत्रकाओं में, बालसाहित्य की गोष्ठियों और बाल कल्याण के आयोजनों में यह बहस अक्सर होती है कि नये समय और नये तकनीकी-विस्फोट ने बच्चों के लिए विचलित होने की परिस्थितियाँ पैदा की हैं। अब समय का चक्र पीछे तो नहीं मोड़ा जा सकता है। कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट, टी. वी., सिनेमा आदि के जरिये जो तरह-तरह की दुनिया खुलती है, उसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के भाव हैं। यहीं पर अभिभावक और शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इन बच्चों को स्नेह, साथ और आपका सम्बल चाहिए। बच्चों के लिए आवश्यक संसाधन जुटा देना ही पर्याप्त नहीं है। उन्हें भावनात्मक व आत्मीय साथ भी चाहिए। बच्चों को समझाना होगा कि आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया में क्या फर्क है। उनमें मित्रता, सहभागिता, सहयोग, अनुशासन, आत्मविश्वास आदि के जरूरी बीज बोने होंगे और इस कार्य में 'बालसाहित्य' ही अहम भूमिका निभा सकता है और निभा रहा है। बालसाहित्य बच्चों की कल्पनाशीलता तथा मानसिक क्षितिज को विकसित करने में सहायक होता है। बच्चों में बेहतर संस्कार एवम चरित्र निर्माण के साथ ही नई पीढ़ी के निर्माण में बालसाहित्य की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

'बालसाहित्य' से आशय बच्चों के लिए लिखा जाने वाला, बाल मनोविज्ञान की समझ के साथ बालमन की अभिव्यक्ति करने वाला साहित्य है। बालसाहित्य वही कहा जायेगा जिसमें बालकों के कोमल मन के साथ-साथ उनके परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई हो। जिसे बालक सहज रूप से पसंद करे। आज प्रचुर मात्रा में बालसाहित्य

प्रकाशित हो रहा है। बावजूद इसके बच्चों तक 'उत्कृष्ट बालसाहित्य' नहीं पहुँच पा रहा है। इसके लिए सीधा-सीधा दोष पालकों, शिक्षकों व रचनाकारों का भी है।

अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को आज महंगे इलैक्ट्रोनिक खिलौने, गेम्स, कपड़े, टू मिनिट नूडल, ले'ज तो खरीद कर दे देते हैं लेकिन स्वस्थ मनोरंजन के लिए अच्छी बाल पत्रिकाएँ अथवा पुस्तकें खरीद कर नहीं देते। बच्चों को जब किताबें उपहार में दी जाती हैं तो उन्हें एक अजीब किस्म के फीके से उत्साह से ही स्वीकार किया जाता है, इस भाव को भी दूर करना होगा। जब प्रौढ़ आयु के अभिभावकों, शिक्षकों में ही पुस्तकों के पठन-पाठन की रुचि का अभाव है तो बालकों में पुस्तकों के पठन-पाठन के प्रति रुचि कैसे उत्पन्न की जा सकती है।

सबसे पहली आवश्यकता पठन-पाठन की परंपरा को एक आंदोलन के रूप में पुनर्जीवित करने की है। बालकों में पुस्तकों के प्रति रुचि नहीं है तो उनके प्रति वितृष्णा भी नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों के आस-पास इस तरह का वातावरण निर्मित किया जाए कि वे स्वतः पुस्तकों की ओर आकृष्ट हों, उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित हों। इसके लिए अभिभावकों, शिक्षकों, लेखकों, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवम स्वयमसेवी संस्थाओं द्वारा गाँवों, शहरों में बालसाहित्य की गोष्ठियाँ आयोजित की जाएँ। बच्चों की कार्य शालाएँ आयोजित की जाएँ। नई पुस्तकें पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित व पुरस्कृत किया जाए। वहीं अच्छे लेखकों, इस क्षेत्र में निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले व्यक्तियों, संस्थाओं को सम्मानित किया जाए।

इस तरह के प्रयास कई जगह हो भी रहे हैं, जो स्तुत्य हैं। यदि बालकों के हाथों में अच्छे बालसाहित्य की पुस्तकें होंगी तो एक पुस्तक-संस्कृति का विकास तो होगा ही, बच्चे भी पुस्तकों से दूर नहीं रह सकेंगे। हमें यह बात ध्यान में रखनी होगी कि बालसाहित्य नहीं रहा तो उसके रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी आज तक हस्तांतरित हो रही संस्कृति भी नहीं रहेगी और तब मानवता, समाज, राष्ट्र और हम.....?? बालसाहित्य के रूप में संजोए गए शिशु गीत, लोरियों, बालगीत, कविता, कहानियाँ, नाटक, संस्मरण, यात्रा वृतांत, लोक कथाएँ रूपी अमूल्य धरोहर काल कलवित न हो जाए। आने वाली पीढ़ी के हाथों यह संपदा हमें सुरक्षित सौंपनी है।

चित्रा प्रकाशन
आकोला-312205 (चित्तौड़गढ़), राजस्थान
मोबाइल-9828219919
मेल- rajkumarjainrajn@gmail-com

कठिन सवाल -लोकेष्णा मिश्रा

सोचू सोचा सोचाराम
सोचे हरदम
ना करे आराम

कितना अच्छा होता, साथी
जो कुछ चीजें
गुरुत्वाकर्षण बल से
बच जातीं
जामुन, लीची, चीकू,
खिन्नी
फालसे, काफल जैसे फल
पकते ही खुद गिर जाते !
खूब मजे से
हमसब खाते ।

देखू देखा देखराम
देखे इत-उत
ना ले आराम
तारे गिन-गिन
हुआ हैरान
कहाँ से गिने
कहाँ से छोड़े?
कहते सब हैं
अनगिन तारे
पर देखू बेचारा !
दशक लगा ना पावे

चलता चालू चलतराम
नापे रस्ता, कहता है
आराम, हराम
सड़क ये काली
डाबर वाली
कहाँ को जाती
कहाँ से आती
आती है या
ये जाती
कैसे सुलझे
अजब पहेली
बतलाओ कुछ
अरी ! सहेली

द्वारा हरेंद्र मिश्रा
गौजाजाली बिचली, बरेली रोड, हल्द्वानी,
नैनीताल-263139, मो. 7906458700

बच्चों में डर की समस्या -चन्द्र प्रभा सूद

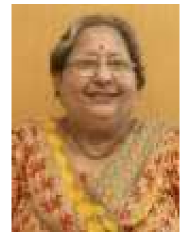

बच्चे का डर जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मान्यता है कि जन्म के पश्चात् कुछ समय तक उसे पिछले जन्मों की अच्छी-बुरी बातें याद आती रहती हैं, इसी कारण वह बिना बात के कभी हँसने लगता है तो कभी रोने लगता है। कभी-कभी डर के मारे चौंक जाता है और रो पड़ता है।

सुनने में शायद आप सबको अटपटा लगेगा पर सच्चाई यही है कि प्राय: माताएँ बचपन से ही अपने मासूमों को अनजाने में घुट्टी में डर पिला देती हैं। बचपन का वह डर उनके हृदय में ऐसा घर कर जाता है कि आयुपर्यन्त वह बच्चा किसी-न-किसी बात पर डरता रहता है।

छोटा बच्चा जब थोड़ी-थोड़ी बात समझने लगता है और बोलने लगता है, तब उसकी मासूम शरारतें सबका ही मन मोह लेती हैं। प्राय: बच्चे रात को देर तक खेलते रहते हैं और जागते रहते हैं। जब तक वे नहीं सोते तब तक किसी और को भी नहीं सोने देते। उन्हें सुलाने के लिए माता को अनेक यत्न करने पड़ते हैं। कभी वह उसे लोरी सुनाती है तो कभी कहानी। कभी लाइट बन्द करके उसे सोने के लिए प्रेरित किया जाता है। जब उसे सुलाने के सारे प्रयत्न असफल हो जाते हैं तब माता उसे किसी भी अनजान व्यक्ति अथवा किसी वस्तु का डर दिखाकर सुलाने का प्रयास करती है।

यहीं से डर का बीज उस नासमझ बच्चे के मन में गहरे बैठ जाता है। उसे ऐसा लगने लगता है कि यदि वह नहीं सोएगा तो उसका शायद अनिष्ट हो जाएगा या कोई को उसे पकड़कर ले जाएगा।

इसी क्रम में बारबार किसी-न-किसी से वह डरता रहता है। अपनी गलती के लिए अपने बड़ों से अथवा अध्यापकों से डरना तो उचित है। उसके लिए उसको पछताना चाहिए और उनसे माफी माँगकर, भविष्य में उसे न दोहराने का वचन भी देना चाहिए। ऐसा करना उस बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है। यह गुण हर बच्चे को अपनाना चाहिए। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चे को इस गुण को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

बच्चे प्राय: अनजान व्यक्ति को देखकर डरते हैं क्योंकि उनके मन में इस बात का भय रहता है कि शायद वह उसे उठाकर ले जाएगा और मार डालेगा। इसलिए शीघ्र ही उसका हाथ छुड़ाकर भागने का प्रयास करते हैं।

बच्चे कुत्ते, बिल्ली, बन्दर आदि जानवरों से डरते हैं। उन्हें डर लगता है कि यदि वे काट लेंगे तो इंजेक्शन लगवाने पड़ जाएँगे और इंजेक्शन से बच्चे तो क्या बड़े लोग भी डरते हैं। इसलिए वे उनसे बचकर निकलते हैं। बच्चे काक्रोच और चूहे आदि जीवों से भी डरते हैं। सड़क पर चलने वाले गाय, भैंस, गधा, घोड़ा, हाथी आदि पशु भी किसी को टक्कर मारकर नुकसान पहुँचा सकते हैं इसलिए उनसे बचने की हिदायत बच्चों को दी जाती है।

सड़क पर चलने वाले वाहनों से बच्चों को डराने के स्थान पर उन्हें चलते समय उनसे सावधानी बरतने का परामर्श देना चाहिए। यदि वे लापरवाही से सड़क पर चलेंगे तो उन्हें चोट लग सकती है या जान भी जा सकती है।

बच्चे के मन में यदि बहुत अधिक डर समा जाए तो वह बात-बात पर चौंकने लगता है। जरा-सी डाँट पड़ने का अंदेशा हो तो वह काँपने लगता है। कभी-कभी कोई बच्चा डर के कारण डिप्रेशन में चला जाता है। नित्य प्रति माता-पिता की आपस में मार-कुटाई होना, गाली-गलौच करना या चीख-चिल्लाहट भी बच्चे के डर का कारण बन जाते हैं। बच्चों के सामने ऐसे झगड़ों से बचना चाहिए।

माता-पिता को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ तक हो सके बच्चे के मन में किसी भी तरह का डर घर न कर पाए। सदैव यह यत्न करना चाहिए। बच्चे को प्यार से अपने पास बिठाकर किसी भी विषय के हर पहलू के बारे में समझाना चाहिए। बच्चे को अच्छे और बुरे दोनों ही पक्षों की जानकारी दे देनी चाहिए। फिर उस बच्चे के विवेक पर इस बात को छोड़ देना चाहिए कि वह किसका चुनाव करता है।

A 107, Stone oaks Apartment,
Naganathpura, Hosa road, near Bosch
factory gate5, Bangalore-560100
Email % cprabas59@gmail-com

पीछे वाली सीट–विद्या शर्मा

दोस्तो आप सब को अपना स्कूली जीवन तो याद ही होगा और याद होगी कक्षा की वो पीछे वाली सीट, जिस पर बैठने वाला या तो लड़ने झगड़ने वाला होता या फिर जिनको कक्षा में सबसे फिसड्डी समझा जाता पढ़ने में।

इन बच्चों को ना पढ़ने में दिलचस्पी होती ना किसी टीचर को इन्हें। पढ़ाने में और तो और अध्यापक हमेशा इस जुमले का प्रयोग करते कि, नहीं पढ़ना तो जो पीछे बैठ जाओ इन लोगों के साथ यहाँ आगे क्या कर रहे हो? इन पीछे की सीट वाले बच्चों का दो काम नियमित होता था.... काम ना करके आना और मार खाना।

यह बच्चे भी और बच्चों की तरह स्कूल तो रोज आते थे और सभी बच्चों के साथ कक्षा में अध्यापक द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों को पढ़ते और सुनते थे लेकिन वह कभी भी मास्टर के प्रिय नहीं बन सके। कारण कि उनकी समझ में कुछ नहीं आता। नतीजा या तो फेल हो जाते या फिर बड़ी मुश्किल से अगली कक्षा में पहुँच पाते जिस कारण यह बुरे बच्चों या फिर कम दिमाग वाले बच्चों की श्रेणी में आ जाते।

आज का मेरा लेख इन्हीं पीछे की सीट पर बैठने वाले बच्चों पर आधारित है जिन्हें कभी कक्षा में ना सम्मान मिला ना अच्छा दोस्त यहाँ तक कि उन्हें तो अगली पंक्ति पर बैठने की भी इजाजत नहीं और तो और घर, परिवार मोहल्ले में भी इनकी इज्जत बस बचते-बचते बचती।

लेकिन एक सवाल मुझे हमेशा परेशान करता है, वह यह कि आखिर इन्हें समझ क्यों नहीं आता या इन्हें समझ नहीं आता तो किसी ने उन्हें समझाने की कोशिश क्यों नहीं की? टीचर रोज-रोज पिटाई तो कर देते पर रोज उसे समझाया क्यों नहीं? क्यों नहीं कहा कि तुम थोड़ी और मेहनत करो। माँ-बाप ने भी इसे सच मान लिया कि हमारा बच्चा तो है ही नालायक ।

एक क्षण के लिए आप सभी विचार करें उस बच्चे के बारे में जिसे हर जगह उपेक्षा और तिरस्कार मिले जबकि उसका दोष बस इतना है कि उसे बाकी बच्चों से थोड़ी देर में समझ में आता है। हम सब उस बच्चे को दोषी करार देते हुए उसे सजा सुना देते हैं पर क्या किसी एक ने भी यह कोशिश की कि चलो उसको और पढ़ाते हैं या अलग तरह से पढ़ाते हैं, पर ऐसा नहीं। बच्चे को समझ नहीं आया तो, यह बच्चे की गलती है? टीचर या हम बड़े, यह मानने को तैयार ही नहीं होते कि यह कोई कमी नहीं है बस वह बच्चा औरों से थोड़ा देर से समझता है। हम तो बस गलतियाँ ही गिना सकते हैं बस, पर उसे सुधारने की कोशिश नहीं करते।

मेरा सभी अध्यापकों और माता-पिता से अनुरोध है कि ऐसे बच्चों को दुत्कारें नहीं, बल्कि प्यार करें। थोड़ा और प्रयास करें, उन्हें उत्साहित करें न कि उनका अपमान करें। हर व्यक्ति अलग अलग व्यक्तित्व लिए होता है, इसलिए उन्हें समझ कर उनके साथ सामान्य व्यवहार करें। अगर कोई बच्चा जल्दी नहीं समझ पाता तो उसे समय दें, सहयोग दें, उसे उसके मुताबिक पढ़ाएँ।

उसका आत्मविश्वास तोड़े नहीं, यह कहकर कि तुममें दिमाग नहीं है, बल्कि उसका हौसला बढ़ाएँ यह कहकर कि तुम भी सीख सकते हो और देखिएगा वह बच्चा जरूर आगे बढ़ जाएगा।

मैंने अपने अध्यापन काल में ऐसे कई बच्चों को आगे बढ़ते देखा है। जब वे मेरे पास पढ़ने आये थे तब उन् बच्चों को शुरुआत में कुछ भी नहीं आता था यहाँ तक कि उन्हें कोई टीचर या ट्यूटर ट्यूशन तक नहीं देते थे पर थोड़ी मेहनत से वह बच्चे भी आज सामान्य बच्चों की तरह पढ़ लिख रहे हैं और आज भी मुझसे मिलने आते हैं।

बल्लभगढ़ फरीदाबाद
हरियाणा 121004
अपकलं7९ींतउं/हउंपस.बवउ
8510868240

"बच्चे भावी राष्ट्र के निर्माता हैं। अत: हमारा कर्त्तव्य है कि हम, अपने व्यवहार एवं क्रियाकलापों के माध्यम से वर्तमान में उन्हें वह सब सिखाएँ, जैसा भविष्य में देखना चाहते हैं।"

राजस्थान में बाल साहित्य के बढ़ते कदम-गोविंद भारद्वाज

आधुनिक राजस्थान के एकीकरण के अंतिम चरण के साथ ही राजस्थान स्वावलम्बी होता चला गया। ये स्वावलंबन आर्थिक, राजनीतिक, समाजिक, साहित्य एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में निर्बाध ढंग से चलता आ रहा है। विश्व पटल पर राजस्थान के साहित्य की एक अलग पहचान है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में एक विशिष्ट विधा है बाल साहित्य। बाल साहित्य के क्षेत्र में भारतवर्ष में पिछले सात दशकों में जो कार्य राजस्थान की वीरभूमि में हुए हैं, इतने कार्य कहीं और नहीं हुए है। राजस्थान के बाल साहित्यकारों ने गागर में सागर भरते हुए उल्लेखनीय कार्य किए हैं।

राजस्थान के जितने बाल साहित्यकारों को मैंने पढ़ा और जाना है उनमें अजमेर में बाल साहित्य के पुरोधा आदरणीय मनोहर वर्मा जी रहे हैं। उन्होंने बाल साहित्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सौ से अधिक पुस्तकें लिख चुके वर्मा जी ने राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर से निकलने वाली मधुमती का बाल साहित्य विशेषांक निकाला। इसी शहर से आधुनिक बाल साहित्यकारों में गोविंद भारद्वाज, उमेश चौरसिया और पूनम पांडे हैं। गोविंद भारद्वाज व उमेश चौरसिया को बाल साहित्य के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी के पुरस्कार मिल चुके हैं। नागौर से पवन पहाड़िया, मेड़ता से चाँद मोहम्मद घोसी, सोजत सिटी से अब्दुल समद राही भी बहुत सक्रिय हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. अखिलेश पालरिया जी ने इस वर्ष दो सितम्बर को अखिल भारतीय बाल कहानी प्रतियोगिता सम्मान समारोह का आयोजन किया, जो अपने आप में अनुकरणीय योगदान है।

मेवाड़ की वीरभूमि से डॉ. भैरूंलाल जी गर्ग बाल साहित्य की सेवा काफी लम्बे समय से कर रहे हैं। उनके द्वारा प्रकाशित मासिक बाल पत्रिका बालवाटिका राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान के बाल साहित्य की अलख जगा रही हैं। डॉ. गर्ग प्रतिवर्ष अपने बलबूते पर राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी पिछले दो दशकों से कर रहे हैं। सलूम्बर (उदयपुर) में बाल साहित्य की अनोखी अलख जगाने वाली डॉ. विमला भंडारी जी भी द्वारा भी प्रतिवर्ष बाल साहित्य की विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित कर अखिल भारतीय स्तर का बाल साहित्यकार सम्मेलन व सम्मान समारोह आयोजित किए जाते हैं। इस कड़ी में डॉ. सत्यनारायण सत्य, नंद किशोर निर्झर आदि उल्लेखनीय है। राजस्थान के एक और नामचीन बाल साहित्यकार हैं राजकुमार जैन राजन। श्री राजन भी स्वयं के बल पर राष्ट्रीय बाल साहित्यकारों के लिए प्रतिवर्ष सम्मान समारोह का आयोजन करते रहे हैं। बाल साहित्य के उन्नयन के लिए आपने चित्रा प्रकाशन के माध्यम से भी बाल साहित्य को बढ़ावा दिया है। महिला बाल साहित्यकारों में वर्तमान में जोधपुर में निवास कर रही श्रीमती संगीता सेठी ने भी बाल साहित्य के लिए स्वयं को समर्पित किए हुए है। बीकानेर को बाल साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी बनाने में इंजीनियर आशा शर्मा का नाम भी उल्लेखनीय है।

कोटा में भी बाल साहित्य के क्षेत्र में अनुपम कार्य हुए हैं। वरिष्ठ बाल साहित्यकार श्री भगवती प्रसाद गौतम, दिनेश विजयवर्गीय, राम गोपाल राही बूँदी, शिवचरण सेन शिवा झालावाड़ में बाल साहित्य को राजस्थान में आगे ले जा रहे हैं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर बाल साहित्यकारों का केंद्र रहा है। श्री सीता राम गुप्त, तारादत्त निर्विरोध ने बालसाहित्य को नई ऊँचाइयाँ दीं तथा अब श्री प्रभात गुप्त एवं अन्य कई साहित्यकार बालसाहित्य का भंडार भर रहे है। राजसमंद से राष्ट्रीय बाल पत्रिका बच्चों का देश के प्रधान संपादक संचय जैन भी राजस्थान में बाल साहित्य को बढ़ा रहे हैं। पिछले तीस वर्षों से प्रकाशित होने वाली बाल साहित्य की इस पत्रिका ने भी देश में राजस्थान की धूम मचा रखी है। संपादन का काम देख रहे श्री प्रकाश तातेड़ मेवाड़ के प्रमुख बाल साहित्यकारों में एक हैं।

दौसा के अंजीव अंजुम, गंगानगर से डॉ. कृष्ण कुमार आशु एवं हनुमानगढ़ के बाल साहित्यकार श्री दीनदयाल शर्मा ने हिन्दी व राजस्थानी में खूब बालसाहित्य सृजन किया है। संगरिया (हनुमानगढ़) से बाल साहित्य के गगन मंडल पर श्री गोविंद शर्मा प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार हैं। जिनको पढ़कर हम बड़े हुए हैं। श्री शर्मा ने पैंतालीस से

अधिक पुस्तकें लिखी हैं। विभिन्न संस्थाओं से सम्मान प्राप्त गोविंद जी को राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर से बाल साहित्य का प्रतिष्ठित 'शम्भूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार', भारत सरकार के प्रकाशन विभाग का प्रतिष्ठित पुरस्कार भारतेन्दु बालसाहित्य पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उनको हाल ही में केन्द्रीय साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार देने की घोषणा की गयी है। ये पुरस्कार प्राप्त करने वाले गोविंद शर्मा राजस्थान के पहले बाल साहित्यकार हैं जिनको हिन्दी के क्षेत्र में दिया जाएगा।

गोविंद शर्मा के नेतृत्व में किए गए प्रयास के परिणाम स्वरूप माननीय मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत ने जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी खोलने की घोषणा की है। राजस्थान का बाल साहित्य उत्तरोतर आगे बढ़ता रहेगा।

पितृकृपा, पीली खान,
नई बस्ती, पुलिस लाइन,
अजमेर, राजस्थान-305001

बाल गीत

मेरे साथ कई लफ़ड़े हैं

-सौरभ पाण्डेय

मेरे साथ कई लफ़ड़े हैं
किसकी-किसकी बात करूँ मैं,
सबके सब बेहद तगड़े हैं!
एक भोर से लगे पड़े हैं
घर में सारे लोग बड़े हैं
चैन नहीं पलभर को घर में
मानों आफ़त लिये खड़े हैं
हाथ बटाया खुद से जब्भी, 'काम बढ़ाया' थाप पड़े हैं
मेरे साथ कई लफ़ड़े हैं !!
घर-पिछवाड़े में कमरा है
बिन बिजली अंधा-बहरा है
इक दिन घुस बैठा तो जाना.. .
ऐंवीं-तैंवीं खूब भरा है
पर बिगड़ी वो सूरत, देखा.. बालों में जाले-मकड़े हैं
मेरे साथ कई लफ़ड़े हैं !!
फूल मुझे अच्छे लगते हैं
परियों के सपने जगते हैं
रंग-बिरंगे सारे सुन्दर
गुच्छे-गुच्छे वे उगते हैं !
उन फूलों से बैग भरा तो सबके सब मुझको रगड़े हैं..
मेरे साथ क लफ़ड़े हैं !!

एम-2/ए-17,
प्रयागराज विकास प्राधिकरण कॉलोनी,
नैनी, प्रयागराज-221008
मोबाइल : 9919889911

झूम-झूमकर मच्छर आते

-डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

झूम-झूमकर मच्छर आते।
कानों में गुंजार सुनाते।।

नाम ईश का जपते-जपते।
सुबह-शाम को खूब निकलते।।

बैठा एक हमारे सिर पर।
खून चूसता है जी भर कर।।

नहीं यह बिल्कुल भी डरता।
लाल रक्त से टंकी भरता।।

कैसे मीठी निंदिया आये?
मक्खी-मच्छर नहीं सतायें।

मच्छरदानी को अपनाओ।
चौन-अमन से सोते जाओ।।

अमर भारती चिकित्सालय,
टनकपुर रोड, खटीमा, जिला उधमसिंह नगर
उत्तराखण्ड मो. 7906380576

शहतूत का पेड़ –अनिता तोमर 'अनुपमा'

''पागल कहीं का।'' इला ज़ोर से चिल्लाते हुए बोली, ''कितनी बार तुझे कहा है कि मेरी किताबों को मत छुआ कर।''

गणेश ने पलटकर इला के चेहरे की ओर देखा और फिर उसे जीभ चिढ़ाते हुए बोला,

''इल्ली–इल्ली, माचिस की तीली
बिना दुम वाली काली बिल्ली।''

इससे पहले कि इला कुछ कहती, गणेश वहाँ से भाग खड़ा हुआ। यह कोई नई बात नहीं थी। इला और गणेश अकसर इसी तरह आपस में झगड़ते रहते थे। दोनों इस बड़ी–सी कोठी में बने सर्वेंट क्वार्टर में रहते थे। इला के पिता यहाँ चौकीदार थे और गणेश के पिता खानसामा। दोनों बच्चे पास ही के सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। इला छठी कक्षा में थी और गणेश चौथी में। इस विशाल कोठी में केवल उन दोनों के ही परिवार रहते थे। गणेश के सिवा इला का हमउम्र कोई भी बच्चा नहीं था जिसके साथ वह खेल सके।

कोठी बड़ी ज़रूर थी परंतु नौकरों के बच्चों को केवल पीछे बने हुए भाग में ही रहने की अनुमति थी। यहाँ तक कि बाहर भी पिछले गेट से ही आया–जाया जा सकता था। कोठी में जब भी काई पार्टी होती, दोनों के मज़े आ जाते। गणेश के पिता केक, बादाम–पिस्ते का हलवा, पनीर, पुलाव, पूड़ी–सब्ज़ी न जाने कौन–कौन से पकवान चुपके–से निकालकर घर तक पहुँचा देते। दोनों बच्चे चुपचाप सबसे ऊपर वाली छत पर ले जाकर पार्टी का आनंद उठाते।

जब कभी कोठी का मालिक अपने परिवार के साथ महीने–भर के लिए बाहर जाता तब दोनों आज़ाद पंछी की भाँति पूरी कोठी में बेधड़क घूमते। लॉन में रखे झूले पर खूब झूलते। ऐसा लगता मानो ये कोठी उन्हीं की है। परन्तु जब गणेश अपने दादा–दादी के गाँव जाता तब इला बिलकुल अकेली पड़ जाती।

गणेश पीछे–से आकर इला के कान में ज़ोर से ''हू'' कहकर चिल्लाया। इससे पहले इला उसे कुछ कहती, वह इला को मनाने के अंदाज़ में बोला, ''चल नारंगी तोड़ने चलते हैं।'' इला ने सिर हिलाकर मना करते हुए कहा, ''नारंगी खट्टी हैं, मुझे नहीं खानी।''

गणेश कुछ सोचने लगा फिर बोला, ''चल शहतूत तोड़ने चलते हैं। बगल–वाली कोठी में शहतूत के पेड़ पर बड़े–ही मीठे, काले और लम्बे–लम्बे शहतूत लगे हैं।''

इला ने आँखें दिखाकर कहा, ''पागल है क्या! तुझे पता है ना उस कोठी के चौकीदार की एक बार बाबा से लड़ाई हो चुकी है, वो हमें घुसने भी नहीं देगा।''

गणेश ने कहा, ''तू चिंता मत कर, हम लोग सामने के गेट से नहीं जाएँगे बल्कि अपनी कोठी के पीछे वाली दीवार को फाँदकर पिछली तरफ से जाएँगे।''

इला बोली, ''नहीं–नहीं बाबा...मुझे डर लगता है, अगर माँ को पता चला तो बहुत मार पड़ेगी।'' गणेश ने उसे समझाते हुए कहा, ''किसी को भी पता भी नहीं चलेगा, वैसे भी तुम्हारी माँ दोपहर में सो जाती हैं। तुम्हें पता है! उस पेड़ के शहतूत बड़े ही काले, रसीले और मीठे हैं और सबसे बड़ी बात दोपहर के समय उस कोठी में कोई भी नहीं रहता।''

शहतूत की मिठास मानो इला को अपनी ओर खींच रही थी। वह चाहकर भी शहतूत खाने के मोह से खुद को छुड़ा नहीं पा रही थी। दोपहर को माँ के सोते ही दबे–पाँव कमरे से निकलकर वह गणेश के पीछे चल पड़ी।

गणेश ने एक टूटी हुई कुरसी दीवार के किनारे रखी और सीमेंट की जाली के सहारे चारदीवारी पर चढ़ गया। दीवार ज्यादा ऊँची नहीं थी। फिर उसने हाथ के सहारे से इला की दीवार पर चढ़ने में मदद की। दोनों कूदकर कोठी के पिछले भाग में दाखिल हुए। शहतूत के पेड़ के नीचे पहुँचे तो देखा वहाँ ढेर सारे शहतूत गिरे पड़े थे परन्तु उनमें से अधिकतर गले हुए थे। जो थोड़े बहुत अच्छे थे वे मिट्टी में सने हुए थे।

गणेश ने इला की ओर देखा। उसके चेहरे पर गुस्से के भाव उभर रहे थे। इससे पहले कि वह कुछ कहती गणेश बोला, ''रुक तो सही, कुछ और सोचता हूँ।''

शहतूत का पेड़ बहुत बड़ा और घना था। उस पर चढ़ना भी आसान नहीं था। गणेश ने ऊपर की ओर निगाहें घुमाई। अचानक उसकी आँखें चमकने लगीं। वह कोठी के पिछले भाग में बने सर्वेंटस क्वार्टर की सीढ़ियों की ओर तेज़ी से बढ़ने लगा। इला की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह बड़बड़ाती हुई गणेश के पीछे चल दी।

दोनों सीढ़ियों से कोठी की छत तक पहुँच गए। छत पर शहतूत का पेड़ लंबे, काले और रसीले शहतूतों से लदा हुआ मानों अपनी बाँहें फैलाए उन दोनों का ही इंतज़ार कर रहा था। इला की छोटी- छोटी आँखें इतने सारे शहतूत देखकर चमक उठी। दोनों शहतूत तोड़-तोड़कर खाने लगे। इला ने ढेर सारे शहतूत तोड़ लिए। उसके दोनों हाथ शहतूत से भर गए।

वह गणेश से बोली, ''इन्हें घर कैसे लेकर जाएँगे। अगर एक पन्नी मिल जाए तो हम बहुत सारे शहतूत तोड़कर ले जा सकते हैं।''

दोनों छत पर ढूँढने लगते है परन्तु उन्हें कोई पन्नी नहीं मिलती। छत की एक ओर एक कमरा बना हुआ था। गणेश की नज़र उस पर पड़ी। कमरे के दरवाजे पर ताला नहीं लगा था केवल बाहर से कुंडी बंद थी। गणेश ने डरते-डरते कुंडी खोलने की कोशिश की।

इला दोनों हाथों में शहतूत थामे डरते हुए बोली, ''घर चलते हैं, मुझे डर लग रहा है अगर किसी ने देख लिया तो बहुत मार पड़ेगी।'' इतने में दरवाज़े पर लगी कुंडी खुल गई। दोनों कमरे में दाखिल हुए, कमरा बिलकुल खाली था।

ज़मीन पर केवल एक बिस्तर बिछा हुआ था। मेज़ पर पानी की बोतल और एक गिलास रखा था। एक छोटी अलमारी कोने में रखी हुई थी। दोनों ने पन्नी ढूँढने की कोशिश की परन्तु कहीं नहीं मिली।

अचानक गणेश की नज़र उस कमरे में ही एक दरवाज़े पर पड़ी। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला उसकी नज़र बिस्तर पर लेटी हुई एक वृद्धा पर पड़ी। सूखी हड्डियों के ढाँचे-सा उसका शरीर बहुत ही डरावना लग रहा था। दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनते ही उसने अपनी गरदन उठाकर उस ओर देखने की कोशिश की। उसकी अंदर तक धँसी आँखों को देखकर इला डर के मारे गणेश के पीछे छिप गई।

बुढ़िया ने धीमी आवाज़ में पूछा, ''कौन हो तुम?'' गणेश ने हकलाते हुए कहा, ''म.... म माफ कर दीजिए। वो...वो हम आपके बगलवाली कोठी के सर्वेंट क्वार्टर में रहते हैं। हम यहाँ शहतूत तोड़ने आए थे।'' बुढ़िया ने दोनों को ऊपर से नीचे तक निहारा। फिर उसकी नज़र इला के हाथों पर टिक गई। बुढ़िया की आँखें चमक उठीं। उसने धीमी आवाज़ में पूछा, ''क्या! पेड़ पर शहतूत लगे हैं?'' उत्तर में गणेश ने केवल सिर हिला दिया।

बुढ़िया बोली, ''इस पेड़ के साथ बड़ी ही गहरी यादें जुड़ी हैं। इसे मैंने अपने मायके से लाकर अपने हाथों से यहाँ लगाया था। पिछले कुछ सालों से मैं बिस्तर पर ही पड़ी हूँ। इस कमरे से बाहर तक नहीं निकली। मेरे बच्चों के पास मेरे लिए समय ही नहीं है। एक नौकरानी मेरे लिए रख छोड़ी है। मेरी आँखें इसे देखने के लिए तरस गई। मरने से पहले एक बार बाहर जाकर इसे देखना चाहती हूँ।

बुढ़िया कुछ देर के लिए चुप हो गई। गणेश ने इला की ओर देखा। इला ने आँखों के इशारे से उसे चलने के लिए कहा। इतने में उनके कानों में बुढ़िया के धीमे स्वर सुनाई पड़े।

''क्या तुम दोनों मुझे शहतूत का पेड़ दिखा सकते हो?'' यह सुनते ही दोनों असमंजस में पड़ गए।

बुढ़िया की कातर आँखों में से आँसू बहने लगे। इला की नज़र बुढ़िया की नज़र से मिली। उसे उन आँखों में बेचारगी नज़र आई। गणेश कुछ सोच ही रहा था कि अचानक उसकी नज़र पास रखी आरामकुर्सी पर पड़ी। दोनों ने सहारा देकर बुढ़िया को उस कुर्सी पर तकिए के सहारे से बिठा दिया।

फिर दोनों कुर्सी को घसीटते हुए बाहर तक ले आए। बाहर अभी धूप थी। रोशनी के कारण बुढ़िया की आँखें चौंधिया गईं। काफी देर बाद धीरे-धीरे उसने अपनी आँखें खोलने की कोशिश की।

शहतूत के पेड़ को देखकर उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। गणेश और इला समझ नहीं पा रहे थे। काफी देर बुढ़िया चुपचाप उस पेड़ को निहारती रही। इला ने डरते-डरते पूछा, ''दादी! क्या हम अपने घर चले जाएँ?''

बुढ़िया की आँखों में ढेर सारा प्यार छलक रहा था। मुस्कुराकर उन्होंने अपनी पलकें झपका दी। दोनों ने उन्हें वापस बिस्तर पर लिटा दिया। बुढ़िया ने उन्हें ढेरों आशीष

दिए और बोली, ''अब तुम जाओ, मैं सोना चाहती हूँ।" दोनों बोझिल मन से वापस लौट आए।

अगले दिन जब दोनों स्कूल से लौटे तो देखा कि पास की कोठी में बड़ी चहल-पहल थी। उन्हें लगा शायद कोई पार्टी है। अकसर ही वहाँ पार्टियाँ होती रहती थीं।

बाहर जूते निकालते हुए इला के कानों में माँ की आवाज़ सुनाई दी। माँ शायद किसी से बात कर रही थी।

'' चलो अच्छा ही हुआ बेचारी बुढ़िया चली गई, वरना एक कमरे में पड़े-पड़े दुर्गति ही हो रही थी।"

इला को अपने कानों पर बिलकुल भी विश्वास नहीं हो रहा था कि बूढ़ी दादी कल रात को गुज़र गई। शायद उस शहतूत के पेड़ में ही उनके प्राण अटके थे। उसे देखकर वे शांति से गहरी नींद में सो गई।

कमरे में घुसते ही उसकी नज़र कल के तोड़े हुए शहतूतों पर पड़ी, उसकी आँखों से अनायास ही आँसू बहने लगे।

3d gold nest apartment, 4th cross,
wind tunnel road Murgeshpalaya,
Bangalore-560017
9740600407

निराली दीवाली–अंजू खरबंदा

''माँ मुझे 50 रुपये चाहिए।"

''किसलिए? तेरी तो डिमांड ही खत्म नहीं होती। जब देखो एक ही बात- पैसे दे दो।" माँ ने डपटते हुए कहा।

''माँ सुनो तो.....!

''जा, जाकर पढ़ने बैठ। कभी पढ़ाई की बात भी कर लिया कर।"

''माँ प्लीज एक बार सुन लो ना!" बेटा बोला

''अच्छा बोल !"

''माँ कल दीवाली है ना!"

''तो.....?" माँ अपने चिर परिचित अंदाज में बोली।

''हम सब बच्चे अपने कोंचिग सेंटर के साथ स्लम एरिया में जायेंगे!"

''स्लम एरिया में?" माँ ने चौंकते हुए पूछा ।

''हाँ माँ! इस साल हमने दीवाली ऐसे ही मनाने का फैसला किया है।"

''क्या करोगे वहाँ पर!" माँ ने अचंभित होते हुए पूछा।

''माँ हम उनके लिए उपहार लेकर जायेंगे। सोचो उन्हें कितना अच्छा लगेगा ना!" विपुल चहकता हुए बोला।

''हाँ मेरे बच्चे! उन्हें सच में बहुत अच्छा लगेगा।" इतना कहकर माँ ने झट से पैसे निकाल कर विपुल के हाथ में थमा दिये और प्यार से उसका माथा चूम लिया।

207, द्वितीय तल,
भाई परमानन्द कालोनी,
दिल्ली-110009
फ़ोन 9582404164

पूँजी -कुसुम पारीक

''देख लिया न तुम्हारे लाड़ प्यार का नतीजा, मौका होते हुए भी इसे कोचिंग इंस्टीटूट नहीं भेजा, लो अब भुगतो।'' बेटे के दसवीं के नम्बर देखते हुए पति मुझ पर गुस्सा हो रहे थे क्योंकि उसे भी आशानुकूल परिणाम नहीं मिला था।

''जितने मार्क्स लाया है वे अच्छे ही हैं, जाओ बेटा तुम दीदी के रूम में जाओ।" कहते हुए मैंने उसे दूसरे कमरे में भेज दिया। उसके जाने के बाद मैंने पति की ओर देखते हुए कहा, ''कंप्यूटर इसका फ़ेवरिट सब्जेक्ट है और उसमें उसे प्रोग्रामिंग करने का जुनून था जिसे दबाना मैंने उचित नहीं समझा। आप जानते हैं कि हम लोगों ने दो महीने तक कोचिंग संस्थान की फीस भी भरी रखी कि यह कोचिंग चला जाए लेकिन वह नहीं माना, उसके बाद यदि हम जबरदस्ती करते तब या तो बेटे का विश्वास खोते या उसका जुनून।"

''अब इसके मार्क्स कम आए है लेकिन यह कभी भी हमें यह नहीं कह पायेगा कि मुझे आपने मौका नहीं दिया या हमेशा खुद को ही मुझ पर थोपा है।"

''हो सकता है। अब यह पढ़ाई को गंभीरता से लेगा अन्यथा हमारी बात मनवाने में अब हमें भी आसानी रहेगी क्योंकि इसको अपने निर्णय का परिणाम पता है। अब हो सकता है बेटे को अपना लक्ष्य हासिल करने में एक साल ज्यादा लग सकता है लेकिन जो विश्वास की पूंजी हमने पाई है वह अक्षुण्ण रहेगी।" अब पतिदेव भी मुझसे सहमत थे।

बी.-305, राज मोती-2,
पो. वापी, जिला वलसाड-396195
मो.-9974294151

वो मुझसे बोलेगी ? –डा.कुसुम जोशी

नन्हीं अन्वी स्कूल से लौटी तो बहुत उदास थी, हमेशा की तरह माँ बस स्टाप में आयी थी। अन्वी यन्त्रवत बस से उतरी। मम्मा कहते हुये न माँ के पांवों से लिपटी, न चहकी, न बकर बकर स्कूल के बातें कही... चुपचाप माँ का हाथ थामा और घर की ओर चलने लगी।

माँ हैरान! कि शरारती, बकबक करने वाली अन्वी को क्या हो गया? अपने को रोक नहीं पाई बोली, ''क्या बात है अन्वी बेटा इतनी चुपचुप क्यों हो? टीचर ने डाँटा?''

अन्वी ने खामोशी से नही में सर हिला दिया, ''फिर हुआ क्या बेटा...कुछ बोलो,

अन्वी माँ का हाथ छुड़ा कर आगे चलने लगी। रुलाई गले में अटकी हुई थी,जोर जोर से रोने का मन होने लगा। पर माँ के सामने वो भी सड़क में नहीं रोना चाहती थी। अपनी सोसाइटी के गेट में पहुँच कर वह लगभग दौड़ती हुई अपनी बिल्डिंग की लिफ्ट की ओर भागी।

लिफ्ट में कई लोग थे तो फिर माँ ने कुछ पूछना सही नहीं समझा और दोनों चुपचाप लिफ्ट की सरसराहट को सुने रहे थे, दोनों के मन में तूफान सा था, माँ की घबराहट बढ़ती जा रही थी। रोज रोज बढ़ता बच्चों के प्रति अपराध, दिल बैठा जा रहा था,

घर पहुँचने पर माँ ने कहा ''तुम यूनिफॉर्म चेंज करो मैं खाना लगाती हूँ।'' अन्वी ने चुपचाप अपने कमरे में जाकर कपड़े बदले, हाथ मुँह धोकर पंलग में लेट गई। माँ ने खाना गरम कर टेबल पर लगा दिया पर रोज भूख लगी है माँ ... कह कर जल्दी खाना मांगने वाली अन्वी अभी तक आई नहीं,

माँ ने कमरे में झांका, देखा अन्वी बिस्तर में लेटी है, ''हुआ क्या बेटा कुछ बताओ तो....''

''कुछ नहीं हुआ..,''

''कुछ तो हुआ है बच्चे ...तुम्हारा चेहरा बता रहा है।''

''कुछ नहीं हुआ..मेरे पेट में दर्द हो रहा है।''

''झूठ!...मम्मा को बताओ बेटा।''

''कुछ नहीं हुआ मम्मा...पर जब हम लंच ब्रेक में खेल रहे थे तो सौम्या मुझसे नाराज हो गई... और उसने मुझसे कुट्टा कर ली......''

''सौम्या!...वो तुम्हारी बेस्ट फ्रेंड.. पर क्या किया तुमने जो वो गुस्सा हो गई,''

जब हम टाइम पास, खेल रहे थे तो वो दूसरी टीम की लीडर थी और मैं अलग टीम की ..हमारी टीम जीत गई तो वो मुझसे गुस्सा हो गई। कहती है मैंने उसे आउट नहीं करना था क्योंकि हम बेस्ट फ्रेंड हैं...., ऐसा थोड़ी होता है ना माँ, अपनी टीम के साथ चीटिंग कैसे कर सकती हूँ? फिर मैम भी तो डांटती ना..., आपको पता है उसने जमीन से मिट्टी उठा कर कसम खाई कि वो मुझसे कभी बात नहीं करेगी।

ओह अच्छा....तो ये बात है? पर तुमने बहुत अच्छा किया...मेरी बहुत अच्छी-सच्ची बिटिया हो तुम। प्राउड ऑफ यू ..वेरी गुड...कह कर माँ ने अन्वी को गले लगा लिया। अन्वी का सारा गुबार सैलाब की तरह बह निकला और फफक फफक कर रो पड़ी,

''अरे अब क्यों रो रही हो? बताओ.. ??''

''पर अब सौम्या मुझसे कभी नहीं बोलेगी ना....? मेरे साथ कभी अब्बा नहीं करेगी ना...मैं किसके साथ खेलूंगी...??''

''तुम रोओ नहीं, वो तुम्हारी अच्छी दोस्त है ना..वो तुम से नाराज नहीं रह सकती, अगर होगी तो मैं उससे बात करूँगी।''

''सच्ची! आप उससे बात करोगी.. यह कहते हुये अन्वी के रोते हुये चेहरे पर खुशी झिलमिलाने लगी, वो मुझसे बोलेगी ना माँ ...और माँ का हाथ पकड़ वह डायनिंग रूम की ओर बढ़ गयी।

11/224,वसुंधरा,
गाजियाबाद, उ.प्र. 201012,
फो.न. 9810945033

''बच्चे उपदेश से नहीं अनुकरण से सीखते हैं। वे अपने परिवारजनों, शिक्षकों एवं मित्रों को जैसा करते देखते हैं, अनुकरण करने लगते हैं।''

सच्ची दोस्ती -मृणाल आशुतोष

विवेक, रोहित और राहुल तीनों बहुत अच्छे दोस्त थे। तीनों एक ही स्कूल में और एक ही कक्षा आठवीं में पढ़ते थे। तीनों ट्यूशन पढ़ने भी एक ही कोचिंग सेंटर में जाते थे। एक दिन तीनों शाम में जब ट्यूशन पढ़ने कोचिंग पहुँचे तो पता चला कि हेड सर की माँ का देहांत हो गया है। इसीलिए कोचिंग सेंटर दो दिन बंद रहेगी।

रोहित-अरे यार! अब क्या करें? चलो, पार्क में खेलने चलते हैं।

राहुल-नहीं यार! गर्मी का महीना है। चल स्वीमिंग करने चलते हैं। नदी बस दो किलोमीटर ही तो है।

विवेक-नहीं यार! अकेले स्वीमिंग करने नहीं जाऊँगा मैं। मम्मी-पापा साथ में रहते तो जाता।

राहुल-तू डरपोक का डरपोक ही रहेगा। वहाँ और भी बहुत लोग रहते हैं। चल ना मज़ा आएगा।

रोहित-हाँ यार! मज़ा आएगा। चल आज स्वीमिंग करने चलते हैं।

विवेक-लेकिन भीग कर जब वापस जायेंगे तो घर पर क्या बतायेंगे?

रोहित-क्या बतायेंगे। कह देंगे कि सर जी की माँ की डेथ हो गयी। तो हम लोग स्वीमिंग करने चले गए। तू कभी कभार साफ बुद्धू की तरह बात करने लगता है। चल! अब बात न बना।

तीनों दोस्त नदी के किनारे पहुँच गए। भेल पूड़ी बेचने वाले के पास बैग और कपड़े रखकर तीनों नदी की ओर बढ़ने लगे। तभी विवेक ने कहा कि यार तुम दोनों आगे बढ़ो। मैं एक नम्बर से आता है।

दोनों हँसने लगे, ''तैरने का नाम सुनकर ही इसका एक नम्बर आ गया।

विवेक बहाना बनाकर साइड में खड़ी के महिला के पास गया और बोला, ''आंटी, क्या मुझे एक कॉल करने के लिये मोबाइल देंगीं?

महिला-क्यों नहीं बेटा! ये लो।

विवेक ने सबसे पहले अपने पापा को फोन लगाया पर फोन बिज़ी आ रहा था। दोबारा फोन लगाया फिर भी बिज़ी जा रहा था। फिर उसने राहुल के पापा का फोन लगाया तो उन्होंने उठा लिया, ''हेलो! कौन?"

विवेक-अंकल नमस्ते! मैं राहुल का दोस्त विवेक बोल रहा हूँ। हम लोग स्वीमिंग करने पुराने घाट पर आये हैं। राहुल ज़िद करके आ गया है। हमको डर लग रहा है। आप थोड़ा जल्दी आ जाइये न!

अंकल-वैसे तो मुझे अभी किसी जरूरी काम से शहर के बाहर जाना था पर मैं अभी तुरन्त आ रहा हूँ। तुम राहुल को रोक कर रखना। उसने अभी नया नया स्वीमिंग सीखा है, उसे अभी ठीक से तैरना आता भी नहीं है!

जब तक विवेक नदी के किनारे पहुँचता, वह दोनों पानी मे उतर चुके थे। वहाँ पहुँच कर विवेक ने आवाज़ दी, ''अरे यार! एक चुटकुला तो सुनो!''

रोहित-''पागल है क्या? हम लोग अभी स्वीमिंग करने आये हैं या चुटकुला सुनने। स्वीमिंग करने के बाद सुनेंगे तेरे चुटकुले!''

राहुल-''आ जा बेटा! तू भी आ जा पानी में! देख कितना ठंढा पानी है। कसम से मज़ा आ जायेगा।''

विवेक-''अरे! इतनी जल्दी में क्यों हो तुम दोनों। आओ बैठो। बातें करते हैं। फिर स्वीमिंग करेंगे।''

राहुल-''यार तू बैठ कर वहाँ आते जाते लोगों की मुंडी गिन।'' यह कहते ही दोनों दोस्त ठहाका मार कर हँस पड़े।

राहुल और रोहित धीरे धीरे बीच नदी की ओर बढ़ने लगे। विवेक ने उन्हें इशारे से उतनी दूर जाने से मना कर किनारे की आने का इशारा भी किया पर वह दोनों कहाँ सुनने वाले थे। रोहित को तो अच्छे से तैरना आता था पर राहुल अभी नौसिखिया था। वह गहरे पानी में पहुँचते ही अपना संतुलन खोने लगा। वापस आने में उसे बहुत दिक्कत होने लगी। रोहित ने उसे बचाने की कोशिश की पर वह भी समान उम्र का ही था। पकड़ में आ ही नहीं रहा था। अब राहुल को समझ में आने लगा कि उसका बचना मुश्किल है। वह चिल्लाया-बचाओ! पर यह आवाज़ केवल रोहित ही सुन सका। पर वह कुछ कर नहीं पा रहा था। उसको लग रहा था कि अगर उसने राहुल को बचाने की कोशिश की तो वह खुद डूब जाएगा। विवेक आस पास के लोगों को कह रहा था कि मेरे दोस्त को बचा लो। पर वहाँ किसी को शायद ठीक से तैरना आता नहीं था तो कोई उसकी मदद नहीं कर पा रहा थ। तभी वहाँ पर राहुल

के पापा आ गए। जल्दी से कपड़े उतार वह तेज़ी से राहुल की ओर बढ़े। राहुल गहरे पानी मे ऊपर-नीचे कर रहा था। राहुल के पापा को देख रोहित किनारे की ओर आने लगा। राहुल के पापा बड़ी मुश्किल से राहुल को पकड़ कर किनारे लाने में कामयाब हुए। किसी तरह उसकी जान बच गयी थी। वह अपने किये पर बहुत शर्मिंदा था। राहुल के पापा ने विवेक को गले लगाकर कहा, ''थैंक्यू बेटा! आय एम प्राउड ऑफ यू! आज तुम न होते तो मैं राहुल को खो देता।

शिक्षा-छोटे बच्चों को कभी भी अकेले तैरने नहीं जाना चाहिए।

मोबाइल:91-8010814932,
9811324545
मेल: mrinalashutosh9@gmail-com

नया इतिहास बनायेंगे

-गिरिजा शंकर त्रिवेदी

हम बालवीर भारत के नव इतिहास बनायेंगे
नया इतिहास बनायेंगे।

पावन है इसकी माटी
वन-उपवन निर्झर घाटी
निज आन-बान पर मिटना
है युग-युग की परिपाटी
हम अंधकार में भी प्रकाश के फूल खिलायेंगे
नया इतिहास बनायेंगे।

सीधी हैं अपनी राहें
करुणा से भरी निगाहें
जो मिले प्रेम से मिल ले
हैं खुली हमारी बाहें
हम नहीं किसी भी छल-प्रपंच से हाथ मिलायेंगे
नया इतिहास बनायेंगे।

कर्तव्य हमें निज करना
जीवन में फिर क्यों डरना
संघर्षों के पर्वत से
फोड़ेंगे सुख का झरना
हम नये प्रात में नया जागरण शंख बजायेंगे
नया इतिहास बनायेंगे।

हम भारत माँ के बच्चे
हो सकते कभी न कच्चे
लव-कुश अभिमन्यु, भरत से
हैं अपने प्रण के सच्चे
हम मातृभूमि पर फूल बनाकर शीश चढ़ायेंगे
नया इतिहास बनायेंगे।

प्रस्तुतिः-रजनीश त्रिवेदी
वासन्तम्, 42-इन्दर रोड, डालनवाला,
देहरादून-248001

घर में जंगल सजाऊँगा

-नवीन कुमार जैन

सोचता हूँ कि काश कोई
फूल मेरे पौधे में खिल जाता
देखभाल करता मैं उसकी
रोज उसे मैं नहलाता

फूल अगर खिल जाता तो
भौंरा मंडराने आता
भौंरा मंडराने आता
तितली को भी साथ बुलाता

तितली आती उड़कर जाती
चिड़ियों को भी वहीं बुलाती
चिड़ियाँ आकर चहचहातीं
कोयल भी सुनकर आती

कोयल की कुहू-कुहू सुनकर
मोर भी आ जाता वहीं पर
बादल आते बारिश होती
फिर मोर दिखाता नाचकर

होती बारिश और भी पौधे
आस पास में खिल जाते
देखके हरियाली फिर
हाथी घोड़े हिरण भी आते

हाथी दादा फिर मुझको
जंगल की सैर कराते
शेर चीते और भालू से
वो मेरी दोस्ती कराते

भालू के संग मस्ती करता
घोड़े की पीठ पे बैठ जाता
अपने जंगल का राजा बनकर
मुझे बड़ा मजा आता

इसलिए में बड़ा होकर
अपने घर में जंगल सजाऊँगा
अपने हर जन्मदिन पर
एक पौधा जरूर लगाऊँगा

-ओम नगर कॉलोनी,
वार्ड नं.-10, बड़ामलहरा,
जिला-छतरपुर, म.प्र. -4171311
मो.नं. -8959534663

मोबाइल अति प्यारा

-डॉ. राकेश चक्र

शाम-सबेरे, रात-अँधेरे मोबाइल अति प्यारा
जीतू-नीतू सब मित्रों ने मिलकर वक्त गुजारा

हैं तल्लीन गड़ाए आँखें चाहे सिर में पीड़ा
गर्मी की छुट्टी में बच्चे हुए किताबी कीड़ा
खाना-पीना सैर सपाटा उनको नहीं गवारा

कभी लेटकर, कभी बैठकर छत ऊपर चढ़ जाते
मोबाइल की छीना-झपटी आपस में लड़ जाते
पापा-मम्मी दोनों डाँटें थप्पड़ देंय करारा

खेल खेलते नए अनोखे फूहड़ गाने डिस्को
कानाफूसी करके हँसते मोबाइल है चिपको
बचपन पूरा मोबाइल है सूरज चाँद, सितारा

नहीं समझते डांट-डपट को घर में बमचक मचती
द्वन्द युद्ध, तकरार, चकल्लस ताल-मृदंगा बजती
बच्चों की ममता में आखिर माँ का दिल है हारा

अति ने ऐसी मति फेरी है आँखें चश्मा पहने
पढ़ना लिखना छूटा हरदम मोबाइल के सपने
चले डॉक्टर को दिखलाने चढ़ा नजर का पारा

नीतू की माँ पछताती है उसका भी सिर भारी
हम खुद लाए हैं खरीदकर मोबाइल बीमारी
इस आदत से मिल पाएगा अब कैसे छुटकारा

90 बी, शिवपुरी,
मुरादाबाद-244001,9456201857

उल्टा-पुल्टा -डॉ. वन्दना गुप्ता

आटा-बाटा सैर-सपाटा
बिल्ली ने कुत्ते को काटा
चूहा दौड़ा बिल्ली के पीछे
बिल्ली छिप गई पलंग के नीचे
पलंग के नीचे मोटा चोर
भागा उसके पीछे मोर
मोर को देख बादल आया
बंदर ने भी सर खुजलाया
बादल से फिर बरसा शर्बत
चींटी चढ़ गई ऊँचा परबत
परबत पे था रंगा सियार
उसके आगे रखा सिगार
सिगार से निकला फिर धुंआ
उसने आकर पेड़ को छुआ
पेड़ पे लटकी ढेर सी टॉफी
उन्हें देख कर आया हाथी
हाथी से फिर बोला भालू
थोड़ी टॉफी मैं भी खा लूँ
बंटी को सुन गुस्सा आया
डंडा लेकर दौड़ लगाया
बोला ये सब टॉफी मेरी
दिखा मुझे अब हिम्मत तेरी
डंडा जो उसने घुमाया
हाथ पलंग से जा टकराया
आवाज़ सुनकर आ गई मम्मी
बोली हो गई पूरी निन्नी ?
देख मम्मी को बंटी मुस्काया
बोला मम्मी सपना आया...!

22, निर्माण नगर, दशहरा मैदान
उज्जैन (मध्यप्रदेश) - 456010
मोबाइल 9827535043
9340400089

बंटू और पेड़ -दिव्या राकेश शर्मा

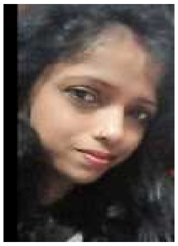

बंटू एक छ:साल का बच्चा है। बहुत ही प्यारा और आज्ञाकारी। बंटू को पेंसिल का बहुत शौक है और वह हमेशा नई नई पेंसिलों की तरह आकर्षित होता रहता है। पर वह कभी इन्हें सम्भालना नहीं चाहता और नई पेंसिल के लिए पुरानी पेंसिल को जल्दी जल्दी छील कर खत्म कर देता।

आज फिर बंटू अपनी पेंसिल को शार्प करने लगता है जो पहले से ही शार्प थी और लिखने लायक थी। यह देख बंटू की माँ को बहुत गुस्सा आता है और वह बंटू को कहती हैं,

''बंटू! यह बहुत गलत बात है बेटा। तुम हमेशा पेंसिल को अकारण छीलते रहते हो जबकि उसका प्वाइंट बिल्कुल सही है।"

''ओह्हो मम्मा! देखिए तो इसकी नोक बहुत मोटी हो गई थी इससे मेरी राइटिंग अच्छी नहीं आती।" बंटू ने माँ से कहा।

''पर बेटा यह बिल्कुल सही है और देखो अगर तुम इस तरह पेंसिल बर्बाद करोगे तो न जाने कितने पेड़ काटने पड़ें।" माँ ने समझाते हुए कहा।

''पर मम्मा पेंसिल तो लकड़ी से बनती हैं ना?" उसने आश्चर्य से माँ से पूछा।

''हाँ बेटा पेंसिल लकड़ी से बनती है और लकड़ी पेड़ से आती है। चलो मैं दिखाती हूँ।" इतना कह कर वह बंटू को खिड़की के नजदीक ले आई।

''देखो बंटू आँगन में लगे उस पेड़ को। तुम्हें इसके साथ खेलना अच्छा लगता है ना! उसकी शाखाओं में झूलना और उसके फूलों को इकट्ठा करना।" माँ ने बंटू को कहा।

''हाँ मम्मा! मुझे इसके साथ खेलना बहुत पसंद है और झूला झूलना भी।" बंटू ने मुस्कुरा कर कहा।

''हम्म! मेरे राजा बेटे यदि आप ऐसे ही पेंसिल खराब करते रहे तो और पेड़ों की तरह यह भी लकड़ी के लिए काट दिया जायेगा। फिर कैसे खेलोगे?" माँ ने सवाल किया।

बंटू चिंतित सा पेड़ की ओर देखने लगा जो उसे उदास लग रहा था। ''पर मम्मा सब जगह इतने पेड़ हैं मेरे पेड़ को कोई क्यों काटेगा?"

''बेटे सभी यही सोचते हैं कि इतने पेड़ है लेकिन सच यह है कि पृथ्वी पर पेड़ खत्म हो रहे हैं जिससे बारिश नहीं होती।" माँ ने चिंता से कहा।

''अच्छा चलो अब सो जाओ सुबह स्कूल जाना है और पेंसिल नहीं छीलना।" ऐसा कहकर माँ ने बंटू को बिस्तर पर लिटा दिया और लाइट बंद कर बाहर चली गई।

बंटू खिड़की के बाहर देखता रहता है जहाँ अंधेरे में वहाँ खड़ा पेड़ आज कुछ चुप था। अचानक बंटू को बाहर से रोने की आवाज आने लगती है। वह उठ कर खिड़की से देखता है तो उसे पेड़ की शाखाएँ टूटी हुई दिखती है। वह कमरे से निकल कर पेड़ के नजदीक जाता है और देखता है कि पेड़ रो रहा है।

''आप क्यों रो रहे हो?" बंटू ने पेड़ से पूछा।

''मुझे नहीं बात करनी तुम से बंटू।" पेड़ ने नाराजगी से कहा।

''पर क्यों! मैंने क्या किया आप क्यों गुस्सा हो?" बंटू ने आश्चर्य से पूछा।

''हाँ किया है। देखो तुम रोज इतनी पेंसिल खराब करते हो इस वजह से और पेंसिल बनाने के लिए मेरी शाखाओं को काट लिया गया है। मुझे बहुत दर्द हो रहा है।" कहकर पेड़ रो पड़ता है। तभी बंटू को पेड़ के नजदीक ढेर सारी बिखरी पेंसिल दिखा देती हैं जो उसने ही छील कर फेंकी थी। यह देखकर बंटू दुखी हो जाता है और पेड़ को सहलाते हुए कहता है,

''मैं प्रॉमिस करता हूँ पेड़ जी मैं अब कभी जानबूझकर पेंसिल नहीं शार्प करूँगा आप मत रोओ।"

''पर तुम्हारे और दोस्त भी ऐसा करते हैं।" पेड़ ने दुखी होकर कहा।

''मैं अपने सभी दोस्तों को बताऊँगा वह भी कभी ऐसा नहीं करेंगे।"

''ठीक है बंटू अब मैं नहीं रोऊँगा लेकिन एक वादा और करो। सभी को और पेड़ लगाने के लिए भी कहोगे।"

''हाँ पेड़ जी।"

''बंटू... बंटू....!" किसी ने उसे आवाज लगा ।

''उठ बेटा स्कूल नहीं जाना क्या?" बंटू ने देखा माँ उसे उठा रही थी वह उठकर जल्दी से खिड़की के नजदीक गया और बाहर झांका। पेड़ मुस्कुरा रहा था और ढेर सारे फूल आँगन में बिखरे थे।

''मम्मा! क्या पेड़ बोलते हैं?" बंटू ने कहा।

''पेड़ की मौन भाषा होती है।" माँ ने कहा।

''मतलब?" बंटू ने कहा।

''मतलब उनकी भाषा सिर्फ उन्हें सुनाई देती है जो उन्हें प्यार करते हैं।"

''मेरे साथ रात को पेड़ ने बात की थी।" बंटू ने उत्साह से कहा।

''अच्छा!" माँ ने पेड़ की ओर देखते हुए कहा और फिर बोली, ''जाओ फ्रेश हो जाओ। स्कूल जाना है।"

''ठीक है मम्मा।" बंटू ने कहा और एक बार फिर पेड़ की ओर देखा।

''मम्मा मैं प्रॉमिस करता हूँ अब कभी पेंसिल खराब नहीं करूँगा वरना मेरा पेड़ रोयेगा।"

''मेरा राजा बेटा।" इतना कह माँ ने उसे गले लगा लिया। आँगन में पेड़ खुश होकर हिलने लगा।

मकान नं. 4, गली नम्बर-9-ए,
अशोक विहार, फेज-2, गुरुग्राम,
हरियाणा-122001
मो.7303113924

''बच्चे के लिये सत्य उस खिलौने की भाँति है जो उसका दिल तो बहलाता है, किन्तु उसे आहत नहीं करता। यदि बच्चे को यथार्थ की कठोरभूमि पर नंगे पैर चलाया जाएगा तो छाले अवश्य पड़ेंगे, इसलिये सत्य को बच्चे के सामने लाने से पूर्व यह विचार अवश्य करना चाहिए कि सत्य को उजागर करने की पद्धति क्या हो। यह हमारी, स्वयं की विवकेशीलता पर निर्भर करता है।''

बच्चा और सूरजमुखी का पौधा

-नमिता

एक बार एक बच्चा अपने पापा-मम्मी के साथ छुट्टियाँ बिताने पहाड़ों पर गया। वहाँ गेस्ट हाउस के लॉन में घूमते हुए उसने एक कोने में खड़ा एक लम्बा सा पौधा देखा, जिसके ऊपरी सिरे पर एक अकेला बड़ा सा फूल लगा था। बच्चे ने वह पौधा उससे पहले नहीं देखा था। हाँ, उसका जैसा कुछ अपनी किताबों में देखा था और पढ़ा था। तो बच्चे ने सोचा कि चलो इस पौधे से ही इसके बारे में पूछा जाय और यूँ शुरू हो गयी बच्चे और पौधे की बात-चीत।

''तुम कौन हो?''

''मैं फूल हूँ।''

''वह तो मुझे भी दिख रहा है पर तुम्हारा नाम क्या है?''

''अच्छा तो ऐसे बोलो। लोग मुझे सूरजमुखी कहते हैं।''

''अच्छा अच्छा सूरजमुखी? वह जो सूरज के साथ साथ घूमता है?? जिधर जिधर को सूरज जाता है, उधर उधर ही मुँह घुमाते जाते हो तुम?''

''अरे वाह, तुम तो मेरे बारे में बहुत कुछ जानते हो।''

''हाँ, पर तुम ऐसा करते क्यों हो, सब फूल तो ऐसा नहीं करते?''

''अच्छा आओ, इधर बैठो आ कर। हम तुम्हें अपने बारे में सब बताते हैं।''

''हाँ, अब सुनाओ अपनी कहानी।''

''हम भी ऐसा पूरे जीवन भर नहीं करते। हम सूरजमुखी के फूल जब छोटे होते हैं यानि जब हम खिल रहे होते हैं तब हम आकाश में सूरज के घूमने के साथ-साथ घूमते हैं और बड़े हो जाने पर पूर्व यानि सूरज के निकलने की दिशा में मुँह कर खड़े रहते हैं।''

''पर ऐसा क्यों?''

''ऐसा इसलिए कि हमारे पौधे में एक हारमोन पाया जाता है, जिसका नाम है ऑक्सिन।''

''हारमोन्स तो हम लोगों के शरीर के भीतर भी पाए जाते हैं, जो शरीर की अलग अलग क्रियाओं में उसकी सहायता करते हैं।''

''हाँ, बिल्कुल उसी तरह हमारा यह ऑक्सिन हारमोन

हमें बढ़ने में सहायता करता है। पर यह ऑक्सिन सूरज की रौशनी के प्रति बहुत संवेदनशील होता है और उससे बचने के लिए पौधे के जिस भाग में छाया होती है, उधर की ओर ही जा छिपता है।

''ओहो, फिर?''

''हमने तुम्हें अभी बताया न कि ऑक्सिन हमें...''

''हाँ, हाँ, वह तुम्हारा ग्रोथ हारमोन है.....''

''हाँ, अरे वाह तुम्हें तो सब याद है. हाँ तो ऑक्सिन जो कि ग्रोथ हारमोन है और जो सूरज की रौशनी से दूर भाग, तने के उस भाग में छिप जाता है, जहाँ छाया है तो वह वहाँ जा कर अपना काम शुरू कर देता है।''

''अपना काम?''

''हाँ, हमारे बढ़ने में मदद करने का काम। वह उस जगह की कोशिकाओं को विभाजित होने की क्रिया में तेजी लाता है। इसलिए उस जगह पर यानि कि छाया की तरफ वाला तना मोटा हो जाता है और इसीलिए उसकी विपरीत दिशा में यानि कि सूरज की ओर फूल झुकता रहता है।

''अच्छा-अच्छा तो यह सब ऑक्सिन हारमोन की कारस्तानी है। जैसे जैसे सूरज घूमता है, ऑक्सिन भी छिपता-छिपाता छाया वाले हिस्से में सरकता रहता है।''

''हाँ, इसलिए उसकी उल्टी दिशा में यानि सूरज की ओर हम सूरजमुखी के फूल घूमते रहते हैं।''

''जानते हो, सूरज के साथ-साथ हमारे इस घूमने को क्या कहते हैं?''

''नहीं तो।''

''इसे कहते हैं हिलियोट्रॉपिज्म।''

''क्या हिलियोट्रॉपिज्म...यह तो बड़ा मुश्किल है... हिलियोट्रॉपिज्म...''

''हाँ, हिलियोट्रॉपिज्म।''

''तो फिर बड़े हो जाने पर तुम लोग यह हिलियेट्रॉपिज्म बंद क्यों कर देते हो और केवल पूर्व दिशा की ओर मुँह कर के ही क्यों खड़े होते हो?''

''अच्छा एक बात बताओ, तुम लोगों में भी बच्चों और बड़ों की आदतें, जरूरतें अलग अलग होती हैं न?''

''हाँ, होती तो हैं।''

''बस ऐसा ही हमारे साथ भी है। जब हम बड़े हो जाते हैं, हमारे फूलों के बीच काले काले ढेर सारे बीज पक जाते हैं तो उनके भार से फूल झुकने लगते हैं और बस पूर्व की दिशा में मुँह कर खड़े हो जाते हैं।''

''अच्छा अच्छा जैसे मैं तो दिन भर भागते हुए चक्कर लगा सकता हूँ लेकिन मेरी दादी अधिकतर एक ही जगह बैठी रहती है।

''हा हा हा...भाई। तुम तो बहुत होशियार बच्चे हो। अच्छा चलो घर जाओ तुम अब शाम होने वाली है।''

''तो अब शाम को तुम क्या करोगे। सूरज तो डूब जायेगा अभी?''

''हाँ, सूरज तो डूब जाएगा पर जब यह कल सबेरे पूर्व में निकलेगा तो हम फिर से इसकी ओर मुँह किए हुए मिलेंगे। ऑक्सिन तो सूरज की रौशनी से दूर भागता है पर हमें अपना खाना बनाने के लिए और पॉलिनेशन के लिए कीड़ों को पास बुलाने के लिए सूरज के पाले में ही रहना पड़ता है।''

''तभी तो तुम्हारे नाम में सूरज का नाम जुड़ा है।''

''हाँ सो तो है, अच्छा जाते जाते यह बताते जाओ कि तुमने आज कौन कौन से नए शब्द सीखे?

बच्चा हमने, ऑक्सिन, हिलिओट्रॉपिज्म और एक आखिर में क्या कहा था, हाँ, पॉलिनेशन।''

''गुड-गुड, चलो अब विदा लेते हैं। बॉय।''

बच्चा, ''बॉय।''

5/138, विकास नगर
लखनऊ-- 226022

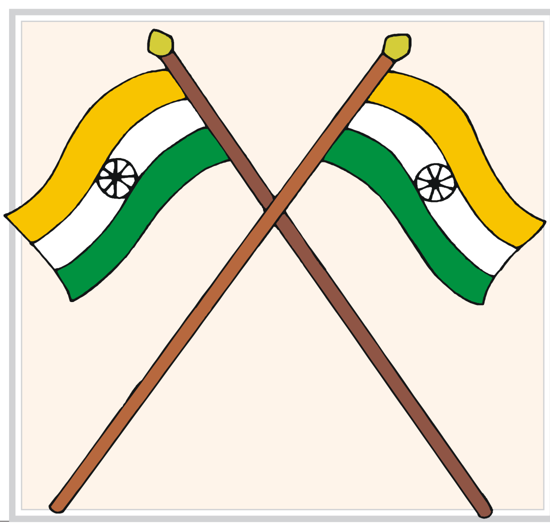

सुलह -अर्विना

स्कूल की छुट्टी के समय रिमझिम फुहार पड़ने लगी समीर और सायरा को पेड़ के नीचे चीं-चीं की आवाज सुनाई दी पास जाकर देखा तो एक नन्हा सा चिड़िया का बच्चा पेड़ के नीचे गिरा हुआ पड़ा था।

सायरा ने ऊपर देखा पेड़ की बहुत ऊँची डाली पर घौंसला रखा था। पेड़ पर से चिड़िया के जोर-जोर से चिंचिहाहट सुनाई दी। हल्की बारिश भी शुरू हो गई थी इस हालत में चिड़िया के बच्चे वहाँ छोड़ना भी ठीक नहीं लग रहा था वह सोच ही रही थी कि अब क्या करे?

पापा की गाड़ी का हार्न सायरा को सुनाई दिया। सायरा ने चिड़िया के बच्चे को अपने रुमाल में उठा लिया और समीर के साथ गाड़ी में आकर बैठ गई।

''पापा ! देखिये चिड़िया का घायल बच्चा, ये घौंसले से गिर गया था इसके पंजे में चोट लगी है। इसकी बैंडेज करा देते हैं। भुवन ने गाड़ी वेटनरी अस्पताल की और मोड़ दी।

अस्पताल में खड़े डाक्टर साहब ने सायरा से पूछा, ''पिछली बार एक छोटे-से पप्पी को लेकर आई थी इस बार.....किस घायल को लाई हो।''

जवाब में सायरा के पापा भुवन ने कहा ''आप तो जानते हैं सायरा पशु पक्षियों से बहुत प्रेम करती है।''

''डॉक्टर अंकल मैं बताती हूँ। स्कूल में पेड़ पर बने घौंसले से ये नन्हा सा चिड़िया का बच्चा गिर कर घायल हो गया आप इसकी मलहम पट्टी जल्दी से कर दीजिए।''

डॉक्टर ने चिड़िया के बच्चे का मुआइना किया। सायरा को चिड़िया का बच्चा देते हुए डॉक्टर अंकल ने कहा ''ये लो। मैंने दवा लगा कर पट्टी कर दी है। कुछ ही दिनों में चिड़िया का बच्चा तंदरुस्त हो जायेगा। वे लोग चिड़िया के बच्चे को लेकर चल दिए।

भुवन ने कार जैसे ही घर के गैराज में रोकी कार का दरवाजा खोलकर समीर घर के अंदर भागकर सीधा दादी के पास पहुँचा और हांफते हुए सारी बात बता ।

''दादी! चलो ना मेरे साथ जल्दी देखो ना। दीदी एक चिड़िया का बच्चा लाई है। समीर दादी का हाथ पकड़ कर बाहर ड्राइंग रूम में ले आया।

एक कोमल सा चिड़िया का बच्चा जिसके अभी पंख भी ठीक से नहीं आए थे सयरा के हाथ में था।

''सायरा ये तुमने अच्छा किया जो इसे घर ले आई। मैं इसके लिए दूध लेकर आती हूँ।'' दादी रसोई में दूध लाने चली गई। समीर स्टोर रूम से एक टोकरी उठा लाया तब तक मम्मी भी बाजार से लौट आई थीं।

''समीर इस टोकरी का क्या करोगे?"

''मम्मी! दीदी स्कूल से एक घायल चिड़िया का बच्चा लाई है। उसी के रहने के लिए ले जा रहा हूँ, आप प्लीज एक बिछावन देदो इस टोकरी में बिछाने के लिए।''

''समीर तुम चलो, मैं सामान रख कर बिछावन लाती हूँ।'' सुनयना ने स्टोर से एक बिछावन के लिए कपड़ा निकाल कर ड्राइंग रूम में पहुँची। ''समीर टोकरी यहाँ लाओ?''

समीर ने टोकरी लेजाकर मम्मी को देदी। सुनयना ने टोकरी में कपड़ा बिछाकर तैयार कर दिया। समीर ने चिड़िया के बच्चे को टोकरी में रख दिया। समीर सायरा के आगे-पीछे घूम रहा था, लेकिन आज सुबह चोटी खींचने को लेकर सायरा अभी तक उससे खफा थी।

दादी सुशीला देवी ने कटोरी में दूध निकालकर रुई के फाहे से चिड़िया के बच्चे को दूध पिला दिया।

''दीदी अब ये चिड़िया का बच्चा ठीक हो जायेगा?'' सायरा ने कोई जवाब नहीं दिया। सुबह की बात से अपसेट जो थी। समीर ने उसके गले में बाहें डाल कर कहा सारी . ...दीदी अब मैं आपकी चोटी खींचकर नहीं भागूँगा प्लीज़ कुछ देर मुझे भी खेलने दो चिड़िया के बच्चे के साथ।''

''देखो इसे चोट लगी है। जब ये ठीक हो जायेगा तब जी भर के खेलना इसके साथ।''

चिड़िया के बच्चे ने चीं-चीं करना बंद कर दिया था अपनी आँखे बंद कर सुस्ताने लगा था। समीर को अचानक भूख लग आई उसने अपने पेट पर हाथ फिराया।

''मम्मी इस बच्चे को भी बड़े जोर की भूख लगी है।''

''मुझे पता था। देखो! मैं गरमागरम पकौड़ी ले लाई।''

''दीदी कान पकड़ता हूँ अब तो मान जाओ एक पकौड़ी मेरे हाथ से खा भी लो....मेरी प्यारी...प्यारी दीदी।''

''चल हट! अब मस्का मत लगा।'' सुबह की बात भूलकर दोनों डायनिंग टेबल पर चिड़िया के बच्चे के साथ बातें करते हुए नाश्ता करने लगे। समीर और सायरा के बीच चिड़िया के नन्हें से बच्चे ने सुलह करा दी थी।

डी 9 सृजन विहार, एनटीपीसी मेजा
जिला प्रयागराज, पोस्ट कोडहर-212301
9958312905

कोलकाता से अण्डमान तक

आशा शैली

डॉ. सोमेश की नौकरी जब से लगी थी, वे नैनीताल और हल्द्वानी के अस्पतालों ही में अपनी सेवायें दे रहे थे। नैनीताल तक तो ठीक पर पिछले तीन साल से वे हल्द्वानी के सोबन सिंह जीना बेस अस्पताल में कार्यरत थे।

यहाँ हर समय काम का बहुत दबाव बना रहता था। आस-पास के सब नाते-रिश्तेदार भी 'अपना डॉक्टर है न' सोचकर वहीं इलाज कराना पसन्द करते इसलिए दबाव और भी बढ़ जाता। बच्चों के लिए समय भी बड़ी मुश्किल से दे पाते थे। पर बच्चे भी कहीं न कहीं जोर जबरदस्ती घसीट ही लेते।

आज भी शाम को जब डॉ. सोमेश अस्पताल की ड्यूटी से वापस लौटे तो रंजना ने उन्हें बताया कि 15 दिन बाद बच्चों की छुट्टियाँ पड़ने वाली हैं। तब सोमेश को महसूस हुआ कि गर्मी तो वाकई हो ही गई है।

''डॉ. सोमेश!'' उसने कहा, ''इस बार चलो कहीं दूर चला जाए घूमने।''

''बाप रे! मौसम देख रही हो? अभी से कितनी गर्मी हो गई है रंजना।'' सोमेश ने बाहर पड़ने वाली गर्मी का हवाला देकर कुछ समय घर पर रहने या अपने पहाड़ के घर बागेश्वर चलने की बात कही। जिसे रंजना ने सिरे से ही खारिज कर दिया,

''क्या सोमेश! बागेश्वर तो हम लोग दो तीन दिन की छुट्टियों में भी जा सकते हैं। बच्चे भी कोई नई जगह देखने की ज़िद कर रहे हैं। कम से कम एक महीना तो कहीं दूर चलें न और वैसे भी तुमने दो साल से छुट्टी नहीं ली है। इस बार तुम्हारी नहीं चलेगी।'' कह कर रंजना ने बात खत्म कर दी।

एक डॉ. होने के नाते सोमेश जानते थे कि भारत के पहाड़ों पर अभी पर्यावरण बहुत अधिक नहीं बिगड़ा है। वातावरण शुद्ध होने से बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ने का कोई खतरा नहीं। फिर अपने घर की भी देख-भाल भी हो सकती थी, पर बच्चों के साथ ही बच्चों की माँ भी ज़िद पकड़ बैठी थी तो समर्पण के अलावा कुछ नहीं हो सकता था।

मैदान के साथ लगा होने के कारण हल्द्वानी में भी गर्मी की मार बहुत भयंकर हो गई थी, परन्तु यूँ चुपचाप घर में भी तो नहीं बैठा जा सकता था। बच्चे हैं आखिर, कुछ तो चाहिए छुट्टियों में उन्हें।

परीक्षा समाप्त हो चुकी थी, भारत भूषण ने इस बार कक्षा आठ की परीक्षा दी थी। अब वह पापा को मना रहा था कि इस बार की छुट्टियों में अण्डमान निकोबार जाया जाए। वैसे उसके पापा सरकारी अस्पताल में डॉक्टर थे और उन्हें एल.टी.सी. मिल सकती थी। पर पापा उसे समझा रहे थे कि एक डॉक्टर की ड्यूटी मरीजों की सेवा करना होती है और मरीज तो कभी भी आ सकते हैं। अस्पताल के डॉक्टर के बाहर जाने से उन्हें परेशानी हो सकती है, परन्तु भारत भूषण और उसका छोटा भाई रघुराज भी इसी जिद पर अड़ गए थे कि उन्हें तो इस बार अण्डमान जरूर जाना है और वह भी समुद्री जहाज से।

अब जब दोनों भाइयों का मत एक हो गया तो छोटी गुड़िया कनक क्यों पीछे रहने लगी थी? वैसे वह तो पापा की अधिक लाडली थी सो, दोनों भाइयों ने उसे ही शतरंज का मोहरा बना लिया। पापा बेचारे ने बहुत कोशिश की, कि नैनीताल नज़दीक है तो बच्चों को पहाड़ पर घुमा लाएँ, परन्तु कौन मानने वाला था?

''पापा! नैनीताल की तो हर गली हमारी देखी हुई है न। कितना घूमेंगे हम वहाँ? वही तल्ली ताल से मल्ली ताल, भीमताल, भुवाली, कैंचीधाम। जी नहीं, हमको नहीं जाना है नैनीताल।'' रघुराज अकड़ गया।

''पर बेटा, वहाँ आप के मित्र भी तो हैं न....।''

''क्या पापा! मित्रों को तो हम रविवार की छुट्टी में

भी मिलते हैं और हमारे मित्र तो हल्द्वानी भी आ जाते हैं, इसलिए यह बहाना नहीं चलेगा।'' रघुराज ने बात को बीच ही से काट कर बात समाप्त कर दी। रंजना पास ही बैठी बड़ी रुचि से सब की बात सुन रही थी और सोमेश की सूरत देख-देख कर मज़े ले रही थी।

सच तो यही था कि इस बार मन तो बच्चों की माँ का भी था कि इस बार कहीं दूर की यात्रा की जाए। इस तरह पूरा परिवार एक तरफ़ हो गया तो बेचारे डॉक्टर सोमेश क्या करते? उन्हें छुट्टियों के लिए प्रार्थना-पत्र देना पड़ा। आखिर उनकी छुट्टी मंजूर हो गई और अण्डमान जाने की तैयारी होने लगी।

दो रातें और डेढ़ दिन का तो हावड़ा तक का ही सफर था और बच्चों का साथ, डॉ. सोमेश भी बाहर के खाने से बचते थे। इसलिए रंजना ने रास्ते के खाने के लिए भी बहुत सा सामान बना लिया था।

इस सारी उठा-पटक में कुछ दिन तो खराब होने ही थे, सो बच्चों की चार-पाँच छुट्टियाँ बेकार हो गईं और आखिर में यह कारवाँ हल्द्वानी रेलवे स्टेशन से रात को साढ़े दस बजे 'बाग एक्सप्रेस' में सवार हो ही गया। इसी गाड़ी से इन्हें कलकत्ता पहुँचना था जो तीसरे दिन दोपहर को हावड़ा स्टेशन पर पहुँचाने वाली थी। रंजना ने सीटों पर सब के बिस्तर लगा दिए। तब तक डॉ. सोमेश सामान सहेजते रहे। देर तो यूँ भी बहुत हो चुकी थी इसलिए अपनी-अपनी सीटें सँभालकर सभी सो गए।

....

सुबह जब बच्चों की नींद खुली तो गाड़ी पूरी रफ़्तार से भाग रही थी। बच्चों ने हाथ-मुँह धोकर नाश्ता किया जो उनकी मम्मी साथ बनाकर लाई थी, फिर रास्ते में पड़ने वाले स्टेशनों, खेतों, नदियों और जंगलों को देख-देखकर तीनों बच्चे प्रसन्न होते रहे। जहाँ किसी बड़े स्टेशन पर गाड़ी रुकती तो डॉक्टर सोमेश बाहर जाकर बच्चों के लिए कुछ खरीद लाते। कभी-कभी बच्चे भी उनके साथ स्टेशन पर उतर जाते, तो मम्मी चिल्लाती रहतीं,

''देखिए, दूर मत जाइएगा। अरे सुनिए! बच्चों का ध्यान रखना कहीं भटक न जाएँ। अरे, जल्दी आ जाइए।'' वगैरह-वगैरह। हर बार गाड़ी के व्हिसल देने पर सब लोग भाग कर ट्रेन में चढ़ जाते। पापा सबसे बाद में चढ़ते थे। आखिर दूसरी दोपहर को गाड़ी हावड़ा पहुँच गई। ग्यारह बजे से ही सबने सामान समेटना शुरू कर दिया था। गाड़ी हावड़ा प्लेटफार्म पर रुकी तो डॉक्टर सोमेश और उनकी पत्नी रंजना बच्चों और सामान के साथ गाड़ी से उतरकर प्लेटफार्म से बाहर निकल आए।

अण्डमान का कार्यक्रम बनते ही डॉक्टर सोमेश ने कलकत्ता में रहने वाले अपने मित्र कोशलेंद्र के साथ आगे का कार्यक्रम तय कर लिया था। वे लोग भी अपने बच्चों को साथ लेकर उनके साथ अण्डमान जाने वाले थे। कार्यक्रम के अनुसार कोशलेंद्र अपनी कार लेकर स्टेशन पर उन्हें लेने आ गए थे। वह समुद्री जहाज़ पर (शिपिंग कारपोरेशन में) डॉक्टर थे सो उन्होंने सब लोगों की आगे के लिए टिकटें भी बनवा ली थीं और अपने ही घर में सब के लिए रुकने की व्यवस्था भी कर दी थी, आखिर वे दोनों बचपन के मित्र भी तो थे।

कोशलेंद्र की पत्नी आभा ने भी उन सब की खूब आवभगत की। दो दिन बाद ही उन लोगों को अकबर नाम के समुद्री जहाज से अण्डमान के लिए रवाना होना था। जहाज़ तट पर लंगर डाले खड़ा था।

उस दिन तो विश्राम करके डॉ. सोमेश के परिवार ने अपनी थकन उतारी। दूसरे दिन कोशलेंद्र उन्हें कलकत्ता का काली मन्दिर दिखाने ले गए। वहाँ पर बड़ी भीड़ थी बहुत देर तक बच्चे लाइन में लगे रहकर बोर होने लगे तो मम्मी ने कहा, ''मैं लाइन में रहती हूँ आप इन्हें थोड़ा घुमा लाइए।''

''हाँ पापा! यह ठीक रहेगा। हम खिलौने खरीदेंगे।'' छः वर्ष की कनक नाचने लगी। तो मम्मी ने उसे डाँट दिया, ''पापा को तंग मत करना और जल्दी लौट आना। तब तक हमारा नम्बर आ जाएगा।''

''ठीक है, हम जल्दी आ जाएँगे, चलो बच्चो।'' सोमेश बच्चों को लेकर बाहर निकले तो एक छोटी-सी गली में आ गए। यहाँ तरह-तरह की दुकानों पर से बच्चों ने कुछ खिलौने और कुछ चाकलेट वगैरह खरीदी। गली में बहुत कीचड़ थी। थोड़ी देर पहले ही बारिश हुई थी। कीचड़ और भीड़ के कारण थोड़ी ही देर में उकताकर बच्चे वापस लौट आए। अब तक लाइन बहुत आगे पहुँच गई थी और

थोड़ी ही देर में उनका नम्बर भी आने वाला था, इसलिए सब लोग आराम से लाइन में लग गए। अपना नम्बर आने पर सब माँ काली के दर्शन करके बाहर आ गए।

बाहर पैर रखते ही कनक जोर से बोल पड़ी, ''**जय काली कलकत्ते वाली, तेरा वचन न जाए खाली, बच्चो! दोनों हाथ बजाओ ताली।**'' कनक की बात सुनकर सब हँस पड़े तो कनक झेंप गई, ''क्या पापा?''

''हाँ बेटा, यही काली का जगत प्रसिद्ध मन्दिर है। डॉ. कोशलेंद्र ने उन्हें बताया इस स्थान को कालीघाट कहा जाता है। अब हम तुम्हें स्वामी रामकृष्ण परमहंस महाराज के स्थान दक्खिनेश्वर काली ले चलेंगे। तुमने उनकी कहानी पढ़ी है न? वे माँ काली के परम भक्त थे।''

''जी अंकल!'' भारत भूषण बोल उठा, ''मेरी बुक में है, मैंने इन दोनों को भी सुनाई थी वह कहानी। स्वामी जी की पत्नी शारदा भी उन्हीं की तरह देवी की पुजारी थी और स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी को ठाकुर कहा करती थी।''

''गुड....तुम्हें सब अच्छी तरह याद रहता है न? यह अच्छी बात है।'' कौशलेंद्र ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

अब तक वे सब मन्दिर पहुँच चुके थे। भारत के अन्य मन्दिरों की तरह यह भी बहुत विशाल मन्दिर था। सब ने घूम-घूम कर रामकृष्ण परमहंस के बैठने-घूमने और रहने के सारे स्थान देखे। अब उन्हें भूख लग रही थी।

बाहर आकर सब बच्चों को उनकी मनपसन्द सभी चीजों के साथ कलकत्ता के प्रसिद्ध रसगुल्ले भी खिलाए गए। अब बच्चे अगले पड़ाव के लिए तैयार थे।

अब कोशलेंद्र अंकल उन्हें नेशनल म्यूज़ियम दिखाने ले गए। यहाँ बच्चों ने बहुत से समुद्री जीवों की अस्थियाँ देखीं। समुद्री घोड़े और व्हेल मछली के अवशेष देखकर तो बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। फिर कोशलेंद्र उन्हें रवीन्द्र सेतु दिखाने ले गए। यहाँ आकर कौशलेंद्र ने कहा,

''बच्चो! इस पुल का नाम रवीन्द्र सेतु है। ''

''अंकल, इसमें खम्भे कहाँ हैं?'' कनक बोल उठी।

''हाँ बेटा, इस पुल में कहीं भी खम्भे नहीं हैं। यही तो इस पुल की विशेषता है कि यह बिना खम्भों का पुल है। हमारे देश के कारीगरों ने इसे ऐसी विधि से बनाया है कि यह बिना खम्भों के ही टिका हुआ है।''

''यह तो बड़े आश्चर्य की बात हुई। मैं अपने सभी साथियों को जाकर बताऊँगी।'' कनक फिर उछलने लगी। अब तक अँधेरा घिरने लगा था। पार्क में संगीत की धुन पर चलने वाले फव्वारे देख कर बच्चे बहुत प्रसन्न हो रहे थे। पर अब वे सब थक भी गए थे और घर से आभा के फोन भी आ रहे थे। भोजन बन चुका था। सब लोग घर लौट आए।

....

रात को शिप से डॉ. कौशलेंद्र को फोन आया कि सागर में ज्वार-भाटा के कारण यात्रा समय पर नहीं हो सकेगी। इस सूचना को सुनकर बच्चों के चेहरे उतर गए। भारत भूषण ने पूछा,

''अंकल! ज्वार-भाटा का हमारी यात्रा से क्या सम्बंध है?'' तब कौशलेंद्र ने उन्हें समझाते हुए कहा कि, ''ज्वार के कारण समुद्र में पानी किनारों पर अधिक दूर तक आ जाता है और वापस लौटते भाटा के साथ समुद्री जहाज़ को आसानी से समुद्र में धकेला जा सकता है। वरना पानी कम होने से शिप चलाना बहुत अधिक कठिन हो जाता है। पर बच्चो, क्या आप जानते हैं कि ज्वार-भाटा क्या होता है?''

''जी अंकल, मुझे पता है।'' रघु बोल उठा, ''जब चाँदनी रातें होती हैं तो समुद्र में पानी दूर किनारों तक आ जाता है। इसे ज्वार कहते हैं और जब अंधेरी रातें शुरू होती हैं तो समुद्र का पानी वापस समुद्र की ओर लौटने लगता है। इस का नाम भाटा होता है।''

''क्यों अंकल, नैनीताल की झील में भी तो खूब सारा पानी है और उसमें तो खूब नावें हर समय चलती हैं। क्या समुद्री जहाज़ उनसे बड़ा होता है, जो उसके लिए ज्वार-भाटा के पानी की जरूरत पड़ती है?'' कनक जो अब तक चुप बैठी सारी बातें सुन रही थी, अब उससे बोले बिना रहा नहीं गया। इस बात पर सभी बड़े लोग हँस पड़े, तो कनक ठुनकने लगी, ''जाइए, हम आपसे नहीं बोलते।''

अब डॉ. सोमेश ने बेटी को पुचकारते हुए कहा, ''बेटा, समुद्री जहाज बहुत बड़ा होता है। पूरे एक छोटे शहर जितना बड़ा और बहुत भारी भी। अब जब हम जा ही रहे हैं न, तो

अपनी आँखों से देख लेना।''

इस यात्रा के लिए इस बार डॉ. कौशलेंद्र के दोनों बच्चे, विपिन और सुनन्दा भी बहुत उत्साहित थे, हालांकि अपने पापा के साथ वे लोग पहले भी कई बार अण्डमान जा चुके थे परन्तु इस बार इन नए मित्रों के साथ जाने पर उन्हें घूमने में और भी आनन्द आने वाला था। इन दो दिनों में उन लोगों में खूब मित्रता भी हो गई थी। उन दोनों ने भारत, रघु और कनक को अण्डमान के बहुत से चित्र अपनी एलबम में से दिखाए थे।

समस्या थी कि दो दिन घर में बैठे रहने से तो वे लोग बोर हो जाएँगे। आखिर इन दो दिनों में क्या किया जाए। इस पर कौशलेंद्र ने कहा, ''कल हम आपको बोटेनिकल गार्डन और शहीद स्मारक दिखाने ले चलेंगे। क्यों ठीक है न?''

''अंकल!'' इस बार रघुराज बोल पड़ा, ''क्या यहाँ भी आज़ादी की लड़ाई हुई थी?''

''क्यों नहीं बेटा, आज़ादी की लड़ाई में तो पूरे भारत का सहयोग रहा है परन्तु बंगाल का सहयोग सबसे अधिक रहा है। सबसे बड़ा नाम तो बंगाल के नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का ही है जो हर भारतवासी की ज़बान पर है। पर क्या तुम यह जानते हो? यहाँ की शहीद मीनार तीन छोटे लड़कों की याद में बनाई गई है जिन्हें अंग्रेजों ने फाँसी की सज़ा दी थी। इनके नाम विनय, बादल और दिनेश थे।

इनकी उम्र उस समय सोलह वर्ष से भी कम थी जब उन्हें फाँसी दी गई। दिनेश को जब फाँसी हुई थी उस के दूसरे दिन उसका जन्मदिन था। उसकी माँ ने खीर बनाकर चौराहे पर सब लोगों को खिलाई थी। जब किसी ने पूछा, ''ये क्या कर रही हो? तो उसकी माँ गर्व से बोली, मेरा बेटा अमर हो गया। सब लोग जन्म के बाद मरते ही हैं, पर मेरा बेटा कभी नहीं मरेगा।''

''कहा तो माँ ने सच ही था। क्या शहीद कभी मर सकते हैं?'' रंजना की आवाज़ भर्रा गई थी।

''अच्छा बेटा अब तुम लोग सो जाओ। कल हम सब गंगा सागर जाएँगे।''

''वहाँ क्या है अंकल!'' भारत भूषण ने पूछा।

''बेटा! उस स्थान पर गंगा नदी, सागर यानि समुद्र में मिलती है, इसलिए उस जगह का नाम गंगासागर पड़ गया है। यानि गंगा भी और सागर भी। इसके अलावा वहाँ पर कपिल मुनि का आश्रम भी है, इस की कथा हमारे शास्त्रों में आती है।''

''क्या कथा है अंकल? कथा क्या कहानी होती है?'' कनक ने भोलेपन से पूछा।

''हाँ बेटा, कथा ही कहानी होती है। इस कथा को यूँ कहा जाता है कि राजा सगर के महल से चोरी करके भागे चोर, सैनिकों के भय से सामान वहाँ पर फेंक गए जहाँ कपिल मुनि तपस्या कर रहे थे, राजा के बेटों ने उन्हें ही चोर समझ लिया तो कपिल मुनि ने अपने तप के बल पर उन झूठा दोषारोपण करने वालों को जला कर राख कर दिया।''

''फिर?'' बच्चे बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

''फिर हुआ यह कि उन्हीं सगर राजा के वंशज भागीरथ गंगा को हिमालय से यहाँ तक ले आए थे।''

''सो जाओ बच्चो। अंकल को भी आराम करने दो। बाकी अब वहीं जाकर पूछना गंगा सागर पर।'' रंजना ने आकर कनक को गोद में उठा लिया और अपने पलंग पर सुलाने ले गई। बाकी सब भी अपने-अपने बिस्तरों पर जा लुढ़के। सारे दिन के थके हुए तो थे ही, लेटते ही नींद आ गई।

क्रमशः

जादू -तनु श्रीवास्तव

बन्दर मामा कर गए भूल
लेकर लैपटॉप और फूल
पढ़ने चले गए स्कूल
लैपटॉप में गरजा शेर
मामा जी फिर हो गए ढेर।।

जुगनू भैया जुगनू भैया
तुम जगमग कैसे करते हो?
क्या टीशर्ट बताओ तुम्हारी
बनी बनाई जादू की है?
या फिर कोई गेम दिखाते
इधर-उधर क्यों भागे जाते

द्वारा आशा टंडन,
70, आवास विकास कालोनी,
निकट तिकोनी पार्क, जेपी पैलेस
के सामने,
मक्कुलर रोड, गोंडा-271003 मो 9807213080

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवनी साहित्य में सांस्कृतिक चेतना

-डॉ. रंजना देवी

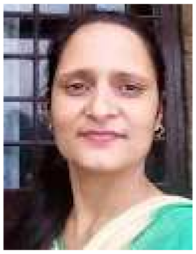

संस्कृति तथा मानव जीवन का सम्बंध परस्पर चिरंतर और अटूट है। मानव जीवन को सुसंस्कृत करने के लिए जिन आचार-विचारों का सृजन तथा पालन किया जाता है, वे सब संस्कृति के अन्तर्गत आते हैं। किसी भी देश की संस्कृति का स्वरूप उस देश की सामाजिक, राजनीतिक, मानवीय आव यकताओं तथा विधि निशेधों के अनुसार होता है। सभी मानव कलाएँ, विधाएँ तथा साहित्यिक विधाएँ किसी देश की संस्कृति की पहचान है। इस सम्बंध में राहुल सांकृत्यायन का मत है, ''मनुष्यों का प्रत्येक समाज अपनी विशिष्ट संस्कृति रखता है। इसलिए इस समाज के सदस्य कई महत्वपूर्ण विषयों में किसी भी अन्य समाज के सदस्यों से विभिन्न आचरण करते हैं। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि बहुत दिनों बाद किसी मित्र या रिश्तेदार से भेंट होने के अवसर पर हिन्दी महासागर के 'अन्देमान' द्वीप का निवासी सौजन्यपूर्ण बाहुल्य से रोता है, फ्रांस का निवासी दोनों गालों को चूमता है, जबकि हम इसी से सन्तोष कर लेते हैं कि उसकी दाहिनी हथेली को पकड़कर पम्प के समान उसे झुलाते हैं।''[1]

'संस्कृति' शब्द का अर्थ अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है। हिन्दी साहित्यकोष के अनुसार, ''संस्कृति शब्द का अर्थ, संस्कृति शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि से साकार की हुई स्थिति, सुधरी हुई दशा, संस्करण युक्त अवस्था का बोध कराता है। यह शब्द सम् उपसर्ग के साथ संस्कृत की इ कृ अ धातु से 'क्तिन' प्रत्यय करने पर बनता है, जिसका मूलार्थ है-परिष्कृत करना है।''[2]

ज्ञान शब्दकोष के अनुसार संस्कृति शब्द का अर्थ, ''शुद्धि, सुधार, परिष्कार, निर्माण, सजावट आचरणगत परम्परा है।''[3] नालंदा विशाल शब्दसागर में संस्कृति शब्द का अर्थ, ''शुद्धि, सफाई, सुधार, संस्कार, किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो अनेक क्षेत्रों में बौद्धिक विकास की सूचक होती है, 'कल्चर' है।''[4] संस्कृति वह शक्ति है, जिसे मनुष्य अपने धर्म, संस्कार और वातावरण से पाता है और यही उसे प्रेरणा देती है। संस्कृति की अभिव्यक्ति मानव के विचारों तथा कर्मों के अनुसार विविध रूपों में होती है। संस्कृति के विविध रूपों के विषय में डॉ. मदन गोपाल का मत है, ''संस्कृति मानव के सम्पूर्ण सामाजिक तथा व्यक्तिगत विकास के प्रयासों, औद्योगिक विकास के कौशल, कला, विज्ञान, नियम, अधिनियम, राजतंत्र नैतिक भावना, भौतिक तथा अभौतिक जीवन, रीति-रिवाज और उनकी परम्पराएँ आदि सभी से समाहित होने के कारण मानव जाति के समस्त चेतना-मूलक चेतना से सम्बंधित है।''[5]

मुन्शी राम शर्मा ने संस्कृति के विविध रूपों के सम्बंध में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है, ''जब हम किसी देश, प्रदेश अथवा प्रांत की संस्कृति की चर्चा करते हैं, तब हमारा उद्देश्य उस प्रदेश के विकसित आचार-व्यवहार रीति-रिवाज पर्व-त्योहार, संस्कार, कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान पूजा आदि के विधि-विधान एवं अनुकरण का ही विकसित एवं सांस्कृतिक जीवन इन्हीं रूपों में प्रकट है।''[6]

संस्कृति किसी भी समाज की अन्त चेतना होती है। यह जीवंत तथा चिरस्थापित होने के साथ-साथ एक निरन्तर विकासमान इकाई है। संस्कृति का निर्माण कुछ तत्वों द्वारा होता है, इन्हीं तत्वों द्वारा यह विकसित तथा परिवर्तित होती रहती है। इस सम्बंध में श्यामाचरण दूबे का मत है, ''सांस्कृतिक सामाजिक आवश्यकताओं द्वारा जनित मानव अविष्कार है। मनुष्य संस्कृति में जन्म लेता है, शारीरिक विशेषताओं की भांति संस्कृति प्रजनन के माध्यम से व्यक्ति उसे ग्रहण करता है। समाज की परम्परा संस्कृति को जीवित रखती है।''[7]

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आधुनिक हिन्दी साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। उन्होंने अपने साहित्य से आधुनिक हिन्दी साहित्य को सुदृढ़ तथा समृद्ध किया है। निराला साहित्य में निहित भावनाओं को समझने के लिए सर्वप्रथम उनके पारिवारिक परिवेष से परिचित होना आव यक है, क्योंकि उनकी संघर्षमय तथा अभावग्रस्त परिस्थितियों में पक

कर ही उनका साहित्य निराला बन पड़ा है।

निराला की जन्म तिथि तथा नाम के सम्बन्ध में सभी विद्वान एकमत नहीं है। इस सम्बंध में डॉ. रामविलास शर्मा का मत है, ''निराला का जन्म महिषादल राज्य में माघ शुक्ल 11, संवत् 1955 के अनुसार 21 फरवरी, सन् 1899 ई. को हुआ।''[8] रामविलास शर्मा तथा बच्चन सिंह 'बसंत पंचमी' के दिन निराला का जन्म मानते हैं। किन्तु नंद दुलारे वाजपेयी निराला का जन्म एकादशी संवत् 1953 सन् 1897 ई. को जन्म मानते हैं।

निराला के जन्म काल से ही उनके जीवन में विपत्तियों का सामना करना पड़ा, वहीं दूसरी ओर उन्हें साहित्यिक जीवन में भी भारी विरोध तथा संघर्ष का सामना करना पड़ा। निराला के साहित्यिक जीवन का लक्ष्य हिन्दी साहित्य को समृद्धि तथा उन्नति के चरम पथ पर पहुँचाना था। इस सम्बंध में डॉ.रामविलास शर्मा का मत है, ''निराला ने केवल हिन्दी के हित चिंतन से साहित्य रचा और इसलिए उनका विरोध हुआ। इस विषय पर निराला ने कहा मेरे प्रति बड़े-बड़े अधिकांश साहित्यकारों की विमुखता का यही कारण है -मैंने सदैव हिन्दी का मुख देखा है।''[9] निराला का साहित्य की ओर झुकाव उनकी पत्नी के कारण हुआ था।

सन् 1920 ई. के आस पास निराला ने साहित्य रचना का कार्य आरम्भ किया तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास को एक नया मोड़ दिया। इस सम्बंध में शंकर सुल्लतानपुरी का मत है, ''निराला जो हिन्दी के युगांतर कवि रहे हैं। जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर हिन्दी साहित्य में नया मोड़ पैदा किया है।''[10] निराला के लेखकीय व्यक्तित्व में भी मानवता की रक्षा तथा सेवा भाव का ही समन्वय है। इस समबंध में विद्याधर शुक्ल का मत है, ''निराला का लेखकीय व्यक्तित्व शिखरों की तरह ऊपर जाने वाला नहीं बल्कि जल की तरह बहता हुआ निचले तबके से जुड़ते जाने वाला था। मानवता की सेवा ही निराला का धर्म था। वे अपने संकल्पों पर दृढ़ थे। निराला स्वाभिमानी व्यक्ति थे, लेकिन शिष्टता की मर्यादाओं का उन्होंने कभी उल्लंघन नहीं किया ।''[11]

निराला का अपने जीते जी वह साहितियक सम्मान नहीं मिल पाया, जो एक सच्चे साहित्यकार को मिलता है। उन्होंने सदैव मानव कल्याण के लिए संघर्ष किया। स्वयं विष पीकर दूसरों को अमृत पिलाते रहे, इस सम्बंध में विद्याधर शुक्ल का मत है, ''निराला तो अपने जीते जी ठीक-ठाक परखे ही नहीं गए। उनकी दीन बन्धुता को निगोड़ी दुनिया ने विक्षिप्तता की संज्ञा दे डाली । उनका त्याग भी स्वार्थी समाज में उनका पागलपन ही समझा गया, पर कठोर सत्य तो यह है कि निराला ने संसार या समाज की कुत्सा पर कभी कान ही नहीं दिए......... लड़े-झगड़े भी तो न्याय के पक्ष पर अडिग रह कर अपनी पीर गोई और पराई पीर संजोई। स्वाभिमान के सर्वोच्च शिखर पर बैठे रहकर फकीरी बेफिक्री से संसार की ओर उपेक्षा भरी कनखियों से देखा। स्वयं हलाहल के घूंट पीकर दूसरों को अमृत ही पिलाते रह गए। समाज में त्याग में त्यागी और साहित्य में बागी इस युग से दूसरा ऐसा हुआ ही कौन?''[12]

निराला एक कवि, कथाकार, निबंधकार, समालोचक, नाट्य गीतकार, दार्शनिक के साथ-साथ जीवनी लेखक भी थे। निराला ने चार जीवनियाँ लिखीं जो इस प्रकार हैं-भक्त ध्रुव, भक्त प्रहलाद, भीष्म, महाराणा प्रताप। निराला जिस तरह स्वयं एक त्यागी एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे, उसी तरह वह समस्त मानव जाति में आत्मगौरव, स्वाभिमान एवं त्याग की भावना उत्पन्न करना चाहते थे। उनका जीवन साहित्य नैतिक मूल्यों से भरा पड़ा है।

'भक्त ध्रुव' कहानी में रानी सुनीति अपने पति के लिए राजसी वैभव का त्याग करके जंगल में रहने पर भी शांत है। अपने पुत्र की इस त्याग भावना को देखकर रानी सुनीति अत्यधिक प्रभावित है, ''पुत्र के त्याग का आदर्श देखकर स्नेह के कारण पैदा हुआ उनका मोह जाता रहा। त्याग के प्रभाव ने उनमें ज्ञान की ज्योति फैला दी। उन्हें नश्वर व अनश्वर का बोध हो गया। जितने कष्टों का सामना अब तक वे करती आईं, वे सब पुत्र के आदर्श से उन्हें बहुत ही तुच्छ जंचने लगे।''[13] आधा राज्य मिलने के उपरांत भी ध्रुव उसे त्याग कर एक आदर्श स्थापित करते हैं। यह देखकर उनके पिता के हृदय के नेत्र पुत्र के प्रति खुल जाते हैं। उनमें भोग की अपेक्षा वैराग्य की भावना अत्यंत प्रबल हो उठती है।

'भीष्म' जीवनी में निराला ने देवव्रत के माध्यम से

त्याग भावना का चित्रण किया है। भीष्म अपने पिता की इच्छा पूर्ति के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर आजीवन स्वाभिमानी जीवन व्यतीत करते हैं, ''इससे पहले मैं साम्राज्य का त्याग कर चुका हूँ, अब मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं विवाह भी नहीं करूँगा। चिरकाल तक ब्रह्मचारी बनकर रहूँगा। देवव्रत की इस कठोर प्रतिज्ञा से सामान्त मण्डल में एक प्रकार की खलबली पैदा हो गई। देवव्रत की महता सबके रोम-रोम में व्याप्त हो गई।''[14]

'महाराणा प्रताप' में निराला ने प्रताप के माध्यम से त्याग और बलिदान का साक्षात् चित्रण किया है, ''राजपरिवार के अपूर्व तयाग के आदर्श ने प्रजाजनों में विस्मय का परिवर्तन पैदा कर दिया।.......... जब कभी उन्हें विपत्ति का सामना करना पड़ता, वे महाराणा के त्याग का स्मरण करते और उस विपत्ति का बोझ एकाएक उनके मस्तिष्क से हट जाता।''[15]

'महाभारत' जीवनी साहित्य में निराला ने महावीर कर्ण का अत्यन्त ही दानवीर और त्यागशील चरित प्रस्तुत किया है। पांडवों को हार से बचाने के लिए देवराज इन्द्र कर्ण से उनके शक्तिवान एवं अमूल्य कवच एवं कुण्डल को माँगते हैं। वीर कर्ण हँसते-हँसते अपनी शक्ति को उन्हें समर्पित कर देते हैं, ''महादानी ने तेज शस्त्र से शरीर का कवच और कुंडल काटकर इन्द्र को दे दिया। एकटक इन्द्र कर्ण का महान् वीरत्व देखते रहे।''[16] निराला कर्ण की तरह प्रत्येक व्यक्ति में त्याग एवं बलिदान की भावना भरना चाहते हैं। उनकी अभिव्यक्ति का मूल उद्देश्य स्वाभिमान एवं मनुष्यता का प्रचार-प्रसार है।

'भक्त ध्रुव' की जीवनी में निराला महाराजा उत्तानपाद को उसके पुत्र ध्रुव के माध्यम से कर्मनिष्ठता के महत्व को समझते हैं, ''ध्रुव के त्याग से उनकी बुद्धि ठिकाने आ गई। वे संभल गए। परलोक की याद आई। बुरी लतें छूटने लगी। भोग से चित हट गया। कर्म की प्रवृति बढ़ने लगी। राज्य का प्रबंध अच्छी तरह होने लगा। प्रजा भी सुखी रहने लगी।''[17] कहने का तात्पर्य है कि कर्मनिष्ठ व्यक्ति भोग वृत्तियों से मुक्त रहकर मानव प्रगति में सदैव तत्पर रहते हैं। इसी जीवनी में भक्त ध्रुव के गुरू कर्मनिष्ठा का ज्ञान उनमें कूट-कूट कर भरते हैं, ''ध्यान करते समय मन की दूसरी तरफ जाने से रोकना, संसार के लोभ में न फंसना-माया तुम्हारी परीक्षा लेगी।''[18] अभिप्राय यह है कि लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएँ आने पर व्यक्ति को कर्म निष्ठा के पथ पर अडिग रहना चाहिए।

'महाराजा प्रताप' जीवनी में प्रताप के कथन में भगवान श्री रामचन्द्र की कर्मनिष्ठा अत्यंत स्टीक शब्दों में पाठक के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है, ''भगवान् रामचन्द्र ने कितना महान् कार्य किया, उनके अवतार की शक्ति उनके कार्य से ही प्रकट हुई और उसका आकर्षण भी देखो कि आज इतने दिन हो गए, परन्तु भगवान रामचन्द्र का आदर्श हमारे अन्दर जीवन का संचार करता जा रहा है।''[19] कहने का तात्पर्य है कि कर्मनिष्ठा के बल पर व्यक्ति अमरत्व को प्राप्त होता है और समस्त संसार के समक्ष एक आदर्श के रूप में माना जाता है।

'महाभारत' जीवनी में निराला भीष्म द्वारा कर्म का महत्व प्रस्तुत किया है, ''परुषार्थ कर्म को प्रधानता देता है और भाग्य में परिणत होता है। राजा का कर्म है- वह अपनी पूरी शक्ति से तन-मन और धन से प्रजा का पालन करे। प्रजा को शिक्षित करे, व्यवसाय, शिल्प कला को प्रश्रय दे, इनके लिए राजमार्ग, बाजार, शिक्षणालय आदि निर्मित करे।........कर्म ही अदृष्ट का उत्पादक है।''[20]

निराला ने अपने समस्त जीवनी साहित्य में ब्रह्मचर्य की शुद्धता एवं नैतिकता तथा क्षत्रियत्व के पौरुषत्व एवं वीरत्व का सुन्दर चित्रण किया है। 'भक्त ध्रुव' जीवनी में महाराज मनु एवं उनके पुत्र प्रियव्रत और उत्तानपाद क्षत्रिय के प्रकाश से परिपूर्ण हैं, ''लड़ना-भिड़ना, दण्ड-बैठक करना, तीर चलाना, शिकार खेलना, इन नियमों से खासतौर से उन्हें प्रेम था.......बाल्यकाल में सम्पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर यौवन की तरुणता में पदार्पण करते ही उत्तानपाद की प्रतिभा बहुत चमकी। प्रजा जनों में इनकी बड़ी तारीफ होने लगी। जिस तरह प्राचीन वृक्ष के रहते हुए भी, नवीन पल्लवों वाले पौधे के नीचे बैठकर ही बागवान को सन्तोष अधिक होता है, उसी तरह उत्तानपाद की छाया में रहकर प्रजाजन महाराज मनु को भूलने से लगे थे...... अब भविष्य के लिए प्रजा ओर राज्य निष्कपट हो गए।''[21] निराला ने यहाँ यह स्पष्ट किया है, कि पौरुषत्व ही संसार के विकास क्रम का आधार है। क्षत्रियत्व में वीर एवं ओजस्विता प्रधान तत्व होते हैं।

'भक्त प्रह्लाद्' जीवनी में निराला ब्रह्मचर्य पालन को आधुनिक जीवन में आवश्यक मानते हुए कहते हैं, ''पहले वर्णाश्रम विभाग की योग्यता बड़े वैज्ञानिक ढंग से कि गई थी। वर्णाश्रम धर्म के मानने वाले ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के लिए प्रथम जीवन में ब्रह्मचर्य पालन आवश्यक कर्तव्य होता था। इससे किसी बहाने फिसलने का उपाय बच्चे के लिए नहीं रह जाता था, न आजकल के श्रीमान् श्रीमतियों की तरह सुवर्णराशि पर नजर डालकर बच्चे की शिक्षा से उदासीन रहने की पहले कोई स्वतन्त्रता ही थी। सबको शिक्षा का आवश्यक नियम पालन करना पड़ता था और सब कोई इसे बच्चे के लिए अपना धर्म समझते थे।''[22] निराला ने स्पष्ट किया है कि ब्रह्मचर्य पालन भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति में नैतिक मूल्यों की स्थापना पर निराला ने अत्यधिक बल दिया है।

'महाराणा प्रताप' जीवनी में निराला ने क्षत्रियों के वीरत्व एवं शौर्य अत्यंत प्रेरक चित्र पाठकों के सम्मुख प्रकट किया है,''राजपूतों की निर्भीकता, अगणित सेना के बीच में क्षत्रियत्व का शौर्य दर्शन, देश की रक्षा के लिए हँसते हुए वीरगति को प्राप्त करना, यह सब गुण देखकर शक्ति सिंह मुग्ध हो गए थे।''[23] निराला महाराजा प्रताप को क्षत्रियत्व का आदर्श मानते हुए लिखते हैं, ''क्षत्रियों के इतिहास में महाराजा बेजोड़ है। इस तरह का दूसरा एक भी उदाहरण नहीं मिलता। भारत के उत्थान के इतिहास में निस्सन्देह महाराजा प्रताप पथ प्रदर्शक रहेंगे। इतनी महान् आत्मा, इतना कठोर त्याग इतनी निष्कलुष जातीय और इतना महान् शौर्य आश्चर्य है कि कालिदास में भारत को प्राप्त हुआ।''[24]

'भीष्म' जीवनी में निराला देवव्रत को क्षत्रीयत्व एक ब्रह्मचर्य का अनुकरणीय आदर्श मानते हुए लिखते हैं, ''उत्थान के आदर्श भीष्म पितामह हैं। यदि उनके चरित्र का आदर्श हम अपने और अपनी सन्तानों के सामने रखें यदि उसी तरह हम अपने माता पिता की सेवा करें यदि उसी आदमी को अपना ध्येय समझकर हम ब्रह्मचर्य की साधना के लिए तत्पर हैं, यदि उन्हीं की तरह हम बड़े-बड़े लाभों को त्याग कर सकें, यदि वैसा ही हमारे अन्दर निष्काम कुटुम्ब प्रेम पैदा हो, यदि वैसी ही निष्ठा रखते हुए उसका अध्ययन करें, यदि वैसे ही धैर्य की प्राप्ति के लिए हम सहनशील होना सीखें तो इसमें सन्देह नहीं कि हमारी रगों से दूषित रक्त का प्रभाव दूर हो जाए।''[25]

निराला के जीवनी साहित्य में देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए सर्वभौमिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया गया है। बच्चों के साथ-साथ प्रत्येक आयु वर्ग की नैतिक व मानसिक उन्नति आवश्यक है। यह उन्नति सत्य एवं वीरता जैसे व्यैक्तिक गुणों पर निर्भर करती है। इसी तथ्य की अभिव्यंजना निराला के जीवनी साहित्य का मूल उद्देश्य हैं 'भक्त ध्रुव' जीवनी में ध्रुव एक सत्यनिष्ठ एवं साहसी बालक है। वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति अपने असीम साहस के बल पर प्राप्त करता है। उसका आदर्श भारतीय समाज के लिए सदैव अनुकरणीय रहेगा, ''जमीन और आसमान पर अन्धकार का राज्य था। ध्रुव को माता की याद आयी। सप्त ऋषियों का बंधाया हुआ साहस याद आया। हृदय में एक बार फिर जोश की तरंगे उठने लगी।.......इतना सोचते हृदय में वैसी ही नवीन स्फूर्ति उमड़ आयी।''[26]

'भक्त प्रह्लाद्' जीवनी में निराला ने संसार के सत्य की स्थापना में परिणामों का चित्रण किया है, ''जिस समय संसार में सत्य का प्रभाव अधिक रहता है। यदि पुण्य अधिक और पाप कम होता है। सत्य के सुनहले प्रकाश में संसार के जीवों को हर तरह की शान्ति और समृद्धि मिलती रहती है। उनमें ईर्ष्या-द्वेष, फूट-कलह अनाचार-व्याभिचार आदि पापों का फैलाव बहुत कम, नहीं के बराबर रहता है।''[27] अभिप्राय यह है कि सत्य की स्थापना की जा सकती है।

भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में पर्वों एवं त्योहारों का विशेष स्थान शब्दों में चित्रित किया हुआ है। 'महाराणा प्रताप' जीवनी में निराला ने विजयदशमी त्योहार की प्रधानता को चित्रित किया है, ''देखते ही देखते विजय दशमी आ गयी, उसी दिन भगवान् रामचन्द्र की साधना सफल हुई थी। उसी दिन भारतवर्ष के प्रत्येक शहर, नगर और प्रत्येक ग्राम में पूर्ण उपचारों से महोत्सव की रचना की जाती है। हिन्दुओं के त्योहारों में यह एक प्रधान त्योहार है। भगवान् रामचन्द्र की विजय तिथि को भारतवासी अपनी विजय तिथि मानते हैं।.......राजपूत क्षत्रिय और उनमें भी जिन्हें सूर्यवंशी

क्षत्रिय कहलाने का गर्व है, इस त्योहार को बड़े ठाठ से मनाते हैं। अपने प्रचलित उपचारों से वे इसे विजय का ही रूपक कर दिखाते हैं।''[28]

'महाभारत' जीवनी में यादवों के त्योहार का वर्णन मिलता है। इस त्योहार में सभी लोग अत्यधिक मौज मस्ती करते हैं, ''यादवों का एक त्योहार पड़ा। वे लोग बड़ी साज-सज्जा से अपनी पत्नियों के साथ मद्य-पान कर खैतक पर्वत पर यह उत्सव मनाते थे। पुर के सभी युवक-युवती वहाँ एकत्र होने लगे। श्रीकृष्ण महावीर पाण्डुनन्दन को साथ लेकर चारों ओर घूम-घूमकर मेला दिखा रहे थे।''[29]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जीवनी साहित्य में निराला ने पारिवारिक सम्बन्धों में आदर्श परिवारों का चित्रण किया गया है जो अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने को सदैव तत्पर रहते हैं। सांस्कृतिक चेतना में निराला ने भारतीय संस्कृति के अमूल्य गुणों पर विशेष बल दिया जैसे स्वाभिमान, सहनशीलता त्याग एवं बलिदान इत्यादि संस्कृति की चेतना को प्रकट करते हैं।

संदर्भ :-

1.राहुल सांकृत्यायन, मानव संस्कृति और समाज, पृ. 169
2.धीरेंद्र वर्मा, सं. हिन्दी साहित्य कोष भाग -1 पृ. 868
3.मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, सं. ज्ञान शब्द कोष, पृ. 802
4.श्री नवल जी, सं. नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ. 388
5.मदन गोपाल गुप्त, मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति, पृ. 24
6.मुन्शी राम शर्मा, वैदिक संस्कृति और सभ्यता, पृ.12
7.श्यामाचरण दूबे, मानव और संस्कृति, पृ. 17-18.
8.रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड, पृ. 49
9.रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड, पृ. 251
10.शंकर सुल्तान पुरी, संस्मरणों के बीच निराला, पृ. 20
11.विद्याधर शुक्ल, लेखक-5, निराला स्मृति अंक पृ. 24
12.विद्याधर शुक्ल, लेखक-5, निराला स्मृति अंक पृ. 28
13.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 501
14.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 142
15.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 200
16.नन्द कि ोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 118
17.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 61
18.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 200
19.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 200
20.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 192
21.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 27
22.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 95
23.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 224
24.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 239
25.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 129
26.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 52
27.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 71
28.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 187
29.नन्द किशोर नवल, सं. निराला रचनावली-7, पृ. 91

अंकित कॉटेज सांगटी-1
समरहिल शिमला-171005
मो.-9418163410

सामान्य ज्ञान

1. सबसे पहला पोस्टकार्ड हंगरी में चलाया गया था?
2.भारत का सबसे ऊँचा पर्वत माउन्ट एवरेस्ट 8848 मीटर है।
3. लन्दन स्थित बी.बी.सी. की स्थापना 1925 में हुई थी।-
4. यजुर्वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गई है।
5. बैरोमीटर का पारा अगर ऊपर की ओर चढ़ता है तो वह अनुकुल मौसम इंगित करता है?
6. केंचुआ और तिलचट्टे में उदरीय तंत्रिका तंत्र समान है।
7. उपनिषदों का फारसी अनुवाद दारा शिकोह के आदेश से हुआ था।
8. बाल गंगाधर तिलक द्वारा सम्पादित अंग्रेजी समाचार पत्र का नाम मराठा था।
9. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट भोपाल में स्थित है।
10.भूकंप की तीव्रता नापने वाली यंत्र को रिचर स्केल एवं सिस्मोग्राफ कहते हैं।
11.रिक्शा सबसे पहले 1869 में जापान में प्रयोग किया गया था।
12.पका पपीता वह फल है जिसमें सभी विटामिन पायी जाती है
13. तिब्बत में चार दिन का सप्ताह मनाया जाता है।
14. भारत, हिन्दुस्तान, इंडिया और आर्यावर्त, इन चार नामों से पुकारा जाता है।
15. गुलजारी लाल नंदा ऐसे प्रधानमंत्री हुए जिनके अवधि में राष्ट्रीय झंडा झुका ही रह गया।

के. पी. अनमोल

एक छोटी-सी जान के दुखड़े
हू-ब-हू आसमान के दुखड़े

सारी ऊँचाइयाँ लगीं फीकी
सुनके उसकी उड़ान के दुखड़े

फट पड़ेगी ज़मीं कलेजे की
आप सुनिए किसान के दुखड़े

नौजवां ख़्वाहिशें न समझेंगी
इक पुराने मकान के दुखड़े

इक तरफ उम्र ख़्वाब उगाने की
इक तरफ ख़ानदान के दुखड़े

मेरे मौला न दे किसी को तू
आपसी खींचतान के दुखड़े

कौन इनको ज़ुबान दे 'अनमोल'
हाय रे! बे-ज़ुबान के दुखड़े

'अनमोल-प्रतीक्षा' 321/4, सोलानीपुरम
रुड़की (उत्तराखण्ड)- 247667
मो.- 8006623499
मेल- kpanmol-rke15@gmail-com

मो. यूनुस मलिक नखवी

उनके दर पे जाएँ क्या देने दुहाई के लिए
कान जिनके बन्द रहते हैं सुनाई के लिए

ख़िदमते ख़ल्क़े खुदा से उनको लेना कुछ नहीं
हैं फ़क़त दरकार सब मनसब कामई के लिए

फिर रहे हैं दनदनाते आज मंहगी कार में
कल तलक मौहताज थे जो पाई-पाई के लिए

कोई हिन्दू हो कि मुस्लिम सिख ईसई इससे क्या
सारे बकरे एक हैं खूनी कसाई के लिए

देके भाषण आतिशी खुद हो गये गोशा नशीं
झेलने को रह गई जनता तबाही के लिए

है मलिक बेकार करना उनसे उम्मीदे वफा
नाम हो मशहूर जिनका बेव*फाई के लिए*

ग्राम नक्हा (नयागाँव) पो. कुंवरपुर सिसैयाँ, सितारगंज,
जि. उ.सि.नगर उत्तराखण्ड

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

मुझको अपना अक्स दिखा दे
साँसों को आकर महका दे

नाच रहा अपनी जिस धुन में
मुझको भी रक़्क़ास नचा दे

मेरे हाथों में भी मेहँदी
ओ मेरे अक़्क़ास रचा दे

काजल,टीका,बिंदी,चूनर
पास बिठाकर मुझे सजा दे

कजली, चैती या मलहारें
जो भी चाहे राग सुना दे

क्यों इतना बेचैन दिखे तू
मुझको अपना हाल बता दे

अपनी नाज़ुक उँगली से तू
फिर से दिल के तार बजा दे

हर पल तुझसे मीठा बोलूँ
मुझको वो अल्फ़ाज़ सिखा दे

द्वारा श्री मोती लाल विजयवर्गीय
2/84, स्कीम-दस-बी, अलवर, राज. -301001, मो. 7073713013

हीरालाल यादव

सब्र पल पल मेरा आजमाने की जिद
छोड़ भी जिन्दगी दिल दुखाने की जिद

मंजिलें उनसे रखती है दूरी बहुत
जिनमें होती नहीं उनको पाने की जिद

जिनमें बाकी नहीं कोई गर्मी कहीं
छोड़िये ऐसे रिश्ते निभाने की जिद

मिल सकें हैं किसे इस जमाने में ये
छोड़ दे चाँद तारों को पाने की जिद

शह्र है पत्थरों का तू 'हीरा' यहाँ
छोड़ शीशे के घर को बनाने की जिद

रूम नंबर-7, रामप्रसाद सिंह चाल, गुरु प्रसाद
वेलफेयर सोसाइटी, शिवाजी नगर, कुरार विलेज,
मालाड पूर्व, मुम्बई-400097

मोनिका शर्मा सारथी

मुहब्बत सी कोई भी जन्नत नहीं है
अलग बात है इसमें बरकत नहीं है

सियासत का जादू नजर बांधता है
इज़ाफ़त है इसमें हक़ीक़त नहीं है

बहुत तलखियाँ अब हैं उनकी अदा में
कि पहले सी कोई नज़ाकत नहीं है

बडी़ ही अजब है ये दुनिया की महफ़िल
यहाँ हमने देखी मुहब्बत नहीं है

दिखाऊँ भला कैसे मैं दर्द ए दिल को
ये दिल चीरने की इज़ाजत नहीं है

नहीं सारथी अब बहुत हो चुका है
झुकूं इससे ज़्यादा जरूरत नहीं है

द्वारा श्री सुरेंद्र कुमार शर्मा, ग्राम+पोस्ट रक्कड़, तह. रक्कड़, जिला कांगड़ा-177043, मो.-9805380693

अंजना छलोत्रे 'सवि'

अगर दर्पण में कल वह चाँद-सा चेहरा नहीं होता
कसम से इस कदर हमने उसे चाहा नहीं होता

हमारा तुमसे भी कोई कभी रिश्ता नहीं होता
तो दिल ने इस तरह तुमको कभी खोजा नहीं होता

मुझे मंजिल तलक तो जंगलों से ही गुजरना है
तुम्हारे घर से गुजरे वह मेरा रास्ता नहीं होता

हमारे घर की रौनक ही अगर बनते तो अच्छा था
जहाँ में इस तरह तो प्यार का सैदा नहीं होता

गुजरा आपके बिन एक पल होता नहीं हमसे
तुम्हें जाते हुए ऐ काश कल देखा नहीं होता

जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8,एक्सटेंशन, द्वितीय तल,
भोपाल-39 मो. 8461912125

कीर्ति 'रतन'

ऐ मेरे बचपन मैं' आना चाहती हूँ
तेरी' बातें दोहराना चाहती हूँ

जो भी पाली थीं ए' बचपन ख्वाहिशें मैं
तोहफे में आज पाना चाहती हूँ

वो तरन्नुम औ वो' घण्टों नाचना सब
लौट के उस हाल आना चाहती हूँ

बाबा के घर लौटने पर दौड़कर के
हाथ का सामान लाना चाहती हूँ

क्या कहा किसने कहा क्योंकर कहा अब
भूलकर सब मुस्कुराना चाहती हूँ

जो भिखारन बच्चियाँ कल राह में थीं
उनको गिद्धों से बचाना चाहती हूँ ।

कौन सी कब साँस छूटे क्या पता है
इसलिए मैं [illegible] भुला[illegible] चाहती हूँ

ज़िन्दगी [illegible]ी बे[illegible] [illegible]कशी में
मछली' [illegible]हती हूँ

[illegible]
[illegible]ना [illegible]

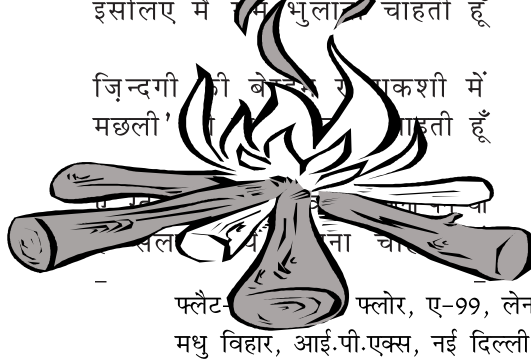

फ्लैट-[illegible] फ्लोर, ए-99, लेन-6,
मधु विहार, आई.पी.एक्स, नई दिल्ली-92

तुम सदानीरा बनी–साधना मिश्रा

मैं दहकता साल वन तृष्णा में तेरी जल रहा
तुम सदानीरा बनी प्रिये, दूर से बहती रहीं

दिन जला मैं सूर्य संग
रात चन्दा से जला
तुम चलीं जब वेग से
मैं और भी दहका जला
हाथ ले अपना हृदय मैं
राख था फिर भी जला

ले निमंत्रण नेह का नैनों में बेकल मैं खड़ा
तुम समर्पित हो प्रिये, जा सिंधु से मिलती रहीं

देह को समिधा बना मैं
प्रेम वेदी पर जला
मैं किसी प्रतिदान का
भागी कहो कैसे बना
दग्ध तन और मन लिए
व्यर्थ जीवन धन लिए

युग शिला पर लिख रहा मैं प्रेम की स्वर्णाक्षरी
तुम बनी गाथा मेरी प्रिये, शब्द में ढलती रहीं

अब सुनोगी अब रुकोगी
पास मेरे आओगी
सत्य शिव स्वरूप मेरी
प्रीत को अपनाओगी
अमर हो यह गीत मेरा
जब इसे तुम गाओगी

मैं हृदय अपना चीरकर तुमको दिखता ही रहा
तुम बनी मायाविनी प्रिये, क्षण क्षण मुझे छलती रहीं

सरस्वती नगर
पेंड्रारोड, बिलासपुर
छत्तीसगढ़

दर्पण –सरिता पन्थी

सुन दर्पण तू कुछ मत बोल।
भेद न मेरे सबसे खोल।।

साँझ सवेरे साथ में मेरे,
तू रहता है मुझको घेरे।
तुझबिन मेरा रूप अधूरा,
साज, लाज सब है बेमोल।।

सुन दर्पण तू कुछ मत बोल ,
भेद न मेरे सबसे खोल।।

मिल जाता तू जल में, पल में,
खोता कंकड़ की हलचल में।
नैन पिया के हिय में झाँके,
मद नैनन में देता घोल।।

सुन दर्पण तू कुछ मत बोल।
भेद न मेरे सबसे खोल।।

तू है बिलकुल सीधा सच्चा,
रूप, कुरूप या बूढ़ा, बच्चा।
कुछ न छिपा है तेरे आगे,
खोल के रखता सबकी पोल।।

सुन दर्पण तू कुछ मत बोल
भेद न मेरे सबसे खोल

महेन्द्रनगर, कन्चनपुर, नेपाल
कार्यरत : कंचनपुर कस्टम ऑफिस, महेन्द्रनगर
मो. न. ़977 9848720721
Email Id : saritapanthi1234@gmail-com

पति-पत्नी और वे

–सुभाष चंदर

समय-रात्रि के बारह बजकर बीस मिनट। स्थान-किसी छोटे शहर के सिनेमाघर से तीन फर्लांग की दूरी पर एक सुनसान सड़क। सड़क पर दो पैदल यात्रियों के चलने की आवाज़ आ रही है जो कपड़ों से एक पुरुष और महिला का आभास दे रहे हैं। दोनों रात्रि का आखिरी शो देखकर लौट रहे हैं। दोनों के बीच फिल्म की चर्चा हो रही है। फिल्म की चर्चा से थोड़ी फुरसत मिलती है तो दोनों लड़ने का शगुन भी कर लेते हैं। इससे यह लगता है कि हो न हो दोनों पति-पत्नी हैं। पति कुछ कहता है तो पत्नी अपने पत्नीत्व की गरिमा की रक्षा करते हुए जुबान की छुरी से बात काट देती है। इसी नोक झोंक में आधा सफर पूरा हो जाता है। थोड़ी देर की मान-मनौवल के बाद पति समझौते की पेशकश के रूप में जेब से मूँगफली का लिफाफा निकालकर देता है। पत्नी की मुख मुद्रा परिवर्तित होती है। नेपथ्य में मूँगफलियों के कत्ल की आवाज़ें सुनाई देती है। टूँग-टूँगा-किचक किच। मूँगफलियों के टूँगने के बाद पति-पत्नी थोड़ी देर शांत होकर अगली कार्रवाई के बारे में सोचते हैं।

बस यहीं से कहानी थोड़ा मोड़ लेती है। कहानी में एकाएक दो किरदारों का आगमन होता है। वातावरण में भारी-भरकम बूटों की आवाज़ आती है। फिर बूट नमूदार होते हैं। बूटों के ऊपर खाकी वर्दियाँ और खाकी वर्दी के ऊपर तनी हुई दो अदद मूँछें। बूटों की खट-खट के बाद वातावरण में स्वर गूंजता है-''क्यों बे स्साले। कहाँ से आ रहा है।''इसके बाद कुछ कड़क किस्म की आवाज़ें आती है जिन्हें आम जुबान में गाली का दर्जा दिया जाता है। गालियों की आवाज़ सुनते ही उस अँधेरे में भी पति को मालूम पड़ जाता है कि सौ प्रतिशत खालिस पुलिस वालों से मुठभेड़ होने वाली है। वरना गालियों का इतना सही उच्चारण किस मरदुए के बस का है। यह दिव्य ज्ञान प्राप्त होते ही, उसमें बकरे की आत्मा प्रवेश कर जाती है। इसके सबूत के रूप में वह मिमियाने का अभ्यास करने लगता है।

अब दोनों पुलिस वाले और उनकी कड़क आवाज़ एकदम उनके पास से नमूदार होती है। अब चूंकि पुलिसियों में गाली से लेकर मूँछें तक सब एक जैसा लगता है। इसलिए हम पाठकों की सुविधा के लिए उन्हें पुलिस नं.1 और पुलिस नं.2 कहकर पुकारेंगे।

पुलिस नं.1 उवाच- ''क्यों बे हरामजादे! सुना नहीं? हमने आवाज़ दी थी। बोल कहाँ से आ रहा है(और थोड़ा पास आकर औरत की ठोढ़ी पर हाथ लगाकर) और इस छम्मक छल्लो को कहाँ से पकड़ लाया? कौन है ये? जल्दी बता। वरना अन्दर कर दूँगा।"

घबराये पति का मिमियाहट भरा उवाच ''-स्साब-ये मेरी पत्नी है।''

पुलिस नं.2 उवाच- ''स्साले झूठ बोलता है। कहता है, पत्नी है। हमें बहकाता है। पुलिस से बदमाशी दिखाता है। (बदमाशी दिखाने के एवज में पति के शरीर के पिछले हिस्से में डण्डा लगने की आवाज़ आती है।)

पति प्रतिवाद करता है। मिमियाता है। 'प्रत्येक क्रिया की बराबर प्रतिक्रिया होती है' के सिद्धान्त के फलस्वरूप डण्डे की पावती के रूप में चीख भी निकालता है, मिमियाते हुए कहता है ''स्साब मैं बिलकुल सच कह रहा हूँ। यह मेरी पत्नी है। अभी दो साल पहले शादी हुई है।"

पुलिस नं.2 महिला के शरीर को एक दो बार छूकर उसके झूठ का शारीरिक परीक्षण करता है। महिला हाथ हटाने की कोशिश करती है। इस पर पुलिस जी नम्बर-1 उसे और जोर से पकड़ लेता है। पति फिर प्रतिवाद करता है। पुलिस वाले का हाथ पकड़ने की कोशिश करता है। इसके एवज में फिर उसे डण्डा पड़ता है। डण्डे की आवाज़ इस बार सिर से आती है। आवाज़ के पीछे उसकी चीख भी आ जाती है। अब काफी देर से चुपचाप खड़ा पुलिस नं.2 अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है।

पुलिस नं.2- ''तू रहने दे रामचंदर। मैं देखता हूँ। (फिर महिला की ओर उन्मुख होकर) क्यूं री छिनाल-सच बता कहाँ से भागकर आई है ?'' आवाज़ के साथ ही कदम आगे बढ़ाता है। महिला उसी अनुपात में पीछे खिसकती है। मगर कानून के हाथ बढ़ते चले जाते हैं।

कानून के हाथ वाकई काफी लंबे होते हैं। इतने लंबे तो वाकई जिनमें मरद की टोपी और औरत की चुटिया

आ जाए। सो औरत की चोटी उसके हाथ में आ जाती है। औरत में भी अब बकरी की आत्मा प्रवेश कर जाती है। सो वह भी मिमियाती है।

''पुलिस जी! हम सच्ची कह रहे हैं। हम पति-पत्नी हैं। हम कहीं से नहीं भागे। हमें छोड़ दो।'' कहकर रोने लगती है (रोने से लगता है कि वह औरत ही है, बकरी होती तो कभी ना रोती, चुपचाप थाने जाकर कट जाती।)

पुलिस नं.1- ''अच्छा ! तो तुम शादी शुदा हो। बताओ क्या सबूत है। तुम्हारी शादी का?''

पति (मिमियाने से फुर्सत पाते ही) ''हुजूर ! हमें क्या पता था कि शादी का भी सबूत माँगा जाएगा। वरना हम जरूर जेब में रखकर चलते। वैसे देख लीजिए, इसकी माँग में सिन्दूर है। गले में मंगलसूत्र है। पैर में बिछुए हैं। सच्ची पुलिस साब। मैं इसे कहीं से भगाकर नहीं लाया। थोड़ी दूर पर हमारा घर है। वहाँ चलकर देख लीजिए।"

पुलिस नं.1 में भेड़िया प्रवेश करता है, भेड़िया गुर्राता है- ''चौप साले। पुलिस से जबान लड़ाता है। साले कहता है कि माँग में सिंदूर है, मंगलसूत्र है। अबे सिंदूर तो पतुरिया भी भरती है।"

आदमी अबकी बार गुस्से में आता है-''साब ये हमारी घरवाली है और आप इसे बार-बार पतुरिया कह रहे हैं। छोड़िये उसे।"

पुलिस नं. एक और दो समवेत स्वर में हँसते हैं, उनमें से एक हँसने से फुर्सत पाते ही कहता है, ''स्साले पतुरिया बनाने में क्या जाता है। आज रात ही थाने ले जाकर चेक किए लेते हैं कि यह तेरी पत्नी है या पतुरिया। थाने में काफी एक्सपर्ट हैं। तेरी पत्नी हुई तो ठीक। वरना सुबह तक वापस कर देंगे।"

(नेपथ्य में भेड़िये की हँसी सुनाई देती है।) पुलिस नं. 2- हाँ.... हाँ...चल। थाने ही चल। वहीं तुम दोनों को चैक करेंगे। वहीं तुम्हारी बोलती बंद करेंगे।" यह सुनते ही आदमी और औरत दोनों चिल्लाने लगते हैं। जैसे उनमें मौजूद बकरे और बकरी को कसाई की छुरी दिख गई हो-वे चिल्लाते हैं ''नहीं माँ-बाप नहीं। हम थाने नहीं जाएगें। चाहे कुछ भी हो।"

पुलिस नं.1और 2 फिर हँसते हैं,''ठीक है नहीं ले जायेंगे तो फिर सबूत दो-पति-पत्नी होने का।"

पति के सिर में हवा के साथ बुद्धि का प्रवेश होता है। सो वह जेब की नकदी का सबूत उनके हवाले कर देता है। मगर कानून खुश नहीं है। उसे औरत से भी पतुरिया न होने का सबूत चाहिए।

पत्नी अपने जेवर उतार देती है। पर मंगलसूत्र बचा लेती है। मगर कानून को पूरे सबूत चाहिए होते हैं। सो कानून उसका मंगलसूत्र भी उतार लेता है। पुलिस नं.1 नोटों के सबूत गिनता है। पुलिस नं.2 जेवरों के सबूतों को जेब के अमानती सामानघर में जमा करता है।

कानून को पूरे सबूत मिल जाते हैं। सो अब कानून का चेहरा खिल जाता है। पुलिस नं. एक और दो दोनों को पति-पत्नी होने का सर्टिफिकेट दे देते हैं। साथ ही यह हिदायत भी कि ''अगर पति-पत्नी हो तो रात का शो मत देखा करो। घर में रहा करो। जानते नहीं हो कितनी गुण्डागर्दी बढ़ गई है। राह चलते ही लोग लूट लेते हैं। समझ गए ना। तुम्हारा भाग्य अच्छा था कि तुम्हें हम मिल गए। वरना अगर गुण्डे बदमाश मिल जाते तो जाने क्या होता?''

अब दोनों पति-पत्नी यह सोचते हुए वापस आ रहे हैं। सच अगर ये दोनों पुलिसवाले न मिलकर कहीं गुण्डे बदमाश मिल गए होते तो जाने क्या होता?

सड़कें वैसी ही सुनसान हैं। पुलिस-दम्पति वार्तालाप के बीच सड़कों, पास के मकानों की खुली खिड़कियाँ बंद हो गई हैं। खेल खत्म होने पर देश के शरीफ और इज़्ज़तदार नागरिक सोने चले गए हैं।

पति और पत्नी दोनों सड़क पर जा रहे हैं। अब वे दोनों बाते नहीं कर रहे हैं। यहाँ तक कि लड़ भी नहीं रहे हैं। अब तो पता ही नहीं लग रहा कि वे पति-पत्नी हैं भी या नहीं। कहीं पुलिस वाले सच तो नहीं कह रहे थे ?

-जी 186 ए, एच आ जी,
प्रताप विहार, गाजियाबाद 201009
मोबा -9311660057

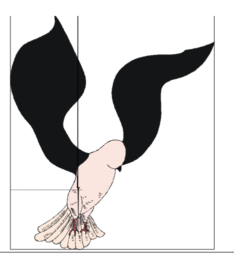

सम्यक विकास के आयाम उजागर करती पुस्तक है "पाँव जमीन पर निगाह आसमान पर" –सुरेंद्र शर्मा

सविता चडढा के बाल लेख संग्रह 'पाँव जमीन पर निगाह आसमान पर' पर सुरेन्द्र शर्मा की समीक्षा

सम्यक विकास के आयाम उजागर करती पुस्तक है – पांव जमीन पर निगाह आसमान पर"

सामान्यतया बेटियों के पक्ष में लिखी जाने वाली किताबें अकारण ही बेटों के विरोध में खड़ी दिखाई देती हैं। कई दशकों से पुरुष को गरियाने वाली भाषा को ही महिला-लेखन समझा जाने लगा है। ऐसे में सविता चड्ढा की पुस्तक 'पाँव ज़मीन पर निगाह आसमान पर' न केवल इस भ्रांति को तोड़ती है, अपितु बेटियों के सम्यक विकास का आयाम भी उजागर करती है।

पुस्तक के शीर्षक में ही अधिकारों से पहले कर्त्तव्यों की ओर इशारा किया गया है। सविता जी ने युवा होती बेटियों को संबोधित करते हुए कुल सोलह लेख इस पुस्तक में सम्मिलित किये हैं। इन लेखों में स्त्री के आत्मबल और स्वविवेक के विकास पर बल दिया गया है, न कि किसी मुक्ति-मोर्चे की तख़्ती उठाकर स्वच्छन्द हो जाने पर। लेखिका का स्पष्ट मत है कि जीवन में विवेक से अधिक सहायक कोई नहीं हो सकता। सही और ग़लत के लिए समाज को कठघरे में रखने से अधिक आवश्यक है कि अपने विवेक से अपनी उपलब्ध परिस्थितियों में 'सही' रास्ते की पहचान कर पाने की क्षमता विकसित कर ली जाए। लेखिका को स्त्री के मूलभूत गुणों की अनदेखी स्वीकार नहीं है। उनका मानना है कि अपनी विनम्रता तथा सौम्यता को छोड़ कर किसी तथाकथित 'सफलता' का कोई अर्थ नहीं रह जाता। वे बेटियों को वह ऊँचाई देना चाहती हैं जिसमें उन्हें अपनी जड़ों से कटना न पड़े।

वे यह कतई नहीं चाहतीं कि बेटियाँ किसी हीनभावना से ग्रसित हों। वे उनके समग्र विकास की समर्थक हैं। किन्तु इसके राजमार्ग का निर्माण वे उनके चारित्रिक बल से करना चाहती हैं। वे स्पष्ट करती हैं कि 'अपनी बहादुरी जताने के लिए यह कतई ज़रूरी नहीं है कि हम कम या छोटे कपड़े पहनें। हम रात को बाहर ही रहें, अंधेरे में निकलें और अंधेरे में ही घर आएँ। हम बहादुर हैं, यह सिद्ध करने के लिए हम बेवजह बहादुरी का अभद्र प्रदर्शन करते रहें।' वे मानती हैं कि कठिन परिस्थितियों पर विजय पाने के लिए अपने व्यवहार को अभद्र कर लेना आवश्यक नहीं है।

इस पुस्तक की शैली पत्रात्मक है। ये सोलह लेख दरअस्ल वे सोलह चिट्ठियाँ हैं जो उन्होंने अपनी बेटी के नाम लिखी हैं। इन चिट्ठियों में वह सारी चिंता विद्यमान है जो एक जवान होती बिटिया की माँ के मन में होती है। नारी मुक्ति के नाम पर उच्छृंखल हो रही पीढ़ियों को ममता भरी फटकार है यह पुस्तक। महत्वाकांक्षा की अंधी दौड़ में बेतहाशा भागी जा रही पीढ़ियों का हाथ पकड़ कर दो पल बतियाने का अभिनव प्रयास है यह पुस्तक।

वर्तमान परिस्थितियों में आई यह पुस्तक बेहद आवश्यक जान पड़ती है। यह पुस्तक स्वतंत्रता और स्वच्छन्दता के बीच के अंतर को मिटा देने पर तुले आंदोलनों के शोर में विवेक की वह श्वास है जिससे समाज के समग्र विकास की बाँसुरी में संगीत भरा जा सकता है।

सविता जी एक जागरूक पत्रकार भी हैं और माँ भी। वे समाज को भी समझती हैं, स्त्री-मन को भी और बेटी को भी। ये तीनों दृष्टिकोण इन लेखों में बहुत सलीक़े से संतुलन बनाते हैं।

सविता चड्ढा जी को इस पुस्तक के प्रकाशन पर साधुवाद देते हुए यह कामना करता हूँ कि हाँफते हुए किसी अंधी दौड़ में भागी चली जा रही पीढ़ी को ये चिट्ठियाँ बाँचने की फ़ुर्सत मिल पाए।

Surender Sharma% सुरेन्द्र शर्मा

रोचक, ज्ञानप्रद जानकारियों से भरपूर है- कोलकाता से अण्डमान तक

-सविता चड्ढा

पुस्तकः कलकत्ता से अण्डमान तक (बाल उपन्यास)
रचनाकारः आशा शैली
प्रकाशकः साहित्य भूमि नवादा:दिल्ली।
प्रकाशनः 2019
पृष्ठः 56
मूल्यः 180/-

आशा जी का उपन्यास कोलकाता से अण्डमान तक बाल उपन्यास है। पठनीय, मनोरंजन और जिज्ञासाओं से भरपूर इस कथा को पढ़ना मानो खुद यात्रा का आनंद लेने जैसा लगा। बहुत ही रोचक, ज्ञानप्रद जानकारियों से भरपूर है ये बाल उपन्यास।

उपन्यास के प्रारंभिक पन्नों पर कोलकाता शहर का बहुत ही खूबसूरती से वर्णन किया गया है। उसके बाद यह यात्रा समुद्री जहाज से दर्शाई गई है। कोलकाता से समुद्री जहाज और फिर अण्डमान तक की यात्रा का इतना रोचक वर्णन आपने पहले कभी नहीं पढ़ा होगा।

मुझे खुशी है कि यह बाल उपन्यास लिखते समय आशा जी ने इसमें बाल पात्र भी बड़े ही सुन्दर तरीके से जोड़े हैं, बाल पात्र जबरदस्ती ठूसें नहीं प्रतीत होते। दो परिवार, अपने बच्चों के साथ गर्मी की छुट्टियाँ बिताने का निर्णय लेते हैं और वे इस बार एक ऐतिहासिक स्थल अण्डमान जाने का निर्णय लेते हैं। यहीं से शुरू होती है पाठकों की रोचक यात्रा।

यात्रा के दौरान उपन्यास के बाल पात्र इतने जिज्ञासु हैं कि वह अपने माता-पिता से कई प्रश्न करते हैं और उनके पिता जो कि एक डॉक्टर है उन्हें उनकी जिज्ञासाओं का समाधान बहुत ही रोचक तरीके से करते हैं । आप तो जानते ही हैं लेखक अपनी कलम से पात्रों को घड़ता है और पाठकों को कैसे अपनी बात बहुत ही सूक्ष्म और मनोरंजक तरीके से पहुँचाई जाए इस पर उसकी पैनी निगाह रहती है। मुझे नहीं पता बाकी लेखकों की रहती है या नहीं लेकिन आशा शैली जी के इस उपन्यास में मुझे उनकी पैनी दृष्टि के बहुत ही सुन्दर दर्शन हुए हैं। मैं हैरान हुई जब वे कोलकाता के बारे में जानकारी देना चाहती थी तो उन्होंने अपने पात्र को 2 दिन के लिए कोलकाता में रुकवाने का एक बहुत ही अच्छा मौका दिया और आप हैरान होंगे कि जब वे बच्चे अपने माता-पिता के साथ घूम रहे थे तो मुझे लग रहा था मैं भी उनके साथ-साथ घूम रही हूँ। सबसे पहले जब वो काली माता के मंदिर में गए तो एक बाल पात्र ने पूछा, काली माता के मंदिर के बारे में, कौशलेंद्र उपन्यास के प्रमुख पात्र ने जवाब देते हुए कहा ''यह काली का प्रसिद्ध मंदिर है, इस स्थान को कालीघाट भी कहा जाता है, अब हम तुम्हें स्वामी रामकृष्ण परमहंस महाराज के स्थान दक्षिणेश्वर काली ले चलेंगे तुमने उनकी कहानी पढ़ी है ना? वे माँ काली के परम भक्त थे।''

बाद में उन्होंने रामकृष्ण परमहंस के बैठने घूमने और रहने के सारे स्थानों का वर्णन भी किया है। भ्रमण के दौरान उन्होंने कलकत्ता के कई दर्शनीय स्थलों, नेशनल म्यूजियम का उल्लेख भी किया है। कोलकाता के बॉटनिकल गार्डन, शहीद स्मारक आदि का उल्लेख भी बहुत ही सुन्दर तरीके से किया गया है जो चीजें अगर आपने कोलकाता में नहीं देखी आप इस उपन्यास को पढ़ते हुए वह उन्हें अपनी आँखों के सामने देखना महसूस कर पाएँगे।

शहीद मीनार के बारे में भी उन्होंने बहुत खूबसूरती से बताया है और उन्होंने गंगासागर की पूरी कथा भी इस उपन्यास में बताई है। इस उपन्यास में बहुत ही रोचक कथा का उल्लेख भी किया गया है। कहानी इस प्रकार है, ''राजा सगर के महल से चोरी करके कुछ चोर भागे थे और जब सैनिकों ने उनका पीछा किया तो सैनिकों के डर से उन्होंने चोरी किया सामान वहाँ फेंका जहाँ कपिल मुनि तपस्या कर रहे थे। राजा के बेटे जब उनके पास पहुँचे तो उन्होंने कपिल मुनि को ही चोर मान लिया और उन पर दोषारोपण कर दिया जब कपिल मुनि को यह पता चला तो उन्होंने अपने तप के बल पर उन्हें झूठा दोषारोपण करने के लिए जलाकर राख कर दिया। बाद में राजा सागर के वंशज भागीरथ गंगा को हिमालय से यहाँ तक लेकर आए थे यह कथा तो आप सब जानते ही हैं। उसी गंगासागर के बारे में

उन्होंने बहुत विस्तार से बताया है और बच्चे भी इसको बहुत ही अच्छे से इसका आनन्द उठाते दिखाई पड़ते हैं। समुद्र के किनारे बने कपिल मुनि के आश्रम का भी आशा जी ने उल्लेख किया। है।

आशा जी ने बच्चों के मुख से कुछ बातें कहलवाई हैं, जैसे कि ज्वार भाटा के बारे में बालक रघु जवाब देता है, क्या होता है। ''जब चाँदनी रातें होती है तो समुद्र में पानी दूर किनारों तक आ जाता है इसे ज्वार कहते हैं और जब अंधेरी रातें शुरू होती है तो समुद्र का पानी वापस समुद्र की ओर लौटने लगता है इसी का नाम भाटा होता है।''

उपन्यास में वैज्ञानिक तरीके से अपनी बात कहीं गई है जैसे कि लिखा गया है ''समुद्र अलग-अलग जगह पर अलग-अलग दिखाई देता है यह समुद्र की मिट्टी के कारण होता है जिसे सी बेड कहा जाता है। अण्डमान के किनारे पर तुम्हें लगेगा कि पानी का रंग हरा है परन्तु पानी हरा और नीला नहीं होता। पानी वैसे ही है जैसा पानी होता है। रास्ते में तुम्हें समुद्र काला नजर आएगा जबकि वह काला है नहीं।

इस उपन्यास में जहाँ वैज्ञानिक तरीके से बातों को समझाया गया है वहीं भौगोलिक जानकारी को भी शामिल किया गया है। एक उदाहरण देखिए पात्र अपने मुख से यह कह रहा है,

'अण्डमान का क्षेत्रफल 8249 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है कुल 48 द्वीपों जिनमें 38 अण्डमान में और 10 निकोबार के द्वीपों पर ही आबादी है अण्डमान द्वीप समूह की कुल लंबाई 467 अधिकतम चौड़ाई 52 किलोमीटर अण्डमान की सबसे ऊँची चोटी सैडल पीक 732 मीटर और निकोबार की माउण्ट धूलिया 642 मीटर ऊँची है यहाँ पर 92: जंगल है यहाँ पर कम से कम 323 डिग्री और अधिकतम 30 डिग्री टेंपरेचर रहता है अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में मात्र 3 जनपद हैं, दक्षिणी अण्डमान, उत्तरी और मध्य अण्डमान और निकोबार।'

इसी उपन्यास में इतिहास के भी बहुत सारे अंश बहुत ही खूबसूरती से प्रस्तुत किए गए हैं। मैं यह कह सकती हूँ कि यह उपन्यास इतिहास, भूगोल एवं वेद-शास्त्र की अनमोल जानकारियाँ लिए हुए है। अब इतिहास का एक उदाहरण मैं आपको देना चाहती हूँ, 'मार्च 1858 में राजनीतिक कैदियों का बेड़ा ब्रिटिश सरकार द्वारा यहाँ भेजा गया था। देशभक्त खुले आसमान के नीचे तपती गर्मी, वर्षा और भयंकर सर्दी के चलते पशुओं की तरह जीते रहे। दो कैदियों को एक ही हथकड़ी बेड़ी में बाँधा जाता था। यहाँ तक कि उनको शौच के लिए भी इसी दशा में जाना पड़ता। इनमें से बहुत से कैदियों ने तो आत्महत्या कर ली थी। यह जो जहाज है ना जिसमें हम लोग सब यात्रा कर रहे हैं, तुम्हें पता है ना इसका नाम है अकबर? ये भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को भरकर यहाँ लाने के लिए ही बनाया गया था। इसमें 3000 लोगों का भार वहन करने की क्षमता है।'' ऐसे ही कई उदाहरण इस उपन्यास में बच्चों को बताए गए हैं जो बड़ों को भी ज्ञान से भरपूर कर देते हैं।

अण्डमान पहुँचने पर पूरी यात्रा का वर्णन बहुत ही खूबसूरती से किया गया है और यहाँ पर जितने भी दर्शनीय स्थल है उन सबके बारे में बताते, लेखिका पाठकों की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए हमें और भरपूर जानकारियाँ देते हुए हैं पोर्ट ब्लेयर की जेल में ले जाती हैं ।

जेल की यातनाओं और शहीदों का उल्लेख पाठकों के मन में आजादी, देश भक्ति और अपने शहीदों के प्रति मन में श्रद्धा जगाने में सफल रहा है।

आकर्षक बहुरंगी आवरण और निर्दोष छपाई के बाद भी मात्र 56 पृष्ठ की पेपर बैक पुस्तक का मूल्य 180 रुपए होना अखरता है। यदि उपन्यास में विवरण और बहुमूल्य जानकारी के अनुसार सम्बंधित चित्र भी दिए गए होते तो पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ जाती।

चड्ढा कलर लैब
(शकूर बस्ती)
दिल्ली
301370

गीत गायें-ज्ञान पायें

-डॉ. चक्रधर नलिन

पुस्तक : गीत गायें-ज्ञान पायें (बाल कविताएँ)
रचनाकार:-डॉ. रसिक किशोर सिंह 'नीरज'
प्रकाशन : भार्गव एण्ड कम्पनी, 4, बाई का बाग, इलाहाबाद
मूल्य : 25/- पृष्ठ : 31

प्रस्तुत कृति में बालोपयोगी कविताएँ संग्रहीत हैं। रचनाओं के विषय पुस्तक, टैलिविज़न, वैज्ञानिक, पर्वत, बादल, पेड़, त्योहार, नदिया, निंदिया रानी, भाारत माता,बच्चों को सम सामयिक संदर्भों से जोड़ते हैं। रचना टैलीविज़न, वैज्ञानिक बच्चों में जहाँ विज्ञान के प्रति रुचि जिज्ञासा पैदा करती है वहीं बादल, पेड़, नदिया, प्रकृति के विराट संसार का ज्ञान कराती है।

कवि 'नीरज' की पुस्तक शीर्षक रचना बच्चों में पठनीयता जगाने में पूर्ण सफल है। 'पुस्तक करती है कल्याण/ होती कठिनाई आसान/पुस्तक फूलों की मुस्कान/ पुस्तक है विद्या की खान/ पुस्तक खुशियों का भण्डार/ पुस्तक में संसार अपार/ पुस्तक से मिलती शिक्षा/ पुस्तक का विचार अच्छा/ पुस्तक युग-युग की पहचान', बच्चे इन पंक्तियों को पढ़कर निश्चित ही पुस्तकों की और आकर्षित होंगे और उउनका संसार ज्ञानमय होगा।

भारत माता कविता में कवि ने बड़ी सहजता के साथ बालक और माँ का संवाद 'माँ तुमसे यह प्रश्न पूछता आज मुझे उत्तर बतलाओ/ भारत माता कहाँ हमारी/ उसका रूप मुझे दिखलाओ' के प्रति उसकी बाल जिज्ञासा स्थान, व्यक्ति, नदियों के उदाहरण देकर, 'है पंजाब, बिहार चेन्नई, गोवा, दिल्ली, काशी धाम। सीता राधा, सती अनुसुइया, अयोध्या, मथुरा, नन्दीग्राम।' या जहाँ हिमालय, सरयू, झेलम/ ब्रह्मपुत्र, कावेरी धारा/ धन्य उत्तराखण्ड सलोना/ जम्मू और कश्मीर हमारा।' उसे रेखांकित किया है। इस रचना से बच्चों के मन में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता के भाव भरने तथा उन्हें भारत माता के भाव-पक्ष का ज्ञान होगा।

'नदिया सुन्दर' कविता में कवि का स्मृति-जगत तैरता है। बच्चों को प्रकृति के कौतुहल से जोड़ता है। उसकी 'इसके तट हम थककर सोये/ इसके पुल से कूदा करते/ निर्मल जल से खेला करते/ इसमें झांका करता अम्बर/पीते जल सब अंजुरि भर-भर। बच्चे जल से खेला करते/ तेज लहर को झेला करते।' उपरोक्त पंक्तियाँ अतीत को भविष्य से जोड़ने में सफल हैं।

'पेड़' शीर्षक एक सशक्त रचना में 'उनको कभी नहीं काटो तुम/ दुख करते रोने लगते हैं/ कभी रात में उन्हें न छूना/ संध्या को सोने लगते हैं।' कवि की प्रकृति-संसार के प्रति प्रत्यक्ष संवेदना बच्चों में पर्यावरण के प्रति आस्था का जागरण करती है तथा उन्हें सुकोमल बनाती है।

सभी कविताएँ सहज, सरल, गेय, प्रवाह पूण एवं कंठस्थ योग्य हैं। हर कविता भावानुकूल सचित्र है। कविताएँ पठनीय एवं बच्चों के कल्पना संसार को विस्तार देती हैं। कृति संग्रहणीय, प्रेरक, रोचक, तथा पठनीय है।

मुख पृष्ठ आकर्षक तथा कृति शीर्षकानुकूल है। आशा है कि बच्चे इसे पसन्द करेंगे और प्रसन्न होंगे।

246, प्रभु टाउन,
रायबरेली-229001

पूज्य पिता जी

-सत्यपाल सिंह 'सजग'

ए-4/159, सेंचुरी पल्प एण्ड पेपर,
लालकुआँ, (नैनीताल)-262402
मो. 09412329561, 8171723018

जन्म पिता-माँ से मिला, गुरु से पाया ज्ञान
हे प्रभु आप सँभालिए, हो न कभी अभिमान।

बसा रखी है हृदय में पूज्य पिता की याद।
कंधे बोझिल हो गए, मेरे, उनके बाद।

पाल-पोस कर के दिए, संस्कार संदेश।
चले गए तब समझ में, आए दिशा-निदेश।

अपनी शुभ आशीष दे, चले गए सुरधाम
श्री चरणों में पिता के, बारम्बार प्रणाम।